केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसन्धान परिषद्

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय
(भारत सरकार)

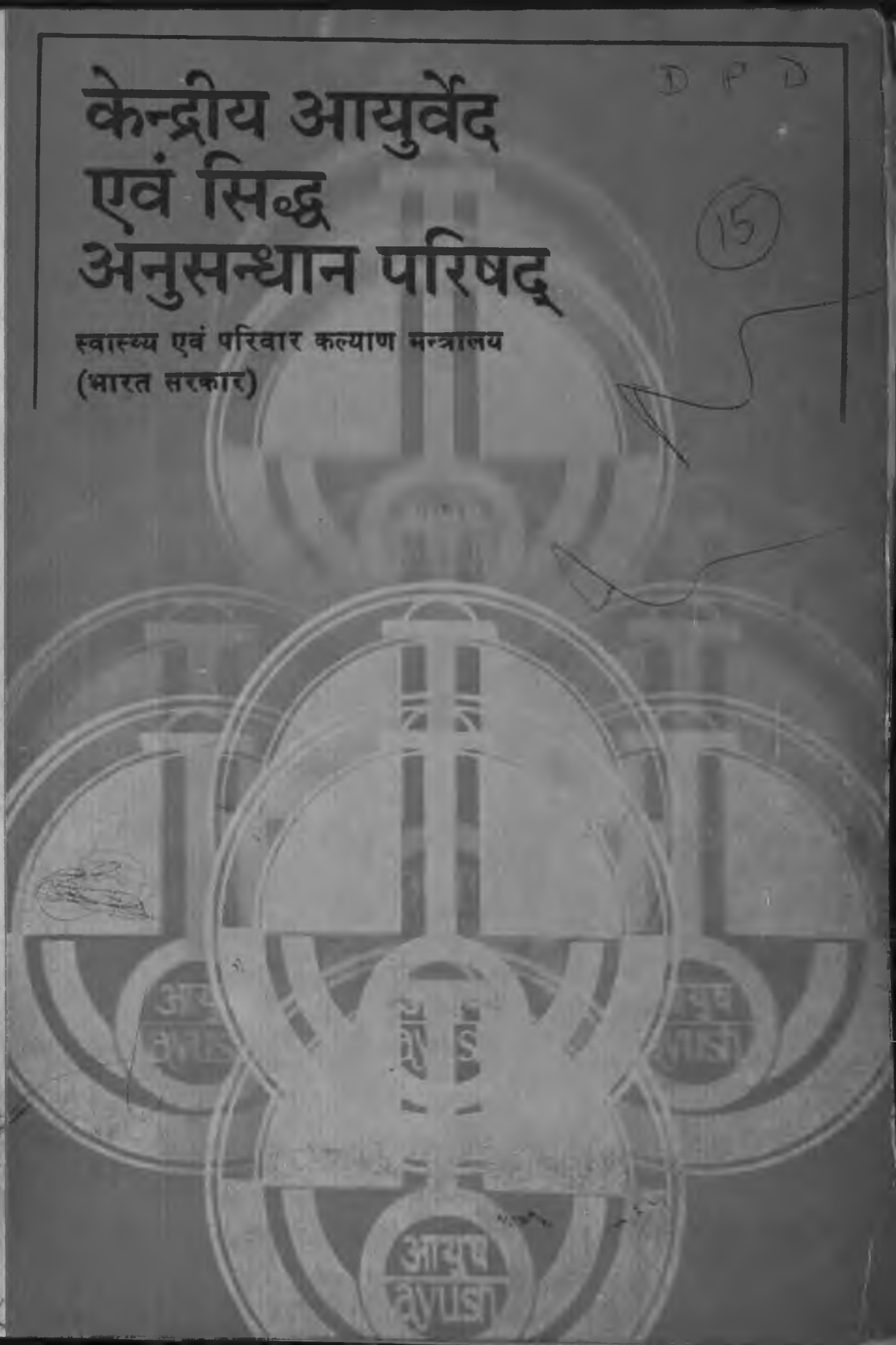

वार्षिक प्रतिवेदन 1988-89

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद

वार्षिक-प्रतिवेदन

1988-89

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
(भारत सरकार)
नई दिल्ली

"धर्मभवन" एस-10, ग्रीनपार्क एक्सटेंशन मार्किट, नई दिल्ली - 110016.

विषय-सूची

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	भूमिका	i — iii
2.	प्रशासनिक प्रतिवेदन	iv — ix
3.	तकनीकी प्रतिवेदन	1 — 125
	अ. आयुर्वेद	
	1. संस्थानों/केन्द्रों/एककों के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर	1 — 2
	2. निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान	3 — 37
	(क) निदान चिकित्सात्मक परीक्षण	3 — 27
	(ख) वर्ष 1988-89 में अध्ययन किए गए रोगवर्ग के लिए रोगियों की संख्या एवं संबद्ध परियोजनाओं की तालिका ।	28 — 29
	(ग) वर्ष 1988-89 में बहिरंग रोगी विभाग में आए रोगियों एवं अन्तरंग रोगी विभाग में प्रविष्ट/चिकित्सा विमुक्त रोगियों की तालिका ।	30 — 31
	(घ) स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम	32 — 37
	3. औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण	38 — 44
	4. औषध पादप कृषि	45 — 49
	5. भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान	50
	6. रासायनिक अनुसंधान	51 — 56
	7. भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन	57 — 62
	8. भेषजिक अनुसंधान/मानकीकरण अध्ययन	63 — 67
	9. वाङ्मय अनुसंधान कार्यक्रम	68 — 70
	10. परिवार कल्याण अनुसंधान	71 — 74
	11. प्रकाशन/संगोष्ठियों में सहयोग	75 — 100

ब. सिद्ध

1. संस्थानों/एककों के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर 101
2. निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम 101 — 108
3. स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम 109
4. औषध वानस्पतिक अनुसंधान कार्यक्रम 110 — 111
5. भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम 112
6. रासायनिक अनुसंधान कार्यक्रम 113
7. भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम 114 — 118
8. भैषजिक अनुसंधान/मानकीकरण अध्ययन 119 — 120
9. भेषज निर्माण 121
10. वाङ्मय अनुसंधान 122
11. प्रकाशन/सहयोग 123

4. कार्यशाला/सभा-संगोष्ठियां/सम्मेलन/प्रदर्शनियां 124 — 125
5. आभार 125

भूमिका

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद, भारत सरकार, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अधिन गठित स्वायत्त निकाय है तथा भारत में आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति में वैज्ञानिक विधि से शोध कार्य नियोजित करने उसमें समन्वय स्थापित करने एवं उसका विकास करने से संबंधित शीर्ष संस्था है। यह परिषद अपने उद्देश्यों एवं शोध कार्यों का संचालन प्रत्यक्ष रूप से इसके अधीन देश के विभिन्न भागों में कार्यरत अनुसंधान संस्थाओं एवं केन्द्रों तथा विश्वविद्यालयों, आयुर्वेद, सिद्ध व आधुनिक चिकित्सा पद्धति के महाविद्यालयों आदि में स्थित अनेक एककों/इकाइयों के माध्यम से करती है। इस वर्ष में परिषद ने निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान, स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान सहित आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान औषध अनुसंधान, वाङ्मय अनुसंधान तथा परिवार कल्याण अनुसंधान के विस्तृत क्षेत्र में अनुसंधान कार्य किया। राष्ट्रीय स्वास्थ्य-नीति के अंतर्गत सन् 2000 तक सब के लिए स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना है। इस प्रतिवेदित वर्ष के अनुसंधान कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :

निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान

परिषद के वरिष्ठ अधिकारियों की वार्षिक बैठक जो 21-22 मार्च, 1988 को संपन्न हुई थी उसमें एक उप-समिति का गठन किया गया था और उसे निदान-चिकित्सात्मक, विकृतिविज्ञानीय तथा जीव-रसायन परीक्षणों के मानक प्रारूप विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों/एककों को आवंटित रोगों पर तैयार करने हेतु दिया गया था। इस उपसमिति ने 14-15 दिसम्बर, 1988 को वाराणसी में अपनी बैठक में इन मानक प्रारूपों को अंतिम रूप दिया। इस संबंध में संस्थानों/केन्द्रों/एककों को परिपत्र कार्यान्वयन हेतु भेजे जा रहे हैं। इस प्रतिवेदित वर्ष में जिन रोगों का अध्ययन किया गया उनमें आमवात, पक्षवध, गृध्रसी, पंगु, पोलियोमेरूरज्जुशोथ, अम्लपित्त, परिणामशूल, अन्नद्रवशूल, प्रवाहिका, ग्रहणीरोग, तमक श्वास, श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, किटिभ, मधुमेह, मूत्रकृच्छ, वृक्कशोथ, रक्तचाप, हृद्रोग, श्लीपद, विषमज्वर तथा अर्बुद विशेष (कैंसर) सम्मिलित हैं।

सिद्ध चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत इस वर्ष वलिगुन्मम (पेप्टिक अल्सर), पुत्रुनोई (कैंसर), मंजलकामलाई, संधिवातशूल, कलंजगपादाई (सोरिएसिस), वेल्लाइनोई (श्वेतप्रदर), पेरुवीरू, वेकुंट्टम, नीरझिवु (मधुमेह), ऊथर नोई (मेदो वृद्धि) एवं करप्पननोई (त्वक विकार) रोग सम्मिलित हैं।

इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन के अंतर्गत परिषद के तत्वावधान में कार्यरत संस्थानों/केन्द्रों/एककों के बहिरंग रोगी विभाग एवं अंतरंग रोगी विभाग के माध्यम से क्रमशः 3,49,709 एवं 2,395 रोगियों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई।

स्वास्थ्य-रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद अनुसंधानपरक सर्वेक्षण एवं संनिरीक्षण कार्यक्रम, सामुदायिक स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम तथा आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा कार्यक्रम संपादित कर रही है। इन कार्यक्रमों को ग्रामोन्मुखी बनाया गया है जिससे कि परिषद द्वारा किए गए शोध कार्य की उपलब्धियों का लाभ जनसामान्य को मिल सके। इन कार्यक्रमों के अंतर्गत अनुसंधान परक अध्ययन के लिए चुने गए गांवों/आदिवासी अंचलों में घर-घर जाकर संपर्क स्थापित कर आकस्मिक चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है तथा उस क्षेत्र में व्याप्त रोगों की प्रकृति एवं आवृत्ति, विभिन्न ऋतुओं

में आहार-व्यवहार, सामाजिक आर्थिक पहलुओं, प्राकृतिक संसाधनों, ग्रामीण आदिवासी लोगों को सुलभ चिकित्सा स्तर एवं प्रकार से संबंधित आंकड़े भी एकत्र किए जाते हैं। इस प्रतिवेदित वर्ष में 132 गांवों के 1,49,025 व्यक्तियों को तथा 52 आदिवासी अंचलों के 57,833 रोगियों को आकस्मिक चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त दो आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा परियोजनाओं की भी स्थापना हुई है, जो जगदलपुर (म. प्र.) तथा इम्फाल (मणीपुर) में स्थित हैं।

औषध अनुसंधान

औषध मानकीकरण के साथ-साथ परिषद औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण, औषध पादप खेती एवं भेषजअभिज्ञानीय, रसायनविज्ञानीय, भेषजगुणविज्ञानीय तथा विषविज्ञानीय एवं संबद्ध चिकित्सा विज्ञानीय अनुसंधान कार्य कर रही है। औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत 42 वन क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया और 5,120 औषध पादप नमूनों की उद्भिदालय में अभिवृद्धि की गई। सर्वेक्षण अवधि में 2,273 कि. ग्रा. कच्ची तथा सूखी औषधियों को एकत्र करने के साथ-साथ 432 स्थानीय औषध दावों को भी एकत्र किया गया। लगभग 450 औषध पादप जातियों की प्रयोगात्मक तथा बड़े पैमाने पर कृषि की जा रही है। 16 औषधियों का भेषजअभिज्ञानीय तथा 33 औषधियों का रसायनविज्ञानीय अध्ययन किया गया। इस प्रतिवेदित वर्ष में आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति में प्रयोग की जा रही 33 औषधियों के भेषजगुणविज्ञानीय तथा विषविज्ञानीय अध्ययन किए गए।

औषध मानकीकरण अध्ययनों के अंतर्गत 106 एकौषधियों, 38 निर्मित औषधियों/उत्पाद्यों, सात निर्माण विधियों में औषध योगों के विश्लेषणात्मक मानक निर्धारित किए गए तथा आठ आयुर्वेद, एवं सिद्ध औषध योगों पर विश्लेषणात्मक मानक तैयार किए गए।

वाङ्मय अनुसंधान

वाङ्मय अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत आयुर्विज्ञान इतिहास अध्ययन, शास्त्रीय ग्रंथों, निघण्टुओं, सम-सामयिक साहित्य एवं आयुर्वेद, सिद्ध तथा आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के प्रकाशनों से औषधियों एवं रोगों से संबंधित संदर्भों का संग्रह एवं संकलन कार्य क्रम-बद्ध रखा गया। प्राचीन साहित्य को पुनर्जीवित एवं प्रकाशित करने के संदर्भ में अष्टांग संग्रह पूर्वार्द्ध का प्रकाशन किया जा रहा है और सहप्रयोग के संस्कृत तथा हिंदी संस्करण का मुद्रण कार्य प्रगति पर है। इसके साथ ही परिषद त्रैमासिक रूप से आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका, चिकित्सा प्रजातीय-वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका, भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान पत्रिका एवं द्विमासिक परिषद समाचार का भी प्रकाशन करती है। इस वर्ष में पत्र-पत्रिकाओं का अधिकांश पिछला कार्य पूरा किया गया तथा छः पुस्तकों/शोध प्रबन्धों का प्रकाशन भी किया गया।

परिवार कल्याण अनुसंधान कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अंतर्गत मुखीय गर्भनिरोधक औषधियों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण एवं भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन किया जा रहा है। आयुष-एसी-4, के-कैप्सूल, पिप्पल्यादि योगएवं वन्ध्यावरी जैसी गर्भनिरोधक औषधियों के निदान-चिकित्सात्मक मल्यांकन हेतु इस वर्ष अध्ययन में सम्मिलित 423

महिलाओं तथा गत वर्ष अध्ययन में सम्मिलित महिलाओं पर भी अध्ययन किया गया। पपीता, अजमोद, जपाकुसुम, टंकण तथा निर्गुण्डी का भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सूचनाओं के आधार पर विश्लेषणात्मक विनिबन्धों का भी संपादन किया गया। परिषद के अनुसंधानकर्ताओं को इसके तत्वावधान में विभिन्न क्षेत्रों में किए गए उत्कृष्ट अनुसंधान कार्यों/अध्ययनों के लिए सामान्य निकायों से स्वर्ण एवं रजत पदक प्राप्त करने का श्रेय मिला है।

दिनांक – 22–9–1989

विवेकानंद पाण्डेय

(विवेकानंद पाण्डेय)
निदेशक एवं सदस्य–सचिव
शासी निकाय

प्रशासनिक प्रतिवेदन

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद 1860 के संस्था पंजीकरण अधिनियम 21 के अधीन 30 मार्च, 1978 को पंजीकृत संस्था है। इस वर्ष 31 मार्च, 1989 तक की अवधि में इस परिषद की संस्था एवं शासी निकाय के निम्नलिखित सदस्य थे:-

1.	अध्यक्ष	:	श्री मोतीलाल वोरा, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री (23-1-1989 तक)। श्री रामनिवास मिर्धा, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री (24-1-1989 से)।
2.	उपाध्यक्ष	:	कुमारी सरोज खापर्डे, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री
3-5	शासकीय सदस्य	:	1. श्री एस. एस धनोवा, सचिव, केन्द्रीय. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (31.8.88 तक)। श्री आर. श्रीनिवास, सचिव, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (5.9.88 से)। 2. श्री स्वतंत्र कुमार आलोक, संयुक्त सचिव, (प्रभारी भा. चि. प.) केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय। 3. श्री एन.एस. बक्सी, संयुक्त सचिव, (वित्त सलाहकार), केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय।
6-16	अशासकीय सदस्य		1. वैद्य शिवकरणशर्मा छांगाणी 2. वैद्य रघुबीर प्रसाद त्रिवेदी 3. प्रो. एन. नामजोशी 4. डॉ. ए. आनन्द कुमार 5. वैद्य देवेन्द्र कुमार त्रिगुणा 6. डॉ. (श्रीमती) एल. शारदाअम्मा 7. वैद्य सत्यपाल गुप्त

		8.	डॉ. एन. हनुमंता राव
		9.	प्रो. बी. एन. धवन
		10.	डॉ. राजेन्द्र गुप्त
		11.	डॉ. सी. एस. उत्तमरायन
17.	निदेशक राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर।	:	वैद्य स्वामी राम प्रकाश
18.	निदेशक राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान/ केन्द्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान, मद्रास।	:	–रिक्त–
19.	सदस्य सचिव	:	डॉ. विवेकानन्द पाण्डेय, परिषद निदेशक।

इस वर्ष वित्त समिति की एक बैठक दि0 25.11.1988, 18.1.1989 तथा 6.2.1989 को तीन बैठकें संपन्न हुई जिसमें विभिन्न वित्तीय विषयों पर विचार किया गया। वित्त समिति ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण मामलों की संस्तुति की जिसे शासीनिकाय के अनुमोदनार्थ रखा। इस प्रतिवेदित वर्ष में परिषद शासी निकाय की कोई बैठक नहीं हो सकी।

वित्त समिति

इस प्रतिवेदित वर्ष में एक स्थायी वित्त समिति निम्नलिखित सदस्यों की गठित की गई :

1.	संयुक्त सचिव (भा. चि. प.) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार।	:	श्री एस. के. आलोक अध्यक्ष
2.	उप-सचिव (आन्तरिक वित्त) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार।	: :	श्री आर. के. जिन्दल, सदस्य (31 जुलाई, 88 तक) श्री ए. के. जोशी, सदस्य (18 अगस्त, 89 से)
3.	एक तकनीकी प्रतिनिधि सदस्य (आयुर्वेद)	:	वैद्य वी. डी. त्रिगुणा
4.	एक तकनीकी प्रतिनिधि सदस्य (सिद्ध)	: :	डा. जे. आर. कृष्णमूर्ति (दिसम्बर 88 तक) डा. ए. आनन्दकुमार (जनवरी 89 से)
5.	परिषद निदेशक	:	डा. विवेकानन्द पाण्डेय, सदस्य सचिव।

इस प्रतिवेदनावधि में वित्त समिति की एक गोष्ठी तीन बैठकों में दिनांक 25.11.88, 18.1.89 एवं 6.2.89 को संपन्न हुई । इस गोष्ठी में विभिन्न वित्तीय समस्याओं पर विचार किया गया । वित्त समिति ने निम्न महत्वपूर्ण तथ्यों का अनुमोदन करके शासी निकाय की संस्तुति हेतु प्रस्तुत किया ।

1. भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुथी, भारतीय काय-चिकित्सा संस्थान, पटियाला तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता हेतु औषध निर्माणशाला के लिए विभिन्न आवश्यक उपकरणों को खरीदने हेतु संस्तुति की जिसपर 3,19,500 रुपये व्यय होंगे।
2. वर्ष 1989-90 में रसशास्त्र के इतिहास पर एक कार्यशाला के आयोजन हेतु 50,000/-रुपये की संस्तुति की गई।
3. भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद की पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु अनावर्ती व्यय 50,000/- तथा आवर्ती व्यय 15,000/- रुपये की संस्तुति की गई।
4. पं. जवाहरलाल नेहरू के जन्म-शताब्दी के अवसर पर आयुर्वेद के विकास की भावी नीति पर संगोष्ठी आयोजन हेतु 2.5 लाख रुपये की संस्तुति की गई।
5. वर्ष 1987-88 की लेखा परीक्षा को शासी निकाय की स्वीकृति हेतु संस्तुति की गई।

परिषद की सेवाओं में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजातियों का प्रतिनिधित्व एवं उनके लिए कल्याणकारी उपाय।

परिषद अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों के लिए सेवाओं में आरक्षण एवं प्रतिनिधित्व के लिए भारतसरकार के आदेशों एवं मार्गदर्शी सिद्धान्तों का अनुपालन कर रही है। परिषद ने अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के अभ्यार्थियों को नियमानुसार आरक्षण देने के लिए सभी पद श्रेणियों से संबंधित रोस्टर बनाए हुए है तथा रोस्टर में अंकित मदों के अनुसार ही भर्ती/पदोन्नति की जाती है। परिषद के अधीन कुल मिलाकर 1,592 कर्मचारी सेवारत हैं और 1.1.1989 के अनुसार अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति का प्रतिनिधित्व निम्नानुसार है-

समूह	कर्मचारियों की कुल संख्या	अनुसूचित जाति	कुल कर्मचारियों का प्रतिशत	जनजाति	कुल कर्मचारियों का प्रतिशत
क	119	3	2.52	1	0.84
ख	116	7	6.03	1	0.86
ग	704	76	10.79	18	2.55
घ	653	213	32.62	49	7.04
कुल	1592	299	18.78	69	4.33

परिषद के तत्वाधान में नौ आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजनाएं कार्य कर रही हैं। इन परियोजनाओं को विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में स्थापित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्थानीय स्वास्थ्य समस्याओं एवं संबंधित विकारों की जानकारी प्राप्त करना ही नहीं अपितु उनकी उपयुक्त चिकित्सा उपायों एवं विधियों की पहचान करना तथा उनका प्रयोग करने की सलाह भी देना है। इसके अतिरिक्त कुछ अनुसंधान केन्द्र ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्थापित हैं। परिषद के संस्थानों/केन्द्रों के बहिरंग रोगी विभाग के माध्यम से तथा चल-निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम एवं सामुदायिक स्वास्थ्य रक्षा कार्यक्रम के माध्यम से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के बहुसंख्यक लोगों को स्वास्थ्य सुविधाऐं एवं सामयिक चिकित्सा सुविधाएं सुलभ कराई गई। परिषद के बजट में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के हितों की योजनाओं के लिए विशेष बजट प्रावधान किया गया है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद की एक राजभाषा कार्यान्वयन समिति है। परिषद के निदेशक इस समिति के अध्यक्ष हैं और यह समिति समय-समय पर परिषद में राजभाषा अधिनियम, नीति, नियम, आदेश, कार्यक्रम इत्यादि के कार्यान्वयन की समीक्षा करती है तथा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन करती है। इस वर्ष में समिति की दो बैठकें हुई और इन बैठकों में परिषद के द्वारा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के प्रगति की समीक्षा की गई तथा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए उपयुक्त संस्तुतियां की गई।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयु.)

परिषद के अध्यक्ष केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री द्वारा दिनांक 29.6.1988 को वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयुर्वेद) तथा वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्ध) का गठन किया। समिति के निम्नलिखित सदस्य हैं :-

1.	वैद्य शिवकरण शर्मा छांगाणी	अध्यक्ष
2.	डॉ. वी. नारायणस्वामी	सदस्य
3.	वैद्य सीताराम मिश्रा	"
4.	प्रो. ए. एन. नामजोशी	"
5.	डॉ. एन हनुमंत राव	"
6.	डा. सत्यपाल गुप्त	"
7.	वैद्य डी. के. त्रिगुणा	"
8.	डा. एन. जी. बंघोपाध्याय	"
9.	डा. पी. के. देवनाथ	"
10.	डा. वेणीमाधव ए. के. शास्त्री	"
11.	डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा	"
12.	वैद्य शिव कुमार मिश्र	"
13.	डा. एल. शारदाअम्मा	"
14.	निदेशक, के. आयु.सि.अनु.प.	सदस्य सचिव

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (आयु) की बैठक दिनांक 19.8.1988 को तथा 17.1.1989 को सम्पन्न हुई जिसमें परिषद के अन्तर्गत निर्धारित कार्यक्रमों/परियोजनाओं को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सिद्ध)

1.	डा. आर. कन्नन	अध्यक्ष
2.	डा. जे. आर. कृष्णामूर्ति	सदस्य
3.	डा. ए. आनन्द कुमार	"
4.	डा. पी. गुरूशिरोमणि	"
5.	प्रो. ए. एन. नामजोशी	"
6.	डा. सी. एस. उत्तमरायन	"
7.	निदेशक, के.आयु.सि.अनु.प.	सदस्य सचिव

इस वर्ष वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति (सि.) की बैठक 3 अगस्त, 1988 को संपन्न हुई जिसकी संस्तुतियों को वित्त समिति/शासी निकाय के समक्ष अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया गया।

परिषद की कार्यरत परियोजनाएं

परिषद के अंतर्गत 12 केन्द्रीय/क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, 10 क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, 27 अनुसंधान एकक, 5 आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजनाएं, एक प्रलेख एवं प्रकाशन प्रभाग, 12 परिवार कल्याण अनुसंधान एकक, आमची चिकित्सा पद्धति अनुसंधान परियोजना , 10 अनुसंधान एकक एवं दो आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजनाएं सिद्ध चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत कार्यरत हैं। इसके साथ-साथ 7 समय-बद्ध अनुसंधान इकाइयां भी काम कर रही हैं। परिषद द्वारा आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना इम्फाल तथा जगदलपुर में इस प्रतिवेदित वर्ष में स्थापित की गई।

बजट प्रावधान

निम्नलिखित तालिका में परिषद के बजट प्रावधान को संक्षिप्त रूप से दिखाया गया है :-

परियोजना	वास्तविक व्यय 1987-88	बजट प्राक्कलन 1988-89	संशोधित प्राक्कलन 1988-89	वास्तविक व्यय 1988-89
		(लाख रूपयों में)		
आयोजना	96.35	179.00	176.00	94.48
आयोजना भिन्न	432.32	406.00	406.00	458.59
परिवार कल्याण अनुसंधान परियोजना	11.70	11.50	14.20	14.18

लेखा परीक्षा विवरण

परिषद के वर्ष 1988-89 1 अप्रैल, 1988 से 31 मार्च, 1989 की अवधि के लेखों की लेखा परीक्षा केन्द्रीय राजस्व के लेखा परीक्षा निदेशक के कार्यालय ने की।

विशेष कार्य

1. केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद का मुख्यालय भवन :

केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद एवं अन्य अनुसंधान परिषदों का मुख्यालय भवन जनकपुरी, संस्थानीय क्षेत्र में निर्माणाधीन है। इस भवन का शिलान्यास दिनांक 14.9.1988 को भारत के उप राष्ट्रपति द्वारा केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री की अध्यक्षता तथा केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री की उपस्थिति में किया गया। इस भवन का नाम भारत के प्रथम प्रधान मंत्री के नाम से "जवाहरलाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान भवन" रखा गया। इस भवन का चित्र (नक्शा) महानिदेशक स्वास्थ्य सेवाएं के डिजाइन ब्यूरो द्वारा तैयार किया गया और भवन कार्य केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को दिया गया जिसमें 376.85 लाख रुपये लागत का अनुमान है।

2. **परिषद द्वारा दिल्ली के यमुनापार क्षेत्र:**

नन्दनगरी तथा सुन्दर नगरी एवं उसके आसपास के क्षेत्रों में आंत्र शोथ एवं हैजा से प्रभावित रोगियों के उपचार हेतु 3 अगस्त, 1988 से 30 अगस्त, 1988 तक राहत शिविर का आयोजन किया गया। इस राहत शिविर में हैजा तथा आंत्रशोथ के 6,117 रोगियों का उपचार किया गया। तदोपरांत केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा इस क्षेत्र को सामुदायिक स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत सम्मिलित कर लिया गया है।

तकनीकी प्रतिवेदन–आयुर्वेद

संस्था/केन्द्र/एकक के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर

क्र. सं.	संस्थान/केन्द्र/एकक का नाम	संकेताक्षर
1	2	3
1.	केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	के. अनु. सं. दि.
2.	केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर	के. अनु. सं. भु.
3.	केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, बम्बई	के. अनु. सं. बं.
4.	भारतीय काय–चिकित्सा संस्थान, पटियाला	भा. का. चि. सं. प.
5.	भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेलतुरुति	भा. पं. सं. चे.
6.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता	क्षे. अनु. सं. क.
7.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पटना	क्षे. अनु. सं. प.
8.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, लखनऊ	क्षे. अनु. सं. ल.
9.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर	क्षे. अनु. सं. ग्वा.
10.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जयपुर	क्षे. अनु. सं. ज.
11.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जूनागढ़	क्षे. अनु. सं. जू.
12.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम	क्षे. अनु. सं. त्रि.
13.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, नया इटानगर	क्षे. अनु. के. ई.
14.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी	क्षे. अनु. के. गु.
15.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, गंगटोक	क्षे. अनु. के. गं.
16.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, मंडी	क्षे. अनु. के. मं.
17.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, जम्मू	क्षे. अनु. के. ज.
18.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, हस्तिनापुर	क्षे. अनु. के. ह.
19.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, झांसी	क्षे. अनु. के. झा.
20.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, नागपुर	क्षे. अनु. के. ना.
21.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, विजयवाडा	क्षे. अनु. के. वि.
22.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, बंगलौर	क्षे. अनु. के. बं.
23.	चल–निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, वाराणसी	च. नि. चि. अनु. ए. वा.
24.	चल–निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, जामनगर	च. नि. चि. अनु. ए. जा.
25.	डॉ. ए. लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, वी. एच.एस., मद्रास	डॉ. ए. ल. आयु. अनु. के. म.
26.	आयुर्वेद अनुसंधान एकक, बंगलौर	आयु. अनु. ए. बं.
27.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (आयु.), हैदराबाद	नि. चि. अनु. ए. है.
28.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (आयु.), कोट्टाकल	नि. चि. अनु. ए. को.
29.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (आयु. एवं आधु. दल), वाराणसी	मि. औ. अनु. परि. वा.
30.	संयुक्त अनुसंधानीय एकक, ताड़ीखेत	सं. अनु. ए. ता.
31.	कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान, संस्थान, मद्रास	कै. श्री. आयु. औ. अनु. सं. म.
32.	जवाहर लाल नेहरू आयुर्वेदीय औषध पादप उद्यान एवं संग्रहालय, पूणे	ज. ने. आयु. औ. पा. उ. सं. पु.

33.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प. क.) पटियला	नि. चि. अनु. ए. प.
34.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प. क.) बम्बई	नि. चि. अनु. ए. ब.
35.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प. क.) लखनऊ	नि. चि. अनु. ए. ल.
36.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प. क.) जयपुर	नि. चि. अनु. ए. ज.
37.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प. क.) कलकत्ता	नि. चि. अनु. ए. क.
38.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प. क.) अहमदाबाद	नि. चि. अनु. ए. अ.
39.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प. क.) त्रिवेन्द्रम	नि. चि. अनु. ए. त्रि.
40.	निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (प. क.) वाराणसी	नि. चि. अनु. ए. वा.
41.	भेषज विज्ञान अनुसंधान एकक (प. क.) जामनगर	भे. वि. अनु. ए. जा.
42.	भेषज विज्ञान अनुसंधान एकक (प. क.) वाराणसी	भे. वि. अनु. ए. वा.
43.	भेषज विज्ञान अनुसंधान एकक (प. क.) भुवनेश्वर	भे. वि. अनु. ए. भु.
44.	भेषज विज्ञान अनुसंधान एकक (प. क.) त्रिवेन्द्रम	भे. वि. अनु. ए. त्रि.
45.	भेषज विज्ञान अनुसंधान एकक कलकत्ता	भे. वि. अनु. ए. क.
46.	भेषज विज्ञान अनुसंधान एकक लखनऊ	भे. वि. अनु. ए. ल.
47.	भेषज विज्ञान अनुसंधान एकक जोधपुर	भे. वि. अनु. ए. जो.
48.	भेषज विज्ञान अनुसंधान एकक वाराणसी	भे. वि. अनु. ए. वा.
49.	भेषज विज्ञान अनुसंधान एकक त्रिवेन्द्रम	भे. वि. अनु. ए. त्रि.
50.	विषाक्तता अनुसंधान एकक, झांसी	वि. अनु. ए. झा.
51.	रासायनिक अनुसंधान एकक, कलकत्ता	रा. अनु. ए. क.
52.	रासायनिक अनुसंधान एकक, वाराणसी	रा. अनु. ए. वा.
53.	रासायनिक अनुसंधान एकक, हैदराबाद	रा. अनु. ए. है.
54.	रासायनिक अनुसंधान इन्क्वारी, लखनऊ	रा. अनु. इ. ल.
55.	भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान एकक, कलकत्ता	भे. अभि. अनु. ए. क.
56.	भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान एकक, पुणे	भे. अभि. अनु. ए. पु.
57.	भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद	भा. आयु. इ. सं. है.
58.	प्रलेख एवं प्रकाशन प्रभाग, नई दिल्ली	प्र. प्र. प्र. न. दि.
59.	आयुर्वेदीय वाङ्मय अनुसंधान एकक, तंजौर	आयु. वा. अनु. ए. तं.
60.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), कारनिकोबार	आ. स्वा. अनु. परि. का. नि.
61.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), जीरो	आ. स्वा. अनु. परि. जी.
62.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), पलामू	आ. स्वा. अनु. परि. प.
63.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), झबुआ	आ. स्वा. अनु. परि. झ.
64.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), चिंचपाड़ा	आ. स्वा. अनु. परि. चि.
65.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), जगदलपुर (मध्य प्रदेश)	आ. स्वा. अनु. परि. जग.
66.	आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना (आयु.), इम्फाल (मणीपुर)	आ. स्वा. अनु. परि. इम्फा.
67.	औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, जामनगर	औ. मा. अनु. ए. जा.
68.	औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, वाराणसी	औ. मा. अनु. ए. वा.
69.	आमची चिकित्सा पद्धति अनुसंधान परियोजना, लेह–लद्दाख	आ. चि. प. अनु. परि. ले. ल.
70.	औषधीय वानस्पतिक उद्यान क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, ईटानगर	औ. वा. उ. क्षे. अ. के. ई.
71.	आमला कैंसर चिकित्सालय, त्रिचूर	आ. कै. चि. त्रि.

निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम

परिषद के तत्वावधान में किए जा रहे आयुर्वेदीय निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान कार्यक्रम में एकौषधियों, मिश्रित औषध योगों एवं सरल खनिज वानस्पतिक औषध योगों का अनुसंधान, चुने गये प्रमुख रोगों पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण करना तथा सर्वेक्षण एवं संनिरीक्षण, सामुदायिक स्वास्थ्य रक्षा और आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रमों के माध्यम से स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्य से संबंधित व्यावहारिक अध्ययन सम्मिलित हैं।

निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण

परिषद के वरिष्ठ अधिकारियों की दिनांक 21 एवं 22 मार्च, 1988 को वार्षिक संगोष्ठी संपन्न हुई। जिसमें एक उप समिति का गठन किया गया जो रोगों के उपचार हेतु विशिष्ट मानक के अनुसार नैदानिक विकृति परीक्षण तथा जीव रसायनिक परीक्षण के द्वारा विभिन्न नैदानिक रोगों पर विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों/एककों को कार्य करने हेतु दिया गया। इस उप समिति ने दिनांक 14 एवं 15 दिसम्बर, 1988 को वाराणसी में हुई बैठक में रूपरेखा को अन्तिम रूप दिया। इसके कार्यान्वियन के लिए विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों/एककों को परिपत्र जारी कर दिए गए। इस परिच्छेद में निदान चिकित्सात्मक परीक्षण के अन्तर्गत किए गए कार्य का विवरण प्रस्तुत है- इस वर्ग में अध्ययन किए गए अनेक रोगों में आमवात, पक्षवध, गृध्रसी, पंगु, शैशवीय-वात, अम्लपित्त, परिणामशूल, अन्नद्रव शूल, ग्रहणी रोग, तमक श्वास, श्वेतप्रदर, रक्त प्रदर, किटिभ, मधुमेह मूत्रकृच्छ, वृक्कशोथ, रक्तचाप, हृद्रोग, श्लीपद, विषमज्वर तथा अर्बुद विशेष पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण किये गये। निदान चिकित्सात्मक अध्ययन कार्यन्वियन से परिषद के तत्वावधान में कार्यरत विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों के अंतरंग रोगी विभागों के माध्यम से क्रमशः 2,90,079 तथा 1918 रोगियों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई। इस परिच्छेद में प्रत्येक निदान चिकित्सात्मक परीक्षण की चिकित्सा विधि सहित संक्षिप्त विवरण, अनुसंधान कार्यक्रम में संलग्न संस्थानों/केन्द्रों/एककों के नाम तथा अध्ययन में सम्मिलित रोग विशेष के रोगियों की कुल संख्या तथा उनके चिकित्सा परिणाम निम्नानुसार प्रस्तुत हैं-

आमवात

आमवात रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता, भारतीय चिकित्सा संस्थान, पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, जम्मू, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, ईटानगर, भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुति, में किए गए। कुल मिलाकर 241 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई। निम्नतालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधित संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं-

तालिका

आमवात रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण - परिणाम

क्र.सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	कुल रोगी संख्या	परिणाम: पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	शुंठी गुग्गुलु	के. अनु. सं. भु.	12	–	1	4	1	–	6
2.	अ. मुस्तक चूर्ण बालुका स्वेद के साथ	भा. पं. सं. चे.	2	–	–	–	1	1	2
	ब. अश्वगंधा चूर्ण बालुका स्वेद के साथ		6	–	1	–	2	3	–
	स. पंचकर्म चिकित्सा मूर्च्छित तैल के साथ		3	–	–	–	1	–	2
3.	अ. योगराज गुग्गुलु, रास्ना सप्तक क्वाथ और पत्र पिंड स्वेद	भा. का. चि. सं. प.	47	–	1	7	20	3	16
	ब. अश्वगंधा चूर्ण और पत्र पिंड स्वेद		24	–	–	–	13	7	4
4.	त्रिकुष्ठ गुग्गलु	क्षे. अनु. के. ज.	21	–	2	5	8	1	5
5.	अ. मुस्तक चूर्ण और बालुका स्वदे	क्षे. अनु. सं. क.	7	–	3	2	2	–	–
	ब. अश्वगंधा चूर्ण और बालुका स्वेद		52	2	16	7	6	5	16
	स. शुंठी गुग्गुलु और बालुका स्वेद		12	–	6	2	1	–	3
6.	अ. मुस्तक चूर्ण एवं बालुका स्वेद	क्षे. अनु. सं. क.	18	3	2	–	4	1	8
	ब. अश्वगंधा चूर्ण एरंड स्नेह और बालुका स्वेद		1	–	1	–	–	–	–
	स. शुंठी गुग्गलु और बालुका स्वेद		23	3	4	–	3	1	12
7.	अश्वगंधा चूर्ण बालुका स्वेद के साथ	क्षे. अनु. सं. ग.	13	–	4	–	5	3	1
	योग		241	8	41	27	67	25	75

संधिगतवात

संधिगतवात रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, जम्मू में किए गए। कुल मिलाकर पांच रोगियों का क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, ग्वालियर में अश्वगंधा चूर्ण के साथ बालुका स्वेद से उपचार किया गया। जिसमें एक रोगी को विशिष्ट लाभ तथा एक रोगी अप्रभावित रहा जब कि तीन रोगियों को उसी चिकित्सा से अल्प लाभ मिला। क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, जम्मू में 10 रोगियों का त्रिकुष्ठ गुग्गुलु के साथ उपचार किया गया जिसमें से एक रोगी को आंशिक लाभ, तीन रोगियों को मध्याम लाभ तथा चार रोगियों को अल्पलाभ मिला शेष दो रोगियों ने उस चिकित्सा को बीच में ही छोड़ दिया।

पक्षवध

पक्षवध रोग पर निदान चिकितसात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, भारतीय काय चिकित्सा संस्थान पटियाला, भारतीय पंचकर्म संस्थान चेरुतुरुथि तथा केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, दिल्ली में किया गया। कुल मिलाकर 97 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई। निम्न तालिका में चिकित्साविधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं–

तालिका

पक्षवध रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम

क्र.सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	कुल रोगी संख्या	परिणाम पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	समीर पन्नग रस	के. अनु. सं. भु.	3	1	–	–	–	–	2
2.	अ. योगराज गुग्गुलु रास्नासप्तकक्वाथ	भा. का. चि. सं. प.	16	–	–	4	4	3	5
	ब. एकांगवीर रस		12	–	–	3	1	1	7
	स. समीर पन्नग रस		1	–	–	–	1	–	–
3.	अ. शिवगुटिका और समीर पन्नग रस आन्तरिक एवं महामाष तैल बाह्य प्रयोग	भा. पं. सं. चे.	7	1	–	–	2	4	–
	ब. धात्र्यादि लौह और एकांगवीर रस आन्तरिक तथा		9	–	1	–	2	6	–

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
	महामाष तैल बाह्य प्रयोग								
	स. समीर पन्नग रस		17	–	–	–	1	12	4
	आन्तरिक, महामाष तैल								
	बाह्य शालिधान्य पिंड स्वेद								
	द. एकांगवीर रस आंतरिक		8	–	1	–	3	4	–
	महामाष तैल बाह्य तथा								
	शालिधान्य पिंड स्वेद								
	इ. पंचकर्म चिकित्सा		7	1	–	–	2	1	3
4.	एकांगवीर रस	के. अनु. सं. दि.	17	–	–	3	4	2	8
	योग :		97	3	2	10	20	33	29

गृध्रसी

गृध्रसी रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर तथा भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरूतुरूथि में किया गया। इस अध्ययन में केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान भुवनेश्वर में तीन रोगियों का एरण्ड तैल से उपचार किया गया जिनमें एक रोगी को मध्यम लाभ, एक रोगी को आंशिक लाभ मिला जब कि एक रोगी ने इस चिकित्सा को बीच में छोड़ दिया।

भारतीय पंचकर्म संस्थान चेरूतुरूथि में 23 रोगियों को भल्लातक चूर्ण का दूध के साथ प्रयोग किया गया। जिसमें एक रोगी को पूर्ण लाभ, एक रोगी को आँशिक लाभ मिला जब कि पांच रोगियों को विशिष्ट लाभ मिला। 10 रोगियों को इस चिकित्सा से कोई लाभ नहीं तथा छः रोगियों ने इस चिकित्सा को बीच में ही छोड़ दिया।

पंगु

पंगु रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण भारतीय पंच कर्म संस्थान चेरूतुरूथि में किए गए। कुल मिलाकर 14 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई। निम्न तालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका

पंगु रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का
निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम						
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	अ. गोरोचनादि गुटिका अश्वगंधा चूर्ण अंतः प्रयोग और बलाश्वगंधादि तैल का बाह्य प्रयोग	भा. पं. सं. चे.	7	—	2	—	3	2	—
	ब. एकागंवीर रस अंतः प्रयोग तथा महामाष तैल बाह्य प्रयोग ।		4	1	1	—	—	—	2
	स. मूर्छित तैल के साथ पंचकर्म चिकित्सा		3	—	—	—	—	2	1
	योग		14	1	3	—	3	4	3

अर्दित

अर्दित रोग का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण भारतीय पंचकर्म संस्थान चेरुतुरुति में किया गया । कुल 12 रोगियों को दो वर्गों में विभक्त कर अध्ययन किया गया । एक वर्ग के छः रोगियों को महावात-विध्वंशन रस तथा रास्ना सप्तक क्वाथ के साथ उपचार किया गया । जिसमें से चार रोगियों की दशा में स्पष्ट सुधार तथा दो रोगियों की दशा में बहुत कम सुधार देखा गया ।

दूसरे वर्ग के छः रोगियों को खंजनकारि रस तथा भूनाग तैल के साथ स्नेहन तथा षष्टिक धान्य के साथ स्वेदन किया गया जिसका अच्छा परिणा देखा गया ।

शैशवीय वात

शैशवीय वात रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण भारतीय पंचकर्म संस्थान, चेरुतुरुति तथा केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान दिल्ली में किए गए । कुल मिलाकर 34 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई । निम्नतालिका में चिकित्सा विधि औषध योगों के नाम चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं -

तालिका

शैशवीय वात रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम ।

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम						
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. अ.	गोरोचनादिगुटिका, अश्वगंधाचूर्ण अन्तः प्रयोग और बलाश्वगंधादि तैल बाह्य प्रयोग ।	भा. पं. सं. चे.	6	1	—	—	3	1	1
ब.	एकांगवीर रस एरण्ड तैल के साथ अंतः प्रयोग तथा महामाष तैल बाह्य प्रयोग		6	—	1	—	2	2	1
2.	एकांगवीर रस एवं माष तैल		22	5	2	2	4	2	
		योग	34	6	3	2	9	5	9

अन्नद्रवशूल

अन्नद्रव शूल रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण नैदानिक अनुसंधान एकक, हैदराबाद तथा क्षेत्रीय अनुसंधान-केन्द्र, ईटानगर में किया गया । कुल मिलाकर 38 रोगियों पर अध्ययन किया गया ।

निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक हैदराबाद में तीन रोगियों का आमलकी चूर्ण तथा एलादि चूर्ण के साथ उपचार किया गया । जिसमें एक रोगी को इस चिकित्सा से स्पष्ट लाभ मिला जब कि दो रोगियों ने इस चिकित्सा को छोड़ दिया ।

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, ईटानगर में 35 रोगियों का प्रवालपिष्टी तथा जहर मोहरा पिष्टी के साथ उपचार किया गया 17 रोगियों पर इसके अच्छे परिणाम देखे गए जब कि 9 रोगियों पर इसका अल्प प्रभाव तथा दो रोगी इस चिकित्सा से अप्रभावित रहे, जब कि सात रोगियों ने इस चिकित्सा को बीच में ही छोड़ दिया ।

अम्लपित्त

अम्लपित्त रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण, निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, हैदराबाद, कोट्टाकल, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, नागपुर, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र मंडी, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र हस्तिनापुर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान जूनागढ, में किया गया । कुल मिलाकर 219 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदिक औषध योगों से चिकित्सा की गई निम्न तालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं -

अम्लपित्त रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम ।

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकककुल	परिणाम					
			पू. रोगी संख्या	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	चि. ला.	वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	आमलकी चूर्ण और सर्जिकाक्षार	नि. चि. अनु. ए. है.	21	5	4	—	—	12
2.	अविपत्तिकर चूर्ण एवं कपर्दिका भस्म	के. अनु. सं. भु.	4	—	—	2	—	2
3. अ.	अविपत्तिकर चूर्ण और कपर्दिका भस्म	क्षे. अनु. सं. ना.	3	3	—	—	—	—
ब.	सर्जिकाक्षार और आमलकी चूर्ण		3	—	—	1	—	2
4. अ.	सर्जिकाक्षार, जहरमोहरा पिष्टी और आमलकी स्वरस	क्षे. अनु. के. म.	46	3	14	14	1	14
ब.	अविपत्तिकर चूर्ण, कपर्दिका भस्म और सर्जिकाक्षार आमलकी चूर्ण		39	2	14	8	2	13
5. अ.	अविपत्तिकर चूर्ण और शंख भस्म	क्षे. अनु. के. ह.	15	2	5	—	—	8
ब.	अविपत्तिकर चूर्ण और कपर्दिका भस्म		12	3	3	1	—	5

1	2	3	4	5	6	7	8	9
6.	अ. सर्जिकाक्षार, जहरमोहरा पिष्टी और आमलकी स्वरस	क्षे. अनु. सं. जू.	23	—	13	3	—	7
	ब. अविपत्तिकर चूर्ण कपर्दिका भस्म		16	—	6	5	—	5
	स. सर्जिका क्षार और आमलकी चूर्ण		10	—	5	2	2	1
7.	अ. अविपत्तिकर चूर्ण शंख भस्म, आमलकी चूर्ण और सर्जिका भस्म	नि. चि. अनु. ए. को.	11	8	2	1	—	—
	ब. नियंत्रित वर्ग (ग्लूकोज पाउडर)		16	—	—	—	16	—
		योग:	219	26	66	37	21	69

परिणामशूल

परिणामशूल पर निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, हैदराबाद, कोट्टकल तथा केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर व नई दिल्ली में कुल 195 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय योगों से चिकित्सा की गई । निम्न तालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं -

परिणामशूल रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम ।

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम					
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	अ. इन्दुकान्त घृत	के. अनु. ए. है.	33	8	10	3	—	12
	ब. महातिक्त घृत		14	4	2	—	—	8
	स. सूतशेखर रस एवं आमलकी स्वरस		1	1	—	—	—	—
2.	सूतशेखर रस और आमलकी स्वरस	के. अनु. सं. भुव.	12	5	—	—	—	7
3.	अ. इन्दुकान्त घृत	के. अनु. ए. को.	48	24	20	2	2	—
	ब. महातिक्त घृत		46	30	15	—	1	—
	स. नियंत्रक ग्रुप (ग्लूकोज़ पाउडर)		26	—	—	—	26	—
4.	सूतशेखर रस और आमलकी स्वरस	के. अनु. सं. दि.	15	—	5	5	1	4
		योग	195	72	52	10	30	31

प्रवाहिका

प्रवाहिका रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र गंगटोक, नैदानिक अनुसंधान संस्थान कोट्टकल में किया गया । कुल मिलाकर 78 रोगियों पर अध्ययन किया गया ।

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र गंगटोक में 75 रोगियों को जातीफलादि चूर्ण, महाशंखवटी, चित्रकादि वटी, हिंग्वष्टक चूर्ण से उपचार किया गया । जिससे 21 रोगियों को पूर्ण लाभ, 22 रोगियों को आंशिक लाभ तथा 16 रोगियों को विशिष्ट लाभ तथा 16 रोगियों को मध्यम लाभ मिला ।

नैदानिक अनुसंधान एकक कोट्टकल में 3 रोगियों को चांगेर्यादि घृत के साथ उपचार किया गया । जिससे दो रोगियों पर स्पष्ट प्रभाव तथा एक रोगी पर मध्यम लाभ देखा गया ।

ग्रहणी रोग

ग्रहणी रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, जम्मू में किया गया । कुल मिलाकर 17 रोगियों पर यह अध्ययन किया गया जिसमें से 11 रोगी केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान भुवनेश्वर में थे, इनका शुण्ठी चूर्ण के साथ उपचार किया गया जिनमें से 5 रोगियों को मध्यम लाभ मिला जब कि 6 रोगियों ने इस चिकित्सा को बीच में ही छोड़ दिया ।

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र जम्मू में छः रोगियों का कुटजघनवटी तथा शंखद्राव के साथ उपचार किया गया जिनमें से तीन रोगियों को मध्यम लाभ दो रोगियों को विशिष्ट लाभ जब कि एक रोगी को इस चिकित्सा से कोई लाभ नहीं मिला ।

अंकुश मुख कृमि

इस रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, कोट्टकल में किया गया । कुल मिलाकर 20 से 60 वर्ष की आयु के तीस पुरुष रोगियों के मल परीक्षण से इस रोग की संपुष्टि कर अध्ययन में सम्मिलित किया गया तथा पुरुष रोगियों को दो वर्गों में विभक्त किया गया ।

प्रथम वर्ग के रोगियों को हिन्गुत्रिगुण तैल दिया गया । इस चिकित्सा से 11 रोगियों में अच्छा लाभ देखा गया। जब कि तीन रोगियों पर इस चिकित्सा का मध्यम लाभ देखा गया तथा एक रोगी पर इस चिकित्सा का अल्प लाभ देखा गया ।

दूसरे वर्ग के रोगियों का एलोपैथी औषधि से उपचार किया गया । जिसमें से 5 रोगियों को अच्छा लाभ तथा 9 रोगियों को मध्यम लाभ तथा एक रोगी में अल्प लाभ देखा गया ।

आमजग्रहणी

इस रोग पर निदान चिकित्सात्म परीक्षण निदान चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक, कोट्टाकल में किया गया तथा जियार्डिया के 15 रोगियों तथा एन्टामीबा हिस्टोलिटिका के 6 रोगियों की दाड़िमाष्टक चूर्ण के प्रयोग से चिकित्सा की गई ।

मल परीक्षण के पश्चात् किसी भी रोगी में जियार्डिया तथा एन्टामीबा हिस्टोलिटिका का धनात्मक प्रभाव नहीं देखा गया ।

कामला

कामला रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान लखनऊ, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र जम्मू तथा मण्डी एवं हस्तिनापुर तथा भारतीय पंचकर्म संस्थान चेरुतुरुति में किया गया । कुल मिलाकर 29 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई । निम्न तालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण तैयार किया गया है ।

तालिका

कामला रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान चिकित्सात्म परीक्षण-परिणाम

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	कुल रोगी संख्या	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	पुनर्नवा मण्डूर, आरोग्यवर्धिनी सर्जिका क्षार	क्षे. अनु. सं. ल.	4	—	—	1	—	—	3
2.	पुनर्नवा मण्डूर, आरोग्यवर्धिनी एवं श्वेत पर्पटी	क्षे. अनु. के. ज.	8	3	5	—	—	—	—
3.	पुनर्नवामण्डूर, आरोग्यवर्धिनी और सर्जिका क्षार	क्षे. अनु. के. म.	10	1	1	1	1	—	6
4.	पुनर्नवा मण्डूर, आरोग्यवर्धिनी एवं सर्जिका क्षार	क्षे. अनु. के. ह.	4	—	—	—	—	—	4
5.	पुनर्नवा मण्डूर, आरोग्यवर्धिनी एवं श्वेतपर्पटी	भ. पं. सं. चे.	3	—	3	—	—	—	—
		योग:	29	4	9	2	1	—	13

रक्तार्श

रक्तार्श रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण भारतीय काय चिकित्सा संस्थान पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र नागपुर तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान ग्वालियर में किया गया। कुल मिलाकर 52 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषधियों से चिकित्सा की गई। निम्न तालिका में चिकित्सा विधि औषध योगों के नाम चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं -

तालिका

रक्तार्श पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण परिणाम

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	कुल रोगी संख्या	परिणाम					
				पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू. ला.	व.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	अर्शारि वटी	भा. क. चि. सं.प.	26	—	9	7	—	—	10
2. अ.	बोलबद्ध रस और कासीसादि तैल का बाह्य प्रयोग	क्षे. अनु. के. ना.	2	—	—	—	—	—	2
ब.	स्फटिका सूरणखण्ड भस्म और कासीसादि तैल स्थानिक प्रयोग		3	—	—	—	—	—	3
3.	बोलबद्ध रस	क्षे. अनु. सं. ग्वा.	21	12	4	5	—	—	—
		योग	52	12	13	12	—	—	15

तमक श्वास

तमक श्वास रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान लखनऊ, भारतीय काय चिकित्सा संस्थान पटियाला,क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान जूनागढ़, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र विजयवाडा, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान पटना तथा ग्वालियर एवं केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान दिल्ली में किया गया । कुल मिलाकर 343 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई । निम्न तालिका में चिकित्सा विधि औषध योगों के नाम चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं -

तालिका

तमक श्वास रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण परिणाम

क्र. सं.		औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम						
				कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू. ला.	चि. वि.
1		2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.		श्वास कुठार रस तालीसादि चूर्ण वासावलेह एवं कनकासव	के. अनु. सं. भु.	15	—	—	5	—	—	10
2.	अ.	भागोत्तर गुटिका	क्षे. अनु. सं. ल.	10	—	—	3	1	1	5
	ब.	सोमलता चूर्ण कुष्ठ पंचांग कंटकारी और नरसार		15	—	—	1	7	—	7
3.	अ.	नारदीय लक्ष्मी विलास रस मिश्रण	भा. का. चि. सं. प	13	—	1	3	5	—	4
	ब.	श्वास कुठार रस मिश्रण		10	—	—	1	5	—	4
	स.	भागोत्तर गुटिका		28	—	4	3	8	1	12
	द.	सोमलतादि योग		3	—	1	—	—	1	1
4.	अ.	भागोत्तर गुटिका	क्षे. अनु. सं. जू.	7	—	—	5	—	—	2
	ब.	सोमलता, कंटकारी और नरसार		7	—	—	3	3	—	1
	स.	मल्ल, शंख और धतू रा पत्र (वटी)		2	—	—	—	—	—	2
5.		भागोत्तर गुटिका	क्षे. अनु. सं. वि.	7	—	3	—	1	—	3
6.		हरिद्रा खंड	क्षे. अनु. सं. प.	142	—	24	46	49	8	15
7.		भागोत्तर गुटिका	क्षे. अनु. सं. ग्वा.	54	—	12	—	16	13	13
8.		क्रम वर्धमान पिप्पली	के. अनु. सं. दि.	30	—	8	7	3	1	11
		योग		343	—	53	77	98	25	90

श्वेतप्रदर

श्वेत प्रदर रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान दिल्ली, भुवनेश्वर, भारतीय पंचकर्म संस्थान चेल्तुरुति, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान जूनागढ़ तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र नागपुर में किया गया । कुल मिलाकर 129 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई । निम्न तालिका में चिकित्सा विधि औषध योगों के नाम चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं ।

तालिका

श्वेतप्रदर व्याधि पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान चिकित्सक परीक्षण परिणाम

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम					
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	पुनर्नवा मंडूर, स्वर्ण वंग	के. अनु. सं. भु.	36	8	10	10	—	8
2. अ.	स्वर्ण वंग कुक्कुटाण्ड त्वक् भस्म और पुनर्नवा मण्डूर उदुम्बर त्वक् क्वाथ	भा. पं. सं. चे.	13	9	2	1	—	1
ब.	लोध्रासव पत्रांगासव अश्वगंधा चूर्ण और निर्गुण्डी तैल पिचु		21	10	6	2	—	3
स.	स्वर्ण वंग कुक्कुटाण्ड त्वक् भस्म और पुनर्नवामण्डूर		4	3	1	—	—	—
द.	लोध्रासव, पत्रांगासव और अश्वगंधा चूर्ण		4	—	4	—	—	—
3. अ.	कुक्कुटाण्ड त्वक् भस्म स्वर्ण वंग और पुनर्नवा मण्डूर उदुम्बर क्वाथ के साथ	के. अनु. सं. दि.	9	2	3	1	1	2

की गई । निम्न तालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं ।

मूत्रकृच्छ्र रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का
निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम						
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	तृणपंचमूल क्वाथ, गोक्षुरादि गुग्गुलु और श्वेत पर्पटी	क्षे. अनु. सं. ल.	3	—	—	2	—		1
2. अ.	गोक्षुरादि गुग्गुलु और श्वेत पर्पटी	क्षे. अनु.के. ई.	33	7	12	4	—		10
ब.	तृणपंचमूल क्वाथ और श्वेत पर्पटी		12	4	2	—	—		6
स.	गोक्षु रादि और तृणपंचमूल क्वाथ		23	7	9	—	—		7
3.	तृणपंचमूल क्वाथ और श्वेत पर्पटी	क्षे. अनु. के. ह.	19	6	2	3	—		8
		योग	90	24	25	9	—		32

मूत्राश्मरी

मूत्राश्मरी रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान दिल्ली, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र जम्मू तथा हस्तिनापुर में किए गए । कुल मिलाकर 35 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई । निम्न तालिका में चिकित्सा विधि/औषध योगों के नाम/चिकित्सा किए गये रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणा संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं ।

मूत्राश्मरी रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम					
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	श्वेत पर्पटी कुलत्थ, पाषाणभेद और गोक्षुर क्वाथ	के. अनु. सं. दि.	16	7	3	—	3	3
2.	श्वेत पर्पटी . पाषाणभेद और, गोक्षुर क्वाथ	क्षे. अनु. के. ज.	6	1	5	—	—	—
3. अ.	श्वेत पर्पटी और कुलत्थ क्वाथ	क्षे. अनु. के. ह.	11	—	1	5	1	4
ब.	श्वेत पर्पटी कुलत्थ, पाषाणभेद और गोक्षुर		2	—	1	—	1	—
		योग	35	8	10	5	5	7

वृक्कशोथ

वृक्क शोथ पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण इस वर्ष चल चिकित्सात्मक अनुसंधान एकक (आयु, दल एवं आधुनिक दल) वाराणसी द्वारा किया गया । इस चिकित्सा में पुनर्नवा, तृणपंचमूल, गोक्षुर, वरुण एवं शिग्रु का प्रयोग किया गया । इस प्रतिवेदित वर्ष में 13 और नए रोगियों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया । इस चिकित्सा से नैदानिक सुधार के साथ ही रक्त यूरिया, सीरम क्रिएटिनिन स्तर में भी सुधार पाया गया ।

रक्तचाप

रक्तचाप रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान दिल्ली, भारतीय काय चिकित्सा संस्थान पटियाला, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान कलकत्ता, लखनऊ एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र मण्डी में किया गया । कुल मिलाकर 131 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय योगों से चिकित्सा की गई । निम्न तालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तु किए गए हैं ।

रक्तचाप रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम

क्र.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम					
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. अ.	अर्जुनत्वकवटी	भा. का. चि. सं. प.	21	—	6	8	1	6
ब.	उशीरादि चूर्ण		9	—	5	2	—	2
2.	तगरादि चूर्ण अर्जुनत्वक् चूर्ण जटामंसी क्वाथ	के. अनु. सं. दि.	30	2	10	1	—	17
3.	तगरादि चूर्ण, अर्जुनत्वक् और जटामांसी क्वाथ	क्षे. अनु. सं. ल.	3	—	1	1	1	—
4. अ.	तगरादि	क्षे. अनु. सं. क.	6	2	—	—	2	—
ब.	उशीरादि चूर्ण		12	1	—	—	1	10
5. अ.	तगरादि चूर्ण अर्जुनत्वक् चूर्ण जटामांसी क्वाथ के साथ	क्षे. अनु. के. म.	38	3	6	10	—	19
ब.	उशीरादि चूर्ण और अर्जुनत्वक्क्वाथ		2	—	—	1	—	1
स.	मिथाइल डोपा		10	—	5	—	—	5
		योग	131	8	33	23	5	62

अरक्तजन्य हृद्रोगों एवं उच्च रक्तचाप के रोगियों में पुष्करमूल एवं गुग्गुलु की भूमिका । मि. औ. अनु. परि. वा.

इस अध्ययन को सतत रखकर 32 नए रोगियों को इस अध्ययन में सम्मिलित किया गया । चिकित्सा के पश्चात् रोगियों में सीरमकोलेष्ट्राल, सीरम ट्राइग्लीसराइड एवं सीरम कुल लिपिडों का सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यन्त उल्लेखनीय ह्रास पाया गया तथा रोगियों के शरीर भार में ह्रास पाया गया । अधिकांश रोगियों में हृत्पेशी शूल,

श्वासकष्ट तथा हृत् स्पन्दन जन्य बाधा में पर्याप्त सुधार पाया गया । इस चिकित्सा से 20 रोगियों को पूर्ण लाभ एवं सात रोगियों में मध्यम लाभ देखा गया ।

विषमज्वर (मलेरिया)

विषम ज्वर रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान जूनागढ़,क्षैत्रीय अनुसंधान केन्द्र जम्मू और डॉ. ए. लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, मद्रास में किए गए । कुल मिलाकर 39 रोगियों की आयुष-64 से चिकित्सा की गई । इस चिकित्सा में 31 रोगियों को पूर्ण लाभ मिला तथा छः रोगियों पर इस चिकित्सा का कोई प्रभाव नहीं देखा गया । शेष दो रोगियों ने इस चिकित्सा को छोड़ दिया ।

विषमज्वर (लाक्षणिक रोगी)

विषमज्वर पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान दिल्ली, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान जयपुर, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र नागपुर, ईटानगर, मण्डी एवं हस्तिनापुर में किया गया । कुल मिलाकर 167 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई । निम्नतालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं ।

विषमज्वर (लाक्षणिक) रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम						
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	आयुष-64	क्षे. अनु. सं. जय.	22	17	2	1	—	2	—
2.	आयुष-64	क्षे. अनु. के. ना.	7	—	—	—	—	—	7
3.	आयुष-64	क्षे. अनु. के. ई.	28	9	—	—	—	4	15
4. अ.	आयुष-64	क्षे. अनु. के. म.	51	32	11	—	1	—	7
ब.	क्लोरोक्विन		7	5	—	—	—	—	2
5.	आयुष-64	क्षे. अनु. के. ह.	37	12	—	1	—	1	23
6.	आयुष-64	के. अनु. सं. दि.	15	8	5	—	2	—	—
		योग	167	83	18	2	3	7	54

श्लीपद

श्लीपद रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान भुवनेश्वर, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र विजयवाड़ा, नागपुर तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान पटना में किया गया । कुल मिलाकर 94 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई । निम्न तालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए है ।

श्लीपद रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम

क्र. सं.		औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम					
				कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	चि. वि.
1		2	3	4	5	6	7	8	9
1.	अ.	**चिकित्सालय अध्ययन**							
	अ.	आयुष - 64 (श्लीपद)	के. अनु. सं. भु.	3	3	—	—	—	—
	ब.	सप्तपर्णघनवटी (श्लीपद)		4	3	—	—	—	1
	स.	सुदर्शनघनवटी, आरोग्यवर्धिनी और पुनर्नवारिष्ट		6	2	1	—	1	2
	ब.	क्षैत्रीय अध्ययन							
	अ.	आयुष-64 (श्लीपद)		19	—	1	2	16	—
	ब.	यथा उपर्युक्त(स)में		8	—	—	2	4	2
2.		आरोग्यवर्धिनी सुर्दशनघनवटी और पुनर्नवादि क्वाथ	क्षे. अनु. के. वि.	8	2	5	1	—	—
3.	अ.	आयुष -64 और निम्ब पचांग स्वरस	क्षे. अनु. के. ना.	4	—	—	—	—	4
	ब.	सुदर्शनघनवटी और आरोग्यवर्धिनी वटी पुनर्नवाक्वाथ		3	—	1	—	—	2

1	2	3	4	5	6	7	8	9
	स. आयुष - 64 निम्ब पंचांग चूर्ण		2	1	—	—	1	—
4.	अ. आयुष - 64	क्षे. अनु. सं. प.	34	8	1	12	—	13
	ब. सुदर्शनघनवटी और महामंजिष्ठादि क्वाथ		3	—	—	1	—	2
		योग	94	19	9	18	22	26

किटिभ

किटिभ रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान दिल्ली, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान जूनागढ़, तथा त्रिवेन्द्रम में किया गया । कुल मिलाकर 35 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई । निम्न तालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किए गए हैं ।

किटिभ रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम						
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	आरोग्यवर्धिनी वटी	क्षे. अनु. सं. जू.	5	—	1	—	2	—	2
2.	आरोग्यवर्धिनी वटी और चक्रमर्द केरम	क्षे. अनु. सं. दि.	8	1	3	—	3	—	1
3.	अ. निंबिडीन केप और लज्जालुकेरम	क्षे. अनु. सं. त्रि.	18	1	1	5	4	1	6
	ब. निंबिडीन केप और विश्वामित्रकपाल तैल		4	—	1	2	1	—	—
		योग	35	2	6	7	10	1	9

विचर्चिका

विचर्चिका रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान त्रिवेन्द्रम तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र ईटानगर में किया गया । कुल मिलाकर 76 रोगियों की विभिन्न आयुर्वेदीय औषध योगों से चिकित्सा की गई। निम्न तालिका में चिकित्सा विधि, औषध योगों के नाम, चिकित्सा किए गए रोगियों की संख्या तथा चिकित्सा परिणाम संबंधी विवरण प्रस्तुत किए गए हैं ।

विचर्चिका रोग पर आयुर्वेदीय औषध योगों का निदान-चिकित्सात्मक परीक्षण-परिणाम

क्र. सं.	औषध योग	संस्थान/ केन्द्र/एकक	परिणाम						
			कुल रोगी संख्या	पू. ला.	वि. ला.	म. ला.	अ. ला.	शू. ला.	चि. वि.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. अ.	चक्रमर्द क्वाथ और चक्रमर्द केरम	क्षे. अनु. सं. त्रि.	3	2	—	—	—	—	1
ब.	मंजिष्ठादि क्वाथ और अर्कपत्र केरम		1	—	—	—	—	—	1
स.	आरग्वध क्वाथ और लज्जालु केरम		20	2	4	6	4	2	2
2. अ.	चक्रमर्द क्वाथ और मरिच्यादि तैल	क्षे. अनु. के. इ.	19	2	3	3	5	1	5
ब.	मंजिष्ठादि क्वाथ और मरिच्यादि तेल		29	3	6	4	6	3	7
स.	आरोग्यवर्धिनी और मरिच्यादि तैल		4	—	2	—	1	—	1
		योग	76	9	15	13	16	6	17

श्यामा

श्यामा रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र ईटानगर में किया गया । कुल मिलाकर 74 रोगियों को दो वर्गों में विभक्त कर चिकित्सा की गई । प्रथम वर्ष के 68 रोगियों को तुवरक चूर्ण, शुद्ध गंधक तथा महामरिच्यादि तैल से उपचार करने पर 7 रोगियों को मध्यम एवं सात रोगियों को पूर्ण लाभ मिला, नौ रोगियों को इस चिकित्सा से विशिष्ट लाभ तथा 18 रोगियों को आंशिक लाभ तथा तीन रोगियो पर इस चिकित्सा का कोई प्रभाव नहीं देखा गया, तथा शेष 24 रोगियों ने इस चिकित्सा को बीच में ही छोड़ दिया ।

दूसरे वर्ग के छः रोगियों को आरोग्यवर्धिनी वटी, कैशोरगुग्गलु तथा मरिच्यादि तैल से उपचार करने पर दो रोगियों को पूर्ण लाभ जब कि एक रोगी को इस चिकित्सा से लाभ नहीं मिला तथा शेष तीन रोगियों ने इस चिकित्सा को बीच में ही छोड़ दिया ।

श्वित्र

श्वित्र रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान त्रिवेन्द्रम एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र हस्तिनापुर में किया गया । कुल मिलाकर 25 रोगियों का आयुष - 57 के साथ उपचार किया गया । इस चिकित्सा से तीन रोगियों को मध्यम लाभ तथा एक रोगी को अल्प लाभ मिला, शेष 21 रोगियों ने इस चिकित्सा को छोड़ दिया ।

त्वक् रोग

त्वक् रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र गंगटोक में किया गया । कुल मिलाकर 42 रोगियों को शुद्ध गंधक तथा हरिद्राखण्ड से चिकित्सा की गई । इस उपचार में दो रोगियों कों पूर्ण लाभ, एक रोगी को विशिष्ट लाभ, पांच रोगियों को मध्यम लाभ तथा छः रोगियों को आंशिक लाभ मिला । शेष 28 रोगियों ने इस उपचार को पूरा नहीं किया ।

अपस्मार

अपस्मार रोग पर निदान चिकित्सात्मक परीक्षण केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान दिल्ली में किया गया । कुल मिलाकर 20 रोगियों को आयुष- 56 के साथ उपचार किया गया । इस चिकित्सा का 16 रोगियों पर मध्यम लाभ देखा गया।

चित्तोद्वेग

चित्तोद्वेग रोग पर निदान चिकित्सा अध्ययन डा. ए. लक्ष्मीपति आयुर्वेद अनुसं धान केन्द्र मद्रास में किया गया । इस अध्ययन में आठ रोगियों को आयुष्मान् 15 द्वारा उपचार किया गया । इस चिकित्सा से दो रोगियों को आंशिक तथा दो रोगियों को कोई लाभ नहीं मिला । शेष चार रोगियों ने इस चिकित्सा को पूरा नहीं किया ।

आयुर्वेदिक औषधियों के रसायन प्रभाव का अध्ययन

इस पर अध्ययन कार्य डा. ए. लक्ष्मीपति अनुसंधान केन्द्र मद्रास द्वारा योगिक औषधियों जिसमें बला, गुडूची, आमलकी तथायष्टि से किया गया । इन औषधियों से 16 रोगियों की चिकित्सा की गई । जिसमें सात रोगियों पर इस चिकित्सा का मध्यम लाभ देखा गया तथा एक रोगी पर इस चिकित्सा का अल्प लाभ देखा गया, शेष आठ रोगियों ने इस चिकित्सा को बीच में ही छोड़ दिया ।

अर्बुद विशेष (कैंसर)

अर्बुद विशेष रोग पर अध्ययन, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान दिल्ली तथा आमला कैंसर चिकित्सालय त्रिचूर में किया गया । केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान दिल्ली में आठ रोगियों का उपचार किया गया जिनमें से पांच रोगियों को पुम्बजिन तथा तीन रोगियों को एसटीजी- ए गुप्तांकित औषध से उपचार किया गया । सभी आठ रोगियों ने इस चिकित्सा कार्य को पूरा नहीं किया ।

आमला कैंसर चिकित्सालय त्रिचूर द्वारा एसटीजी से कुछ रोगियों की चिकित्सा की गई । इस औषध से रोगियों की दशा में विशेष सुधार नहीं देखा गया ।

आमची अनुसंधान एकक लेह-लद्दाख

इस प्रतिवेदित वर्ष में एकक द्वारा तिब्बत साहित्य में वर्णित औषधियों से संबं धित सूचना को एकत्रित कर उसका संकलन किया गया । इस सूचना की आधार पुस्तिका (फार्मुलेशन आफ तिब्बती मेडीसन)की 314 पृष्ठों की पुस्तक से 195 योगिकों के संदर्भ संकलन करके प्रकाशन योग्य बनाया गया है । इस एकक द्वारा लद्दाख के निचले क्षेत्रों में भ्रमण करके शिलाजीत पाये जाने वाले 2-3 नए स्थानों का पता लगाया गया । इस एकक द्वारा बहिरंग रोगी विभाग में 2219 रोगियों की चिकित्सा की गई ।

वर्ष 1988-89 में अनुसंधान परियोजनाओं द्वारा विभिन्न रोगों से पीड़ित रोगियों पर किए गए अध्ययनों की तालिका

क्र. सं.	रोग	रोगी संख्या	अनुसंधान परियोजनाएं
1	2	3	4
1.	**वातव्याधि**		
	अ. आमवात	241	अनु, सं. भु, भा. का. चि. सं. प. , भा. पं. सं. चे. ,क्षे. अनु सं . कं . , क्षे . अनु . सं . ग्वा. ज. और क्षे . अनु . के . ई.
	ब. संधिगतवात	15	क्षे. अनु. सं. ग्वा. और क्षे. अनु. के. ज.
	स. पक्षवध	97	के. अनु. सं. भु., भा. का. चि. सं. प. भा.प.सं. चे. और के. अनु. सं. दि.
	द. गृध्रसी	26	के. अनु. सं. भु. , भा. पं. सं. चे.
	य. पंगु	14	भा. पं. सं. चे.
	र. अर्दिता	12	भा. पं. सं. चे.
	ल. शैशवीयवात	34	के. अनु. सं. दि. , भा. पं. सं. चे.
2.	**अम्लपित्त, परिणामशूल**		
	अ. अन्नद्रवशूल	38	नि. चि. अनु. ए. है. , क्षे. अनु. के. ई.
	ब. अम्लपित्त	219	क्षे. अनु. के. म. , क्षे. अनु. के. ना. , क्षे. अनु. के. ह. , क्षे. अनु. सं. जू. , नि. चि. अनु. एक. को.
	स. परिणामशूल	195	के. अनु. सं. दि. , के. अनु. सं. भु. , नि. चि. अनु. ए. है. नि. चि. अनु. ए. को.
3.	**प्रवाहिका, ग्रहणीरोग**		
	अ. प्रवाहिका	78	क्षे. अनु. के. गं. , नि. चि. अनु. ए. को.
	ब. ग्रहणीरोग	17	के. अनु. सं. भु. , क्षे. अनु. के. ज.
4.	**अन्य उदर रोग**		
	अ. अंकुश मुखकृमि	30	नि. चि. अनु. ए. को.
	ब. आमजग्रहणी	21	नि. चि. अनु. ए. को.
	स. कामला	29	भा. पं. सं. चे. , क्षे. अनु. के. ज., क्षे. अनु. के. म. , क्षे. अनु. के. ह., क्षे. अनु. सं. ल.
	द. रक्तार्श	52	भा. का. चि. सं. प. , क्षे. अनु. के. ना. , क्षे. अनु. सं. ग्वा.
5.	**तमक श्वास**	343	के. अनु. सं. दि. , के. अनु. सं. भु. , भा. का. चि. सं. प., क्षे. अनु. के. वि. , क्षे. अनु. सं. ल. , क्षे. अनु. सं. जू., क्षे. अनु. सं. प. , क्षे . अनु . सं . ग्वा..

1	2	3	4
6.	**स्त्री रोग**		
	अ. श्वेत प्रदर	129	के. अनु. सं. दि. , के. अनु. सं. भु. , भा. पं. सं. चे. , क्षे. अनु. सं. जू. , क्षे. अनु. के. ना.
	ब. रक्त प्रदर	113	के. अनु. सं. दि. , के. अनु. सं. भु. , भा. का. चि. सं. प, क्षे अनु. सं. जू. ,
7.	**मधुमेह, मूत्र रोग**		
	अ. मेदो रोग	12	क्षे. अनु. सं. क. , क्षे, अनु. सं.ल. , क्षे. अनु. सं. जू.
	ब. मधुमेह	65	के. अनु. सं. दि. , भा. का. चि. सं. प. , क्षे. अनु. सं. क., डा. ए. ल. आयु. अनु. के. म.
	स. मूत्रकृच्छ्र	90	क्षे. अनु. के. ई. , क्षे. अनु. के. ह. , क्षे. अनु. सं. ल. ,
	द. मूत्राश्मरी	35	के. अनु. सं. दि. , क्षे. अनु. के. ज. , क्षे. अनु. के. ह. ,
	य. वृक्क शोथ	13	मि. औ. अनु. परि. वा.
8.	**रक्तचाप**	131	के. अनु. सं. दि. , भा. का. चि. सं. प. , क्षे. अनु. के. म. , क्षे. अनु. सं. क. , क्षे. अनु. सं. ल.
9.	**हृद्रोग**	32	मि. औ. अनु. परि. वा.
10.	**विषम ज्वर**		
	अ. विषमज्वर/मलेरिया	39	क्षे. अनु. के. ज., क्षे. अनु. सं. जू. , डा. ए. ल. आ यु. अनु. के. म. ,
	ब. विषमज्वर	167	के. अनु. सं. दि. , क्षे. अनु. सं. ज. , क्षे. अनु. के. ना. , क्षे . अनु. के. ई. , क्षे. अनु. के. म. , क्षे. अनु. के. ह.
11.	**श्लीपद**	94	के. अनु. सं. भु. , क्षे. अनु. के. वि., क्षे. अनु. के. ना. क्षे. अनु. सं. प.
12.	**त्वक्‌रोग**		
	अ. किटिभ	35	के. अनु. सं. दि. , क्षे. अनु. सं. जू. , क्षे. अनु. सं. त्रि.
	ब. विचर्चिका	76	क्षे. अनु. सं. त्रि. , क्षे. अनु. के. ई.
	स. पामा	74	क्षे. अनु. के. ई.
	द. श्वित्र	25	क्षे. अनु. के. ह. , क्षे. अनु. सं. त्रि.
	य. त्वक्‌रोग	42	क्षे. अनु. के. गं.
13.	**मानस रोग**		
	अ. अपस्मार	20	के. अनु. सं. दि.
	ब. चित्तोद्‌वेग	08	डा. ए. ल. आयु. अनु. के. म.

वर्ष 1988-89 की अवधि में अंतरंग एवं बहिरंग रोगी विभाग में चिकित्सित रोगी तालिका

क्र. सं.	केन्द्र/संस्थान/एकक	रोगियों की संख्या					विस्तर क्षमता प्रतिशत
		ब. रो. वि.			अं. रो. वि.		
		नये	पुराने	योग	प्रविष्ट*	मुक्त	
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	के. अनु. सं. , दिल्ली	13825	13895	27722	238	164	43
2.	के. अनु. सं. , भुवनेश्वर	6531	7255	13786	179	173	24.30
3.	भा. का. चि. सं. , पटियाला	6602	6598	13200	117	215	33.33
4.	भा. पं. सं. , चेरूतुरूति	8434	28501	36935	137	165	56.02
5.	के. अनु. सं. , बम्बई	1758	6675	8433	अं. रो.वि. अभी प्रारंभ हुआ है		
6.	क्षे. अनु. सं. , लखनऊ	लागू नहीं	—	22643	84	82	10
7.	क्षे. अनु. सं. , कलकत्ता	3566	13421	16987	66	72	35.30
8.	क्षे. अनु. सं. , जूनागढ	4413	9233	13646	35	40	11.27
9.	क्षे. अनु. सं. , पटना	4054	6010	10064	72	82	77.92
10.	क्षे. अनु. सं. , जयपुर	3530	3415	6945	120	126	36.36
11.	क्षे. अनु. सं. ,ग्वालियर	6279	5497	11786	80	87	21.32
12.	क्षे. अनु. सं. , त्रिवैन्द्रम	3559	16662	20221	73	75	64.00
13.	क्षे. अनु. के. , नागपुर	1583	5170	6753	अं. रो. वि. अभी प्रारंभ हुआ है		
14.	क्षे. अनु. के. , ईटानगर	3813	7502	11315	77	66	39. 86
15.	क्षे. अनु. के. , विजयवाडा	3945	7579	11524	33	37	37.00
16.	क्षे. अनु. के. , गंगटोक	5650	3154	8804	23	30	39.06
17.	क्षे. अनु. के. , झांसी	2074	2340	4414	अभी स्वीकृत नहीं है		

I - समिति

18.	क्षे. अनु. के. , मंडी	5452	3562	9014	141	140	57.06
19.	क्षे. अनु. के. , हस्तिनापुर	5846	6021	11867	52	52	37.60
20.	क्षे. अनु. के. , जम्मू	6067	9488	15555	-	-	-
21.	क्षे. अनु. के. , बंगलोर	1207	3569	4776	अभी स्वीकृत नहीं है		
22.	नि. चि. अनु. ए. , कोट्टकल	-	-	-	181	183	92.69
23.	नि. चि. अनु. ए. , हैदराबाद	-	-	-	65	69	लागू नहीं
24.	आयु. अनु. ए. , बंगलोर	314	709	1023	25	24	59.00
25.	ए. लक्ष्मीपति आयु. अनु. केन्द्र, मद्रास	196	251	447	20	20	लागू नहीं
26.	आमची अनुंसधान एकक, लेह	1462	757	2219	-	-	-
		100171	167265	290079	1918	1833	

स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

परिषद के स्वास्थ्य-रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम के अन्तर्गत सेवापरक सर्वेक्षण एवं संनिरीक्षण अनुसंधान कार्यक्रम, सामुदायिक स्वास्थ-रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम तथा आदिवासी स्वास्थय-रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम सम्मिलित हैं । इन कार्यक्रमों को सम्बद्ध संस्थानों/केन्द्रों/एककों के समीपवर्ती चयन किए ग्रामों में संचालित किया जाता है । इस वर्ष में इन तीनों कार्यक्रमों के अन्तर्गत किए गए कार्य का पृथक्-पृथक् विवरण निम्नानुसार प्रस्तुत है -

1. सेवापरक सर्वेक्षण एवं संनिरीक्षण अनुसंधान कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य चयन किए गए ग्रामों के प्रत्येक घर का सर्वेक्षण करना एवं अस्वस्थ व्यक्तियों से सम्बन्धित आंकड़ों को इस कार्य के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए विहित प्रपत्र में एकत्र करना तथा बीमार व्यक्तियों को उनके निवास स्थान पर चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करना हैं। इसके अतिरिक्त ग्रामीण व्यक्तियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर, प्राकृतिक संसाधन, रहन-सहन तथा ग्राम-वासियों को उपलब्ध चिकित्सा सम्बन्धी सूचनाओं का भी संकलन करना सम्मिलित है। इस वर्ष में 40 ग्रामों का सर्वेक्षण किया गया जिनकी कुल जनसंख्या 62914 थी तथा इनमें से 14,122 व्यक्तियों को आकस्मिक चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की गई। अनुलग्नक - 1.

2. सामुदायिक स्वास्थ्य-रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य चयन किए गए ग्रामों में लोगों को चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करना तथा ग्रामीण जनता को सामूहिक विचार-विमर्श के माध्यम से स्वास्थ्य संरक्षण एवं रोग निवारक उपायों के विषय में शिक्षा प्रदान करना है। इसमें ग्रामीण लोगों को सामान्य रोगों की चिकित्सा में स्थानीय रूप से उपलब्ध औषध पादप सम्पदा के विषय में आवश्यक जानकारी देना तथा उनके प्रयोग को बताना भी सम्मिलित है जिससे कि अनेक सामान्य व्याधियों की स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों से चिकित्सा की जा सके। चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करते समय विहित प्रपत्र में अस्वस्थ व्यक्तियों से सम्बन्धित विस्तृत सूचना का भी संकलन किया जाता है। इस वर्ष में 30,206 जनसंख्या के 30 ग्रामों का अध्ययन किया गया तथा 11,776 व्यक्तियों को चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की गई। इनका विस्तृत विवरण अनुबंध-2 में दिया गया है। इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन के समय अनेक विद्यालयों के बाल-विद्यार्थियों को भी उनके स्वास्थ्य की जाँच कर चिकित्सा सुविधाएं प्रदान कर लाभान्वित किया गया ।

3. आदिवासी स्वास्थ्य-रक्षा कार्यक्रम

इस कार्यक्रम को आदिवासियों के रहन-सहन की स्थिति का अवलोकन करने , उनके द्वारा अपनाई गई जनश्रुति औषधियों व क्षेत्र विशेष में उपलब्ध औषध पादपों की जानकारी प्राप्त करने, उन्हें स्वस्थ जीवन-यापन, रोग-निवारण तथा स्थानीय रूप से उपलब्ध सामान्य औषध पादपों के प्रयोग के विषय में शिक्षा प्रदान करने तथा आदिवासियों को उनके निवास स्थान पर चिकित्सा सुविधाएं देने के उद्देश्य से क्रियान्वित किया गया है। यह कार्यक्रम कार-निकोबार (अण्डमान निकोबार द्वीप समूह), रंका ब्लाक, पलामू जनपद (बिहार) चिंचपाड़ा, धुले जनपद (महाराष्ट्र) रामा ब्लॉक, झबुआ जनपद (मध्य प्रदेश) एवं जीरो (अरुणाचल प्रदेश) में कार्यरत आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा-अनुसंधान परियोजनाओ के माध्यम से किया जा रहा है । इस वर्ष 43 आदिवासी क्षेत्रों/गांवों का सर्वेक्षण किया गया जिनकी कुल जनसंख्या 47467 व्यक्ति थी और 26467 व्यक्तियों को आकस्मिक चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की गई। अनुबन्ध-3 में इसका विवरणात्मक उल्लेख किया गया है।

इसके अतिरिक्त इस प्रतिवेदित वर्ष में दो अन्य आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजनाओ की स्थापना की गई जो जगदलपुर (म. प्र.) तथा इम्फाल (मणीपुर) में स्थित हैं।

वर्ष 1988-89 में सेवापरक सर्वेक्षण एवं संनिरीक्षण अनुसंधान कार्यक्रम के अन्तर्गत किए गए कार्यों की तालिका

क्र. सं.	संस्थान/केन्द्र/एकक का नाम	सर्वेक्षित ग्रामों के नाम	सर्वेक्षित ग्रामों की चिकित्सत रोगी सं.		सामान्य रोग
1	2	3	4	5	6
1.	क्षे. अनु. के., बंगलौर	दास्सैगोडेना, पलाय हिमेगपुरा	865	1673	अतिसार, कास, ज्वर, कृमि, कर्णरोग, व्रण, पाण्डु, त्वक्रोग, उदरशूल, नेत्ररोग, कुष्ठ, बालाशोष.
2.	क्षे. अनु. सं., जयपुर	रामसरपालबाला हिंगोनियाँ, मीणावाला, बीर हथोड़	2794	724	रक्तविकार, प्रदर, उदरशूल, वण, कास, ज्वर, प्रतिश्याय, शिरःशूल, कर्णरोग, संधिशूल, अभिष्यंद।
3.	क्षे. अनु. सं., कलकत्ता	कंतातल्ला, तारडाह	3345	2074	अतिसार, अम्लपित्त , कृमि, कास, कंडू, प्रदर, पाण्डु, प्रमेह, रजोदोष त्वक्रोग, वातव्याधि।
4.	क्षे. अनु. सं., भुवनेश्वर	पाटिया, नाइगुड़ा, कुरकुकी	4000	1217	अतिसार, ज्वर, कास, कृमि, कण्डू, प्रतिश्याय, संधिशूल, त्वक्रोग, व्रण, मुखरोग।
5.	क्षे. अनु. के. , झांसी	डिगारा	1000	63	ज्वर, कास, कर्णरोग, प्रतिश्याय, प्रवाहिका, श्वास, त्वक्रोग।
6.	क्षे. अनु. के. , विजयवाडा	रायनपाडु, जाक्कमपुड़ी	4000	393	अतिसार, ज्वर, कास, कर्णरोग, कटिशूल, रक्तविकार, श्वास, श्लीपद, त्वक्रोग, उरःशूल, उदरशूल, वातव्याधि, दौर्बल्य ।
7.	क्षे. अनु. के. , जम्मू	घाट्टाह, मझिन, चाक चन्नू	1030	186	अम्लपित्त, ज्वर, कास, प्रतिश्याय, प्रदर, संधिवात
8.	क्षे. अनु. के. , मण्डी	नागचला, गाटी, लुनापानी, वहली	158	173	अम्लपित्त, ज्वर, कास, कृमि, प्रतिश्याय, रक्तचापाधिक्य, श्वास, त्वक्रोग.

1	2	3	4	5	6
9.	क्षे. अनु. के. , नागपुर	खपरखेडा	7450	641	अतिसार, कास, कटिशूल, प्रतिश्याय, पाण्डु, श्वास, संधिशूल, त्वक्‌रोग, विषमज्वर, वातव्याधि।
10.	क्षे. अनु. के. , पटना	चाक धरमपुर	1857	860	अतिसार, त्वक्‌रोग, कास, कटिशूल, मुखरोग, प्रतिश्याय, प्रवाहिका, व्रण
11.	क्षे. अनु. के. , हस्तिनापुर	दरयापुर, निदावली	2500	489	अतिसार, ज्वर, कास, मुखरोग, कण्डु, प्रतिश्याय, उदरशूल, वातव्याधि
12.	क्षे. अनु. के. , गुआहाटी	गरल, अथिअबोरी	3000	385	अतिसार, अम्लपित्त, आमवात, ज्वर, कास, प्रतिश्याय, प्रवाहिका, श्वास
13.	च. नि. चि. अनु. ए. , वाराणसी	लालपुर, परमनपुर, सुधवालपुर, कुरौली, नदीपुर	5600	310	कास, प्रवाहिका, यकृत शोथ, प्रतिश्याय, कृमि, स्त्रीरोग, संधिशोथ
14.	भा. पं. सं. , चेरूतुरूति	थोनुक्कारा	5901	1933	कास, कृमि, कटिशूल, श्वास. शिर:शूल, संधिशूल, त्वक्‌रोग, उदरशूल, उर:शूल , वात-व्याधि
15.	क्षे. अनु. के. ,गंगटोक	नामोंग, मर्तम, सावने, साखु, मामजे	1681	368	अतिसार, ज्वर, कास, कण्डू, कृमि, प्रतिश्याय, उदरशूल, व्रण
16.	के. अनु. सं. , दिल्ली	कमरूद्दीन नगर, सुंदर नगरी	2773	1248	अतिसार, ग्रहणी, ज्वर, कास, कर्णशूल, प्रतिश्याय, प्रदर, नेत्र रोग, त्वक्‌रोग, व्रण
17.	च. नि. चि. अनु. ए. , जामनगर	थेबा, मोर खंडा, खिमाल्या	4960	1385	अतिसार, ज्वर, कास, कर्णरोग, प्रतिश्याय, हृत्‌शूल, शिर:शूल, व्रण
	योग	40	52,914	14,122	

वर्ष1988-89में सामुदायिक स्वास्थ्य-रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम के अन्तर्गत किए गए कार्यों की तालिका

क्र. सं.	संस्थान/केन्द्र/एकक का नाम	सर्वेक्षित ग्रामों का नाम	सर्वेक्षित ग्रामों की जनसं ख्या	चिकित्सित रोगी सं.	सामान्य रोग
1	2	3	4	5	6
1.	क्षे. अनु. सं. , जयपुर	मचावा	2300	688	व्रण, त्वक्रोग, उदरशूल, कटिशूल, स्त्रीरोग, शिर:शूल, नेत्र रोग, कर्णरोग
2.	क्षे. अनु. सं. , जूनागढ	झाझरदा, उमाटवाड़ा नन्दरखी चौबारी	4900	1080	अतिसार, ज्वर, कास, प्रतिश्याय, त्वक् रोग, उदरशूल, व्रण, वातव्याधि, कर्णरोग, नेत्ररोग
3.	क्षे. अनु. सं. , भुवनेश्वर	गोपालपुर, घटिकिआ, सामपुर	3851	161	दर्शाया नहीं गया।
4.	क्षे. अनु. के. , जम्मू	डब सुदान, डब डिट्टा	1383	510	अतिसार, अम्लपित्त, ज्वर, कास, कृमि, प्रतिश्याय, प्रवाहिका
5.	क्षे. अनु. के. , झांसी	साफा	1000	89	ज्वर, नेत्ररोग, अतिसार, कास, प्रवाहिका, मुखपाक नेत्र अभिष्यन्द
6.	क्षे. अनु. के. , मंडी	मोवीसेरि, हगवान, गली, सागलि, तारोर, ग्रोंटी, वथरा, व्रद्ध आश्रम	744	237	अम्लपित्त, ज्वर, कास, कृमि, नेत्ररोग, प्रतिश्याय श्वास, यकृत्विकार
7.	क्षे. अनु. के. , ईटानगर	पाचिन गांव, मिदपु गाँव	1400	1088	अतिसार, कास, ज्वर, कृमि, नेत्ररोग, पामा
8.	क्षे. अनु. के. , नागपुर	धमना	2000	716	अतिसार, कास, कटिशूल, प्रतिश्याय, पाण्डु, रक्तविकार, संधिशूल, व्रण, वातव्याधि

9.	क्षे. अनु. के. , हस्तिनापुर	पलरा, मोरेकाला	4500	1267	ज्वर, कास, मुखरोग, प्रतिश्याय, उदरशूल, कोष्ठबद्धता, अतिसार, वातव्याधि
10.	क्षे. अनु. के. , गुवाहाटी	नारागाँव	1000	190	अतिसार, आमवात, ज्वर, कास, कृमि, प्रतिश्याय, प्रवाहिका एवं त्वक्‌रोग.
11.	भा. पं. सं. , चेरूतुरूति	कांजीराकोडे, थय्यर	7128	5176	ज्वर, कास, कृमि, कण्डू, कटिशूल, मुखरोग, शिर:शूल, संधिशूल, त्वक्‌रोग, उदरशूल, वातव्याधि
12.	क्षे. अनु. के. , गंगटोक	खानि, मैलिदारा, माघीयाड़		574	अतिसार, ज्वर, कास, कण्डू, प्रतिश्याय, शिर:शूल, उदरशूल, वातव्याधि, व्रण
	योग	30	30206	11776	

वर्ष 1988-89में आदिवासी स्वास्थ्य-रक्षा अनुसंधान कार्यक्रम के अन्तर्गत किए गए कार्यों की तालिका

क्र. सं.	आदिवासी परियोजना का नाम	सर्वेक्षित आदिवासी क्षेत्र का नाम	सर्वेक्षित आदिवासी क्षेत्रों की जनसंख्या	चिकित्सित रोगी सं.	सामान्य रोग
1	2	3	4	5	6
1.	आ. स्वा. र. अनु. प., रंका ब्लाक, पलामू	दल्ल, राजबास, चातैलिया, रानीचारी, चीनीया, चिरका बिलैतीखाड, चपकाती, खुडी, नागशिली, हसखाडी, रणपुरे, मेसरा, बेसरी, तुड़ीमुण्ड बेट्टा, पालेह, सीदे, पुरीगढ, सलवाही	23,333	17903	अतिसार, ज्वर, कास, कृमि, कर्णरोग, कटिशूल, मुखरोग, पाण्डु, श्वास एवं त्वक्रोग
2.	आ. स्वा. र. अनु. प., जीरो	जीरो, पुराना जीरो, होंग, दट्टा, हारी, हिज़ा, रेरू कलोंग, लाम्पिया, तजाग, जोरम, सीरो, याचूली, याजाली, दीद, तालम	11,365	2110	अतिसार, अम्लपित्त, ज्वर, कास, कण्डू, कोष्ठबद्धता, प्रतिश्याय, रजोदोष, त्वक्रोग, उदरशूल, विचर्चिका, प्रदर, वातव्याधि
3.	आ. स्वा. र. अनु. प., चिंचपाडा	खनूव, अमलोन, भादवद, बोरपदा, भद्दू, वदादा, बघखुट	12,769	4869	ज्वर, कास, पाण्डु, श्वास, त्वक्रोग, वातव्याधि, उदरशूल
4.	आ. स्वा. र. अनु. प., कारनिकोबार	रोगियों को केवल बहिरंग रोगी वि. में देखा गया		1585	अतिसार, अम्लपित्त, आमवात, ज्वर, कास, उदरशूल, कण्डू, कृमि, कटिशूल, प्रतिश्याय, रक्तचाप, श्वास एवं विषमज्वर
	योग	43	47,467	26,467	

औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण

परिषद के अन्तर्गत जैव-चिकित्सीय अनुसंधान कार्यक्रम में औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्यक्रम का एक प्रमुख स्थान है। सर्वेक्षण एककों के मुख्य कार्यों में वनों से प्राप्त औषध द्रव्यों की खोज हेतु वनों का सर्वेक्षण करना जिससे कि क्षेत्र विशेष की औषधियों की पहचान, उपलब्धता एवं उनमें मिलावट/प्रतिनिधि द्रव्यों से सम्बन्धित सूचना प्राप्त करना तथा संग्रहालयों में उद्भिदालयों की स्थापना करना है। सर्वेक्षण दल देश में पायी जाने वाली औषधियों का गुणात्मक एवं मात्रात्मक मूल्यांकन भी करते है। वे विशेषकर देश के आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की आदतें/रीतिरिवाजों/सामाजिक स्तर इत्यादि के बारे में प्रजातीय औषध-वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्य करने के साथ-साथ सूचनाएं भी एकत्र करते हैं।

परिषद के 17 औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण एकक देश के 16 राज्यों में फैले हुए हैं जो कि बंगलोर, भुवनेश्वर, कलकत्ता, गंगटोक गुआहाटी, ग्वालियर, ईटानगर, जयपुर, जम्मू, झांसी, जूनागढ़, मण्डी, नागपुर, पटना, ताड़ीखेत, त्रिवेन्द्रम तथा विजयवाड़ा में स्थित हैं। वर्ष 1988-89 में इन एककों द्वारा किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है -

आंध्र प्रदेश — क्षे. अनु. के. वि.

यह केन्द्र विजयवाड़ा में स्थित है जिसके द्वारा औषध वानस्पतिक स्त्रोतों को चार वनों जिनका नाम नालगण्डा, निजामाबाद, महबूब नगर, तथा रंगारेडी है उनमें से 1364 पादपों के नमूने संगृहीत किए गए । जो 68 कुलों, 116 वंशों एवं 135 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुल मिलाकर 326 औषध नमूनों का विषायण किया गया। 65 जातियों की पहिचान की गई तथा 55 औषध नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि की गई। सर्वेक्षण इकाई द्वारा लगभग 333 जनश्रुत औषधदावे भी एकत्र किये तथा लगभग 163 सूचीपत्रक तैयार किये । 163 किलोग्राम अपरिष्कृत औषध सामग्री जिसमें आठ औषध प्रजातियाँ सम्मिलित है, को एकत्र कर अनुसंधान कार्य हेतु आपूर्ति की गई ।35 पादपों के जर्म प्लाज्म को विभिन्न अनुसंधान संस्थानो में प्रतिरोपित करने हेतु भेजा गया।"गौमूत्र शिलाजीत" की रोचक खोज महबूब नगर जनपद में सर्वेक्षण द्वारा की गई ।

अरुणाचल प्रदेश — क्षे. अनु. के. ई.

यह सर्वेक्षण एकक ईटानगर में स्थित है जिसके द्वारा जीरो तथा दीबांग इन दो वन प्रभागों का सर्वेक्षण किया गया जिसके अन्तर्गत बहुत से वन क्षेत्र स्थित है । इस सर्वेक्षण अवधि में 269 औषध पादपों को एकत्र किया गया जो 65 कुलों 115 वंशों एवं 220 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुल मिलाकर 350 पादप नमूनों की पहचान की गई जिसमें से 307 पादप नमूनों को संग्रहालय के लिए आसज्जित किया गया । 20 औषध पादप नमूनों तथा 19 भेषज नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि की गई । कुल मिलाकर 16 औषध पादपों के नमूनों की 70 कि. ग्रा. मात्रा एकत्र की गई जिनमें से 13 औषध पादपों की 61 कि. ग्रा. की मात्रा अनुसंधान कार्य हेतु आपूर्ति की गई । 25 जनश्रुत औषध दावे भी एकत्रित किए गए ।

आसाम — क्षे. अनु. के. गो.

यह एकक गोहाटी में स्थित है जिसके द्वारा स्थानीय सर्वेक्षण मे औषध नमूनों को एकत्र किया गया । सर्वेक्षण अवधि में इस एकक द्वारा 8 औषध पादप नमूनों की 17 कि. ग्रा. कच्ची औषधियों को एकत्रित किया गया जो आयुर्वेद की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं ।

बिहार — क्षे. अनु. सं. प.

पटना में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा औषध पादप उत्पाद्यों को चतरा के दक्षिणी बनखण्ड एवं जनपद नवादा के अन्तर्गत आने वाले तीन वन खण्डों के 27 वन क्षेत्रों का सर्वेक्षण कार्य किया तथा सुखोबेरा क्षेत्र से कच्ची ओषधियों का संग्रहण भी किया गया । इस सर्वेक्षण अवधि में एकक द्वारा 350 पादप नमूनों को एकत्रित किया गया जिसमें से 119 को फील्डबुकों में अंकित किया है । कुल मिलाकर 330 औषध पादप नमूनों की पहचान की गई । 922 पादप नमूनों का प्राप्ति क्रमांकन किया गया । जिनमें से 348 को आसज्जित किया गया तथा 400 नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि की गई । कुल मिलाकर 7 जनश्रुत दावे, संग्रहालय के लिए 12 औषध नमूने तथा 155 किलो. ग्रा. कच्ची औषधियां एकत्रित की गई जिनमें से 40 किलोग्राम अनुसंधान कार्य हेतु आपूर्ति की गई ।

गुजरात

जूनागढ़ में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा अमरेल्ली जनपद के अन्तर्गत धारी, सरासिया, डलखानिया क्षेत्र तथा भावनगर बन प्रभाग के पल्लीपाना तथा खम्बा क्षेत्र एवं जूनागढ़ के आसपास के क्षेत्रों में अनेक बार स्थानीय सर्वेक्षण किया गया तथा कच्ची औषधियों की सामग्री को एकत्रित किया गया । सर्वेक्षण कार्य की अवधि में इस एकक ने विभिन्न औषध नमूनों की 120 फील्ड बुक संख्या जो लगभग 46 कुलों 90 वंशों एवं 116 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं को एकत्रित किया । बहुत कम पाये जाने वाले तीन पादप नमूनों को इस सर्वेक्षण अवधि में एकत्रित किया गया । कुल मिलाकर 50 पादप नमूनों की पहचान की गई । लगभग 500 नमूनों को आसज्जित किया गया तथा 68 जाति के 299 पादप नमूनों की उद्भिदालय के लिए अभिवृद्धि की गई । 102 पादप जातियों के 506 हर्बेरियम शीट भी तैयार की गई । 23 अपरिष्कृत औषध नमूनों की संग्रहालय में वृद्धि की गई । कुल मिलाकर 23 औषध पादप जातियों की 145 कि. ग्रा. अपरिष्कृत शुष्क औषध सामग्री आपूर्ति हेतु एवं 4 जनश्रुत औषध दावे भी एकत्रित किए गए ।

हिमाचल प्रदेश — क्षे. अनु. के. मं.

मण्डी में स्थित सर्वेक्षण एकक में औषध एकत्र करने हेतु 10 स्थानीय सर्वेक्षण यात्राएं की । कुल मिलाकर 38 औषध पादप जातियों का संग्रहण किया गया जो 25 कुलों एवं 36 वंशों तथा 38 जातियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। कुल मिलाकर 60 पादप नमूनों का प्राप्तिक्रमांकन किया गया तथा 24 पादप नमूनों की पहचान की गई एवं 10

औषध नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि की गई । 10 औषध नमूनों की लगभग 12 किलो कच्ची औषधियाँ अनुसंधान कार्य हेतु आपूर्ति की गई ।

जम्मू तथा कश्मीर — क्षे. अनु. के. ज.

जम्मू में स्थित सर्वेक्षण एकक में जम्मू जनपद के माझिन गाँव का सर्वेक्षण करके आयुर्वेदीय महत्व की 12 पादप जातियां एकत्र की गई जो 9 कुलों 11 वंशों तथा 12 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुल मिलाकर 297 पादप नमूनों का प्राप्तिक्रमांकन किया गया तथा 36 पादप नमूनों को उदभिदालय में आसज्जित किया गया । 2000 पादप नमूनों का विषायण किया गया तथा 6 इंडैक्स कार्ड बनाए गए । संग्रहालय में 6 औषध नमूनों की अभिवृद्धि की गई । 9 औषध पादपों की लगभग 188 किलोग्राम अपरिष्कृत सामग्री एकत्रित करके अनुसंधान हेतु आपूर्ति की गई ।

कर्नाटक

बंगलौर में स्थित सर्वेक्षण एकक ने सीमोगा जनपद के पश्चिमी घाट तथा होसनगर क्षेत्र कुण्डाडू की पहाड़ियां, कारगल, गोनारघन गिरि क्षेत्र, नागामल्ली क्षेत्र, रादाचाबरी तथा हुलीकालघाट इत्यादि का सर्वेक्षण किया गया । इस सर्वेक्षण अवधि में बड़ी मात्रा में औषध पादप नमूनों को एकत्रित किया गया जो लगभग 363 फील्डबुक संख्या में 80 कुलों 201 वंशों तथा 306 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुल मिलाकर 188 पादप नमूनों की पहचान की गई तथा 659 का प्राप्ति क्रमांकन किया गया । 628 नमूनों को संग्रहालय हेतु असज्जित किया गया तथा 659 के इंडैक्स कार्ड तैयार किये गये । 4 औषध पादप जातियों की 16 कि. ग्रा. कच्ची औषधियों को एकत्रित कर अनुसंधान कार्य हेतु आपूर्ति की गई । इस सर्वेक्षण अवधि में 4 जनश्रुत औषध दावों को भी एकत्र किया गया ।

केरल — क्षे. अनु. सं. ,त्रि.

त्रिवेन्द्रम में स्थित सर्वेक्षण एकक ने एलिप्पी जनपद, कोट्टायम बन प्रभाग, अयकाप्पानकोईल वन क्षेत्र तथा अधिकांश वन क्षेत्र का सर्वेक्षण किया । अधिक मात्रा में औषध पादप नमूनों को एकत्रित किया गया तथा 111 को फील्ड बुक में जोड़ा गया । ये औषध पादप 47 कुलों 83 वंशों तथा 97 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुल मिलाकर 500 पादप नमूनों की पहचान की गई तथा 250 का विषायण किया गया । इसके अतिरिक्त 214 पादप नमूनों को संग्रहालय में आसज्जित किया गया तथा 120 पादप नमूनो का प्राप्ति क्रमांकन किया गया । कुल मिलकर 11 औषध नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि की गई 111 का इंडैक्स कार्ड तैयार किया गया 77 औषध पादपों के लगभग 485 कि. ग्रा. कच्ची औषधियों को एकत्रित कर अनुसंधान कार्य हेतु आपूर्ति की गई । कुल मिलाकर 11 जनश्रुत दावे भी एकत्रित किए गए ।

मध्य प्रदेश — क्षे. अनु. संस्थान. ग्वा.

ग्वालियर में स्थित सर्वेक्षण एकक ने क्षेत्रीय अनसुंधान केन्द्र झांसी के सहयोग से मिर्जापुर जनपद का सर्वेक्षण किया । इस एकक द्वारा चार वन क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया जिसमें रेनूकूट, दूधी, भावनी तथा मयूरपुर क्षेत्र सम्मिलित हैं । इस सर्वेक्षण में एकक ने 156 पादप नमूनों को एकत्र किया जो 46 कुलों तथा 12 वंशों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

महाराष्ट्र — क्षे. अनु. के. ना.

नागपुर में स्थित सर्वेक्षण एकक ने पूर्वी मेलघाट वन प्रभाग के 5 क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया । कुल मिलाकर 225 पादप नमूनों को एकत्र किया जो 21 कुलों 44 वंशों तथा 48 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । लगभग 485 पादप

नमूनों को आसज्जित किया गया । 114 पादप नमूनों का प्राप्ति क्रमांकन तथा 299 पादप नमूनों का विषायण किया गया । इसके अतिरिक्त 57 पादप नमूनों की पहचान की गई । 9 औषध पादप जातियों की लगभग 14 किलोग्राम कच्ची औषधियों को एकत्रित कर आपूर्ति की गई । कुल मिलाकर 8 औषध नमूनों की आपूर्ति हेतु संग्रहण किया गया तथा 8 औषध नमूनों की संग्रहालय में वृद्धि की गई तथा 22 नमूनों का इंडैक्स कार्ड तैयार किया गया । कुल मिलाकर 26 जनश्रुत पर औषध दावे भी एकत्रित किये गये ।

उड़ीसा — के. अनु. सं. भु.

भुवनेश्वर में स्थित इस सर्वेक्षण एकक द्वारा 411 पादप नमूनों को उद्भिदालय हेतु आसज्जित किया गया तथा आयुर्वेदिक महत्व के 63 औषध पादपों को उद्यान में आरोपित किया गया ।

राजस्थान — क्षे. अनु. सं. जय.

जयपुर में स्थित सर्वेक्षण एकक ने जयपुर वन प्रभाग के अन्तर्गत औधीरामगढ़ क्षेत्र में सर्वेक्षण एवं औषध एकत्र करने का कार्य किया । इस सर्वेक्षण में संग्रहीत पादप 19 फील्डबुक संख्या के 16 कुलों 19 वंशों तथा 19 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । कुल 780 पादप नमूनों का विषायण किया गया तथा 1439 पादप नमूनों को आसज्जित करके 60 पादप नमूनों की उद्भिदालय में प्राप्तिक्रमांकन किया गया । 37 औषधियों के नमूनों को संग्रहालय में रखा गया तथा पांच इण्डेक्स कार्ड बनाए गए । 15 औषध पादप जातियों एवं 7 औषध जातियों में जर्मप्लाज्म सामग्री समेत लगभग 18 कि. ग्रा. कच्ची औषधियों को एकत्र कर अनुसंधान कार्य हेतु आपूर्ति की गई ।

उत्तर प्रदेश — सं. अनु. ए. ता.

ताड़ीखेत में स्थित सर्वेक्षण एकक ने कच्ची औषधियों को एकत्र करने के लिए थापला गांव, हल्द्वानी, लालकुआं, भुमारिया, ताडीखेत, काठगोदाम, कोसी, श्यालीधार, अल्मोरा, रानीखेत तथा चम्मा क्षेत्र का सर्वेक्षण किया । इस सर्वेक्षण अवधि में लगभग 1200 औषध नमूने 27 औषध जातियों के एकत्र किये गये तथा इस सामग्री की 178 कि. ग्रा. मात्रा अनुसंधान हेतु आपूर्ति की गई । कुल 1676 पादपों के नमूनों का प्राप्ति क्रमांकन किया गया तथा 1200 हर्बेरियम शीटों का क्रमांकन किया गया । लगभग 900 पादप नमूनों की पहचान की गई तथा 1200 पादप नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि की गई । कुल मिलाकर 96 पादप नमूनों को उदभिदालय हेतु आसज्जित किया गया ।

उत्तर प्रदेश — क्षे. अनु. के. झां.

झांसी में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान ग्वालियर के सहयोग से मिर्जापुर जनपद के चार वन प्रभागों का सर्वेक्षण किया गया जिनके नाम रेणुकूट, दूधि, भाभानी तथा मयूरपुर वन प्रभाग है जो रेणुकूट वन विभाग के अंतर्गत आता है । इस सर्वेक्षण अवधि में इस एकक ने 156 पादप नमूनों को एकत्र किया जो लगभग 46 कुलों तथा 124 वंशों का प्रतिनिधित्व करते हैं । 150 औषध जातियों के कुल 400 हर्बेरियम शीटों को आसज्जित किया गया तथा 197 पादपों का प्राप्ति क्रमांकन किया गया । 40 औषध पादपों की लगभग 60 क्विंटल कच्ची औषधियों को एकत्र किया गया तथा 110 औषध जातियों की 7 क्विंटल कच्ची औषधियों की अनुसंधान हेतु आपूर्ति की गई । 47 औषध पादपों के जर्म प्लाज्म जिनमें बीज तथा पादपों के टुकड़ों सीलिंग आदि को परिषद के विभिन्न औषध उद्यानों एवं अन्य वैज्ञानिक संस्थानों को आपूर्ति की गई तथा 20 औषध नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि की गई ।

पश्चिमी बंगाल

क्षे. अनु. सं. क.

कलकत्ता में स्थित सर्वेक्षण एकक द्वारा अजुध्या तथा पुरुलिया के वन प्रभाग का सर्वेक्षण करके कच्ची औषधियों को एकत्र किया गया जिसमें से 400 औषध पादपों के नमूनों का संकलन किया गया जो 200 फील्ड बुक के संख्या तथा लगभग 60 कुलों 125 वंशों एवं 200 जातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । इस एकक द्वारा 21 स्थानीय सर्वेक्षण करके कच्ची औषधियों को एकत्रित किया ।

500 पादपों के नमूनों का विषायण करके उद्‌भिदालय में रखा गया तथा 175 पादपों की पहचान की गई तथा 200 पादपों की सूची तैयार की गई । लगभग 236 कि. ग्रा. कच्ची औषधियों को एकत्र कर अनुसंधान कार्य हेतु आपूर्ति की गई । पुरूलिया वन प्रभाग के सर्वेक्षण में जनश्रुत पर आधारित कुल 26 स्थानीय औषध दावे भी एकत्र किए गए ।

वर्ष 1988-89 की अवधि में किए गए औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण कार्य का सारांश

क्र. सं.	एकक	कुल सर्वेक्षित वन क्षेत्र	कुल औषध पादप नमूनों की उद्भिदालय में अभिवृद्धि	कुल औषध पादप नमूनों की संग्रहालय में अभिवृद्धि	कुल पहचान किए गए पादप	कुल औषध पादप संपुष्टि हेतु शेष	औषध आपूर्ति कि. ग्रा. मे	कुल जनश्रुति औषध दावे
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	आन्ध्र प्रदेश (विजयवाडा)	4	326	55	65	—	163 कि. ग्रा. (8पादप जातियों से)	333
2.	अरुणाचल प्रदेश (ईटानगर)	2	20	19	350	—	61 कि. ग्रा. (13 पादप जातियों से)	25
3.	आसाम (गुआहाटी)	—	—	—	—	—	17 (8 पादप जातियों से)	—
4.	बिहार (पटना)	3	922	12	330	—	40	7
5.	गुजरात (जूनागढ़)	2	506	23	50	—	145 (23 पादप जातियों से)	4
6.	हिमाचल प्रदेश (मण्डी)	—	60	10	24	—	12 (10 पादप जातियों से)	—
7.	जम्मू एवं कश्मीर (जम्मू)	—	297	6	—	—	188 (9 पादप जातियों से)	—
8.	कर्नाटक (बंगलौर)	7	659	—	188	—	16 (4 पादप जातियों से)	—
9.	केरल (त्रिवेन्द्रम)	3	120	11	500	—	485 (77 पादप जातियों से)	11

1	2	3	4	5	6	7	8	9
10.	मध्य प्रदेश (ग्वालियर)	4	—	—	—	—	—	—
11.	महाराष्ट्र (नागपुर)	5	114	8	57	—	14 (9 पादप जातियों से)	26
12.	उड़ीसा (भुवनेश्वर)	—	—	—	—	—	—	—
13.	राजस्थान (जयपुर)	1	60	37	—	—	18 (15 पादप जातियों से)	—
14.	सिक्किम (गंगटोक)	—	—	—	—	—	—	—
15.	उत्तर प्रदेश (झांसी)	4	197	—	—	—	700 (110 पादप जातियों से)	—
16.	उत्तर प्रदेश (ताड़ीखेत)	—	1676	1200	9000	—	178 (27 पादप जातियों से)	—
17.	पश्चिम बंगाल (कलकत्ता)	2	—	—	175	—	236	26
	योग	37	4957	1401	10739	—	2273	432

औषध पादप कृषि कार्यक्रम

परिषद के अन्तर्गत चार औषध पादप उद्यान जो कि झांसी (उ. प्र.)मंगलियावास (राजस्थान) पुणे (महाराष्ट्र) एवं रानीखेत (उ. प्र.)में स्थित हैं । जिनमें प्रायोगिकस्तर पर तथा बड़े पैमाने पर आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति के औषध पादपों का कृषि कार्यक्रम चलाया जा रहा है । इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य औषध पादपों की अनुकूलन शीलता, वृद्धि, पुष्प एवं फल निर्माण का अध्ययन तथा समुद्र तल की विभिन्न ऊँचाइयों पर पादपों को उगाने से प्राप्त मात्रा का मूल्यांकन करके अनुसंधान कार्य एवं औषध निर्माण हेतु शुद्ध कच्ची औषधियां प्रचुरमात्रा में उपलब्ध कराना है । इन उद्यानों में लगभग 450 महत्वपूर्ण औषध पादप जातियों की कृषि की जा रही है जिसमें उष्णकटिबंधीय, अर्द्ध उष्णकटिबंधीय तथा सामान्य क्षेत्रों के अतिरिक्त विदेशी जातियों की कृषि सम्मिलित है । ये उद्यान औषध पादप जातियों को सफलता पूर्वक उगाने हेतु उपयुक्त कृषि तकनीकियों का प्रयोग, दुर्लभ तथा लुप्त पादप जातियों को उगाने का भी कार्य करते हैं ।

मंगलियावास में गुग्गुलु की प्रयोगात्मक कृषि करने की पर्याप्त जानकारी, आधार ज्ञात होने पर गुग्गुलु औषध पादप की बड़े पैमाने पर कृषि, संग्रहण करने का प्रयास किया जा सकता है जो अब दुर्लभ हो रहा है । ताड़ीखेत में केसर की सफलतापूर्वक कृषि करना अपने आप में उल्लेखनीय उपलब्धि है क्योंकि यह इस क्षेत्र का पौधा नहीं है।

प्रयोगात्मक कृषि कार्यक्रम के सफल परिणामों को ध्यान में रखते हुए इन औषध पादप उद्यानों में आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति के कुछ प्रमुख एवं महत्वपूर्ण औषध पादपों की कृषि बड़े पैमाने पर प्रारंभ की गई है । बड़े पैमाने पर कृषि करने का कार्य अभी कुछ ही एकड़ भूमि में किया जा रहा है और नितान्त उपयोगी आवश्यक औषध पादप की कृषि, भूमि सुधार करके बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं जिससे कि मांग के आधार पर इनकी आपूर्ति की जा सके ।

औषध पादप कृषि कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न औषध पादप उद्यानों द्वारा किए गए कार्यों का विवरण निम्नानुसार है -

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, झांसी

इस औषध पादप उद्यान में प्रयोगात्मक कृषि 15 एकड़ भूमि में की जा रही है जब कि केन्द्र के पास 45 एकड़ भूमि है । इस भूभाग में आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति के महत्वपूर्ण औषध पादपों की कृषि प्रायोगिक एवं बड़े स्तर पर की जा रही है । इसके अतिरिक्त प्रदर्शन हेतु बहुत से औषध पादपों का रख-रखाव किया जा रहा है। वर्तमान में लगभग 225 औषध पादप जातियों की कृषि इस उद्यान में की जा रही है । इसके साथ ही इस उद्यान में 47 ऐसे औषध पादपों की कृषि की जा रही है जिसका विवरण आयुर्वेद भेषज संहिता में किया गया है ।

जिन महत्वपूर्ण औषध पादपों की कृषि प्रायोगिक तथा बड़े स्तर पर की जा रही है उनमें शतावरी, वचा, कालमेघ, यष्टिमधु, लताकस्तूरी, रास्ना, बाकुची, पृश्निपर्णी इत्यादि मुख्य हैं । प्रदर्शन क्यारियों में लगभग 75 औषध पादपों को भी उगाया जा रहा है, जिनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण जातियों में अतिषला, गुंजा, उलटकम्बल, वासा, अपामार्ग, दन्ती, पुनर्नवा, केमुक, मंडूकपर्णी, शंखपुष्पी, शालपर्णी, अनन्तमूल, द्रोणपुष्पी, निर्गुण्डी, अश्वगंधा, तुलसी, त्रिवृत्, पिप्पली, चित्रक, अजमोदा, इत्यादि सम्मिलिति हैं ।

इस केन्द्र द्वारा कुछ महत्वपूर्ण औषध पादपों की प्रायोगिक खेती की जा रही है जो भौगोलिक दृष्टि से झांसी से भिन्न जलवायु की है । उनकी अनुकूलनशीलता का अध्ययन प्राकृतिक दृष्टि से किया जा रहा है - जैसे मंडूकपर्णी, यष्टिमधु, रारना, पाषाणभेद, बनफशा, अजमोदा इत्यादि ।

लगभग 200 औषध जातियों के महत्वपूर्ण पौधों को पौलीथिन के थैले एवं सीमेंट के गमलों में उगाया जा रहा है और इसमें अनुकूलनशीलता एवं वृद्धि संबंधी अध्ययन किया जा रहा है । इनमें से कुछ औषधियों को गमलों में भी उगा कर इसकी वृद्धि इत्यादि को देखा जा रहा है । यह बिल्कुल आश्चर्य की बात है कि पाषाणभेद, चोपचीनी, बनफशा, दारुहरिद्रा, तेजबल, खुरासानी अजवायन इत्यादि ऊंची पहाड़ियों पर उत्पन्न होने वाली जातियां अच्छी तरह से इन गमलों में बढ़ रही हैं । प्रायोगिक स्तर पर की जा रही कृषि में से बीजों/कल्मों से 80 औषध पादपों को प्रायोगिक रूप से उगाया गया है और इनकी बड़े पैमाने पर कृषि की जा सकती है ।

कृषि क्षेत्र की चारदीवारी पर कुछ ऐसे पादपों की भी कृषि की गई जिनसे जानवरों तथा बाहरी व्यक्तियों से रक्षा की जा सके ।

इस प्रतिवेदन वर्ष में इस उद्यान द्वारा लगभग 49 औषध पादपों के विभिन्न प्रयोज्य अंगों के 362 कि. ग्रा. का संग्रह किया गया और विभिन्न औषधियों को लगभग 289 कि. ग्रा., 36 औषध पादपों का केन्द्रीय औषध भण्डार को भेजा गया । 14 औषध पादपों की लगभग 52.5 कि. ग्रा. औषध मात्रा को अपने ही केन्द्र के बहिरंग विभाग हेतु दिया गया तथा 262 कि. ग्रा. औषधियों की अनुसंधान कार्य हेतु विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों/एककों को आपूर्ति की गई ।

गुग्गुलु औषध पादप उद्यान, मंगलियावास

इस उद्यान का मुख्य कार्य गुग्गुलु का संरक्षण तथा बड़े पैमाने पर खेती का प्रसार करना एवं विभिन्न प्रयोगात्मक अवस्थाओं में उसकी वृद्धि का अवलोकन करना है ।

इस प्रतिवेदित वर्ष में "राष्ट्रीय पर्यावरण सुधार" कार्यक्रम के अंतर्गत जुलाई, 1988 तक इस उद्यान में लगभग 3000 गुग्गुलु पादपों का रोपण किया गया । वर्तमान में इस उद्यान में लगभग 15,356 गुग्गुलु पादपों की 40 एकड़ भूमि में विभिन्न स्थानों पर कृषि हो रही है । इसके अतिरिक्त 4044 गुग्गुलु पादपों की क्यारियों में प्रायोगिक कृषि कार्यक्रम के अंतर्गत कृषि की गई । शेष क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न गुग्गुलु पादपों एवं 50 महत्वपूर्ण अन्य औषध पादप जातियां स्वयमेव उपजी हैं । महत्वपूर्ण औषध पादपों में कुवेराक्ष, कुमारी, शतावरी, लांगली, गोक्षुर, दाड़िम, शिरीष शाल्मली, गुंजा, गुडूची, वनपलाण्डू, पुनर्नवा इत्यादि हैं ।

जून-जुलाई, 1988 में कुल 4044 पादपों की कलम एवं 300 गुग्गुलु पादपों के प्रायोगिक अध्ययन करके इनकी विभिन्न अवस्थाओं में वृद्धि इत्यादि का अध्ययन किया गया । इन महीनों में कुल 29 अन्य पादपों की भी जानकारी प्राप्त की गई जिनमें कुंदरु, कुमारी, शिरीष, निम्ब, तुलसी, करंज इत्यादि हैं ।

कुछ प्रायोगिक अध्ययनों में कतिपय महत्वपूर्ण एवं रुचिकर बातें देखी गई । कलम द्वारा उत्पादित गुग्गुलु पादप, गुग्गुलु के बीज से उत्पन्न पादप से तीव्र गति से बढ़ता हुआ देखा गया । गुग्गुलु बीज से पादप उपज बहुत कम देखी गई । यह देखा गया कि जून के महीने में गुग्गुलु पादप कलम लगाने में उत्तम है और जुलाई-अगस्त में पादप प्रतिरोपण के लिए उत्तम है । कटसरैया, शतावरी तथा एरण्ड के बीज से उत्पन्न पौधों में संतोषजनक वृद्धि देखी गई । यूफोर्बिया एण्टीसिफैलिटका, बरसेरा हिन्डरसित्रा एवं टाइलोफोरा अस्थमेटिका जाति के पौधों की वृद्धि संतोषप्रद पाई गई । लगभग 20 कि. ग्रा. गुग्गुलु सहित अन्य औषध पादपों की मात्रा परिषद के विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों में अनुसंधान कार्य हेतु आपूर्ति की गई । 19 कि. ग्रा. गुग्गुलु को उद्यान से एकत्र किया गया तथा 13 औषध पादपों की लगभग 141 कि. ग्रा. कच्ची औषधियाँ इस समय भण्डार में हैं ।

जवाहरलाल नेहरू आयुर्वेदीय औषध पादप उद्यान एवं संग्रहालय,पुणे

इस उद्यान के पास 19 एकड़ भूभाग है जिसमें 10 एकड़ भूमि में औषध पादपों की कृषि की जा रही है । उद्यान में लगभग 400 जातियों के औषध पादप आर्थिक एवं सजावटी महत्व के पौधों की कृषि की जा रही है। इसमें 131 वे औषध पादप सम्मिलित हैं जिनको विभिन्न आकार की क्यारियों में बड़े पैमाने पर उद्यान में प्रायोगिक कृषि प्रदर्शन हेतु रख-रखाव किया जा रहा है । लगभग 297 पादप जातियों की एकवर्षीय, द्विवर्षीय तथा बहुवर्षीय औषध पादपों की कृषि इस उद्यान में विभिन्न स्थानों पर की जा रही है । आयुर्वेद भेषज संहिता भाग-1 में सम्मिलित लगभग 152 औषध पादपों की कृषि की जा रही है ।

कुछ महत्वपूर्ण औषध पादप जातियों की कृषि प्रदर्शित किए जाने हेतु की जा रही है जिसमें गुडूची, सारिवा, गुंजा, शतावरी, वचा, यष्टिमधु, ईश्वरी, कदली, मण्डूकपर्णी, दन्ती, शालपर्णी, निर्गुण्डी, चित्रक, कुटज, ब्राह्मी, अतिबला, अपामार्ग; काकमाची, लज्जालु, लांगली, जपा, त्रिवृत्, अश्वगंधा इत्यादि हैं। जिन औषध पादपों की बड़े पैमाने पर खेती की गई है उसमें वनपलाण्डु, टाइलोफोरा इण्डिका, उशीर, कुमारी, इत्यादि को प्रचुर मात्रा में परिषद के विभिन्न बहिरंग रोगी विभागों/औषध निर्माणशालाओं की आवश्यकता पूर्ति हेतु लिया गया है। इस प्रतिवेदित वर्ष में कुल 12 औषध पादप जातियों की इस उद्यान में कृषि वृद्धि की गई जिसमें शिरीष, सप्तपर्णी, काजूतक, लकुच, पुन्नाग, धस्तूर इत्यादि हैं।

आयुर्वेदिक महत्व के कुछ औषध पादपों की प्रायोगिक स्तर पर कृषि, इन पादपों की वृद्धि, रसायन संघटक तथा औषध पादप रुग्णता का अध्ययन करने हेतु किया गया । जिन पादपों पर अध्ययन किया गया उनमें वचा, मण्डूकपर्णी, ब्राह्मी, निर्गुण्डी, वासा तथा धातकी इत्यादि हैं। इस अध्ययन में कुछ महत्वपूर्ण तथा रोचक खोज सामने आई। कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियों में यह देखा गया कि शतावरी की जड़ों मे वृद्धि एक एकड़ में चार-पांच टन खाद देने पर इसकी जड़ों में 80% वृद्धि पाई गई। वचा तथा निर्गुण्डी के कलम का रोपण करने पर 40-42% वृद्धि पाई गई। आवर्तनी की कृषि में 90% वृद्धि वायू सतह स्तर पर देखी गई। वचा, मण्डूकपर्णी तथा ब्राह्मी में बीज द्रव्य वृद्धि देखी गई।

इस उद्यान में औषध पादपों पर प्रभावी बीमारियों का भी अध्ययन किया गया। यह देखा गया कि बाकुची वचा, कोकिलाक्ष, पारिजात, सारिवा, दुग्धिका तथा चन्दन इत्यादि पर भी चूर्ण एकत्रित हुआ देखा गया । कीटाणु औपसर्गिक बचाव के लिए रोगोर तथा एल. एच. सी. का लेप किया गया, जिससे अंशकालिक प्रभाव देखा गया ।

कच्ची औषधियों के संग्रह, भण्डारण तथा, संरक्षण पर भी अध्ययन किए गए। शतावरी तथा जपा के संबंध में देखा गया कि इनके रख-रखाव के लिए इनको पूर्ण रूप से सुखाकर वायु रहित डिब्बे (विशेष वर्षा ऋतु) में रखना चाहिए । जपा पुष्प का वर्षा ऋतु तथा आर्द्रतायुक्त स्थान में संग्रह नहीं करना चाहिए।

परिषद के विभिन्न परियोजनाओं की आवश्यकता की भी इस उद्यान द्वारा औषध आपूर्ति की जाती है। इस प्रतिवेदित वर्ष में इस उद्यान द्वारा 150 कि. ग्रा. कच्ची औषधियां दो दर्जन औषध पादप जातियों से एकत्र की गई। इन महत्वपूर्ण औषधियों में उशीर, आमलकी, जपा, जम्बू, शतावरी, धातकी, कुवेराक्ष, अरिष्टक, भल्लातक, कर्पूर, तुलसी, बाकुची इत्यादि हैं। परीषद के अन्तर्गत विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों/संस्थानों को 48 औषध पादप जातियों की कुल 40 कि. ग्रा. औषध की आपूर्ति की गई। केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के संग्रहालय हेतु कुल 10 कि. ग्रा. कच्ची आषधियों के नमूने दो दर्जन से ज्यादा औषध पादपों के भेजे गये। परिषद के अन्तर्गत विभिन्न उद्यानों में 25 औषध पादपों के बीजों की भी आपूर्ती की गई। संस्थान में बीज बैंक की स्थापना हेतु पुन: 12 औषध पादप के बीजों को एकत्र किया गया। इसके अतिरिक्ति इस संस्थान के अन्य कार्यक्रमों में औषध पादप कृषि को बढ़ावा, उत्साहवर्द्धन करने के लिए बीजों/कल्मों/पादपों की आपूर्ति विभिन्न सरकारी प्रतिष्ठानों के औषध पादप उद्यानों को की गई।

संयुक्त अनुसंधानीय एकक, ताड़ीखेत

इस केन्द्र द्वारा रानीखेत तथा चम्बा में औषध पादप कृषि कार्य किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य केशर की प्रयोगात्मक कृषि करना तथा विभिन्न महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक औषध पादप जो वन क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं उनकी अनुकूलनशीलता, उपज वृद्धि, पुष्पन, फलन आदि के अध्ययन हेतु रानीखेत तथा चम्बा की जलवायु को चुना गया है। इस उद्यान के पास इस समय आयुर्वेदिक महत्व के लगभग 200 औषध पादप विभिन्न क्यारियों में लगाए गए हैं जिनका रखरखाव किया जा रहा है इस उद्यान के पास कुल 7.89 एकड़ भूमि उपलब्ध है जिसमें से 2.5 एकड़ जमीन में कृषि कार्य किया जा रहा है, और 1.5 एकड़ जमीन में केवल केशर की खेती की जा रही है । चम्बा में एक एकड़ जमीन में लगभग 25 औषध पादप एवं 300 केशर के पौधे वृद्धि पा रहे हैं।

इस संपूर्ण औषध पादप कृषि क्षेत्र में लगभग 44 औषधियाँ अल्पीय, अर्द्ध अल्पीय, समुद्र तटीय, तराई तथा शिवालिका पर्वत मालाओं आदि में उगने वाली हैं जिनका इस उद्यान के विभिन्न स्थानों पर सफलतापूर्वक कृषि कार्य किया जा सके तथा समय-समय पर उनकी अनुकूलन शीलता एवं संतोषजनक प्रर्वधन संबंधी गतिविधियों का अवलोकन किया जा सके। जिन आयुर्वेदिक महत्व के औषध पादपों की प्रायोगिक एवं प्रदर्शनीय स्तर पर कृषि की गई है उनमें तगर, बृहदेला, जीवक, पिप्पली, बनफ्सा, केमुक, भृंगराज, पाषाणभेद, अकरकरा, दारूहरिद्रा, अपामार्ग, निर्गुण्डी, चित्रक, धातकी, कण्टकारी, गुंजा, शिंसिपा, गजपिप्पली इत्यादि हैं।

जिन महत्वपूर्ण औषध पादपों की कृषि की गई और संतोषजनक वृद्धि देखी गई उनमें रुद्राक्ष, यष्टीमधु, पिप्पली, मण्डूकपर्णी, वासा, बृहदेला, अकरकरा, जीवक इत्यादि हैं।

कुछ विदेशज पादपों की भी कृषि की गई जिसमें मेन्था अरवेन्सिस, कलेण्डुला आफीसिनेलिस, दुरून्त प्लमेरी, डिजिटलिस परपुरिया डीलन्टा, डीफेरूजीनिया, इत्यादि हैं। इस प्रतिवेदित वर्ष में 23 औषध पादपों के बीजों का कालीवेल्ली से संकलन किया गया तथा हल्द्वानी से 25 औषध पादपों को भी इस उद्यान में सम्मिलित किया गया जिसमें से कुछ महत्वपूर्ण जातियों में यल्लिकट्रम जवानिकम, अकोनाइटम बलफोरी, सचीजान्द्रा ग्रांडीफ्लोरा, अरामुरस, एनेथम-सोवा, ब्रायोनोपसिस लासीनियोसा, मुकुनाप्रुरीता, मिमोसा पूडिका, बेलिफरिसिडूलिस, इत्यादि। लगभग 10 पादप जातियों का सफलता पूर्वक अंकुरण किया गया और इनकी वृद्धि सन्तोषजनक देखी गई। इसके अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू आयुर्वेदिक औषध पादप उद्यान एवं संग्रहालय पुणे से लगभग 18 आयुर्वेदीय औषध पादपों के बीजों को प्राप्त कर खेती की गई तथा इनकी अनुकूलनशीलता, प्रजनन संबंधी गतिविधियों पर भी अध्ययन किया गया।

इस उद्यान द्वारा 10 औषध पादप जातियों की लगभग 74 कि. ग्रा. औषध पादप सामग्री परिषद के विभिन्न संस्थान/केन्द्र/अनुसंधान परियोजनाओं में अनुसंधान हेतु इस प्रतिवेदित वर्ष में आपूर्ति की गई।

केशर कृषि उद्यान

केशर कृषि परियोजना के लिए लगभग 1.5 एकड़ भूभाग नियत किया गया है और उनकी वृद्धि, विकास हेतु नियमित रूप से परीक्षण किए गए। इस वर्ष भी केशर की कृषि का कार्य विभिन्न आकार के 5,10, 000 घन कन्दों को क्यारियों में सफलतापूर्वक उगाया जा रहा है। अक्तूबर से नवम्बर, 1988 तक केशर पुष्प देखे गए । इस ऋतु में कुल 372 केशर पुष्प एकत्र किए गए जिनमें से 8 ग्राम केशर प्राप्त हुआ । इसमें शुष्क वर्तिकाग्र एवं वर्तिका सम्मिलित हैं।

बड़े पैमाने पर कुछ अन्य महत्वपूर्ण औषध पादप जिनकी विभिन्न उद्यानों में खेती की जा रही है, उन पादपों की विस्तारपूर्वक, बड़े पैमाने पर या ऋतु अनुसार इस उद्यान में भी कृषि की जा रही है:

आरग्वध अर्जुन,	अशोक,	अस्थिसंहारक,	
अतिबला,	आत्मगुप्ता,	एला,	भारंगी
विभितक ,	बिल्व,	बिम्बी	चम्पक

एरण्ड,	घृतकुमारी,	हरीतकी,	ईसबगोल, काकोदुम्बर
कंचनार,	कट्फल,	खदिर,	कुटज,
लोध्र ,	मदनफल,	मधुयष्टि,	मंजिष्ठा, निम्ब
पलाश,	सदापुष्पी,	शल्लकी,	सर्पगंधा,
शरपुंखा,	शिरीष	शटी,	श्योनाक,
तगर,	उदुम्बर,	वंश,	वरूण,

संक्षिप्त सारांश

1.	प्रायोगिक एवं बृहत् स्तर पर की गई औषध पादप जातियों की खेती।	लगभग 450 कि. ग्रा.
2.	वर्ष 1988-89 की अवधि में 80 औषध पादप जातियों के विभिन्न प्रयोजय अंगों की एकत्र की गई मात्रा।	लगभग 500 कि. ग्रा.
3.	विभिन्न पादप उद्यानों से परिषद के संस्थानों/एककों के अनुसंधान हेतु आपूर्ति की गई कुल कच्ची औषधियां।	लगभग 460 कि. ग्रा. 70 पादप जातियां

भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन

परिषद के तत्वावधान में किए जा रहे संपूर्ण औषध अनुसंधान अध्ययनों में भेषज अभिज्ञानीय अध्ययनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। औषध अनुसंधान कार्यक्रमों को क्रियान्वित एवं कार्यान्वित करने में विभिन्न विधियों एवं उपगम के पहलुओं से औषध द्रव्यों की उपयुक्त पहचान तथा प्रामाणिकता व विशुद्धता का मूल्यांकन करने की परम आवश्यकता होती है।

कलकत्ता, दिल्ली, लखनऊ, जम्मू एवं पुणे में कार्यरत भेषजअभिज्ञानीय अनुसंधान एककों ने इस वर्ष आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति में व्यापक रूप से प्रयोग किए जाने वाले निम्नलिखित औषध द्रव्यों का भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन किया। विभिन्न एककों ने गत वर्षों में लगभग 160 औषध द्रव्यों का भषज अभिज्ञानीय अध्ययन कर यह कार्य पूरा कर लिया है।

1. अग्निमन्थ – मूल
2. अतिबला – पत्र, पुष्प,
3. भूमिआमलकी – मूल, तना, पत्र
4. बृहती – मूल, फल एवं बीज
5. जटामांसी – मूल
6. माधवी – पत्र
7. पलाश – पत्र, पुष्प, फल
8. सुनिषण्णक – पत्र, बीजाणु–फालिका
9. स्वर्ण केशरी – पत्र
10. तिनिश - त्वक्
11. महाबला –

भेषजअभिज्ञानीय अध्ययनों में औषधियों के स्रोत, वनस्पति–विज्ञानीय पहचान एवं समुचित आयुर्वेदीय नाम निर्धारण करने के साथ ही उनके पर्यायवाची शब्दों एवं गुणों, वनस्पति–विज्ञानीय पहचान तथा मुख्य विशेषताओं का गहन विवरणात्मक अध्ययन सम्मिलित है। इस अध्ययन में पादप विशेष का विस्तृत संरचनात्मक परीक्षण तथा सक्रिय घटकों के अवयव में पर्यावरण सम्बन्धी भिन्नताओं पर निर्भर परिवर्तनों का अध्ययन भी सम्मिलित है। इस बृहत् कार्य में विभिन्न मानदण्डों का अध्ययन सम्मिलित है यथा एकौषधियों की आकारिकी, संवेदनात्मक गुण, कोशिका एवं इनकी संरचना–गुणात्मक एवं मात्रिक दोनों, कोशिका अवयव, प्रारंभिक पादप रसायन विज्ञानीय विश्लेषण, वर्णलेखन विज्ञानीय अध्ययन, रासायनिक घटकों की पहचान तथा अल्कलाइड, स्टेरॉइड, टर्पनॉइड, फिनोल, अनीन, सपोनिन, फ्लेबोनाइड, प्रोटीन आदि औषध सामग्री के विभिन्न सत्वों का प्रतिदीप्ति संबंधी विश्लेषण तथा भौतिक नियंत्रक गुणों सहित भस्म एवं सत्व संबंधी गुण, शुष्क सामग्री व आर्द्र अवयव आदि औषध चूर्ण का विश्लेषणात्मक अध्ययन भी किया गया है जो कि अपमिश्रणों की जांच करने में अत्यन्त सहायक माना जाता है।

इन अध्ययनों का एकौषधियों के भेषज कोशीय मानक निर्धारण में प्रमुख स्थान है तथा इनके पर्यायवाची नामों के कारण औषधियों की समुचित पहचान, प्रामाणिकता के विषय में व्याप्त विवाद/भ्रांति को दूर करने एवं एक से अधिक औषधियों के लिए एक ही या उसी नाम का प्रयोग और अपमिश्रण एवं प्रतिनिधि द्रव्यों की पहचान में भी सहायता मिलती है।

रासायनिक अनुसंधान अध्ययन

औषध पादपों में रासायनिक अध्ययनों की आयुर्वेदीय औषध अनुसंधान परियोजना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। इन अध्ययनों मे सक्रिय घटकों का निष्कर्ष सम्मिलित है जिससे कि विभिन्न जीव विज्ञानीय सक्रियताओं के लिए उनके स्वरूप एवं विशेष गुणों को ज्ञात किया जा सके। परिषद के तत्वावधान में यह कार्य कलकत्ता, दिल्ली, हैदराबाद, लखनऊ, मद्रास, त्रिवेन्द्रम एवं वाराणसी में कार्यरत पादप–रसायन विज्ञानीय अनुसंधान एककों के माध्यम से किया जा रहा है। वर्ष 1988–89 में किए गए कार्य का सारांश निम्नानुसार है–

1. **अलर्क (सोलेनम टाइलोबेटम)** **कै. श्रीनि. आयु. औ. अनु. सं. मद्रास**

अलर्क पादप के पत्रों, तने एवं अपरिपक्व सरस फल के समग्र अल्कलॉइड के उत्पादों की तुलना की गई तथा ज्ञात हुआ कि इसके सरसफल में वही अल्कलॉइड उच्चतर मात्रा में पाए जाते हैं।

2. **अम्लवेतस (गार्सिनिया पेडङ्कुलेटा)** **के. अनु. सं. दिल्ली**

अम्लवेतस के फलों के ईथाइल ऐसीटेट प्रभाग से दो क्रिस्टलीय योग प्राप्त किए गए। इनकी पहचान का कार्य प्रगति पर है। जीवविज्ञानीय परीक्षण के लिए इसके पत्रों का बेंजीन सत्व निर्मित कर लिया गया है।

3. **बदर (जिजिफस जुजुबा)** **रा. अनु. ए. कलकत्ता**

बदर पादप के पेट्रोल सत्व का स्तम्भ वर्ण लेखन करने से ट्रिटर्पनॉइड, जिजिबरनेलिक एसिड (9) प्राप्त हुआ । इस पादप से सीनोथिक एसिड (10) तथा एक ट्रिटर्पनॉइड एसिड का निष्कर्षण भी कर लिया गया है।

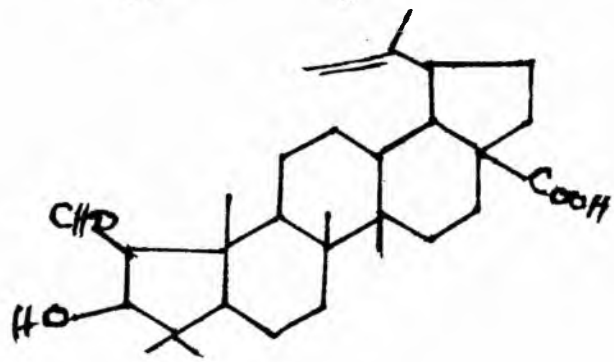

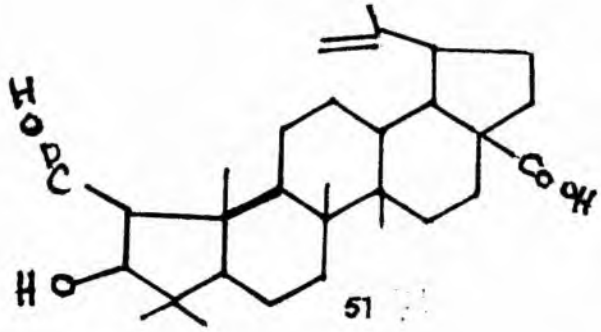

4. **बदर (जिजिफस जुजुबा)** **रा. अनु. ए. लखनऊ**

इस पादप के विभिन्न भागों का निष्कर्षण कर इसके सत्वों का वर्णलेखन विभाजन कर योगों का निष्कर्षण किया गया। इन योगों का वर्णक्रम आंकड़ों के आधार पर तथा इनकी प्रामाणिक नमूनों से प्रत्यक्ष तुलना कर सम्पुष्टि की गई। इसके मूल त्वक से फ्रैंगलामिन, नुम्मुलारिन–ए, इसो–ल्न्यूसिन, ग्लाइसिन, इरिथ्रो एवं थ्री बी– हाईड्रोक्सील्यूसिन प्राप्त हुए, तनात्वक् से मुक्रोनिन–सी, एम्फिबिन–एच टुबानिन–ए एवं बी प्राप्त हुए और इसके बीजों से एडपरजिनिन, ग्लूकोज, फ्रक्टोस, गेलाक्लोज एवं अलग–अलग प्रकार के वसीय ऐसिड प्राप्त हुए। पत्रों से प्रोटोपाइन बरबेरिन, विटामिन–सी एवं रूटिन तथा फलों से एसकोर्बिक एसिड, फलेवोन ग्लाइकोसाइड एवं सपोनिन निकाले गये।

5. **बाल्हीक, हिंगु (फेरूला असफिटिडा)** **रा. अनु. ए. कलकत्ता**

फेरूला असफिटिडा के सांद्रित ईथर सत्व का स्तम्भ वर्णलेखन विज्ञानीय अध्ययन करने से बेंजीन–ईथाइल ऐसिटेट (9:1) एवं बेंजीन–ईथाइल एसिटेट (4:1) क्षालित द्रव्य में एक योग (फेरूलासिन (I) पाया गया। इस योग को (द्रवणांक 80–81°) एल्कोहल से चमकदार सूचिका के रूप में क्रिस्टलित किया गया तथा वर्णक्रमीय आँकड़ों के आधार पर (यूवी, आईआर, एच. एन. एम. आर) इसकी निम्न संरचना ज्ञात की गई।

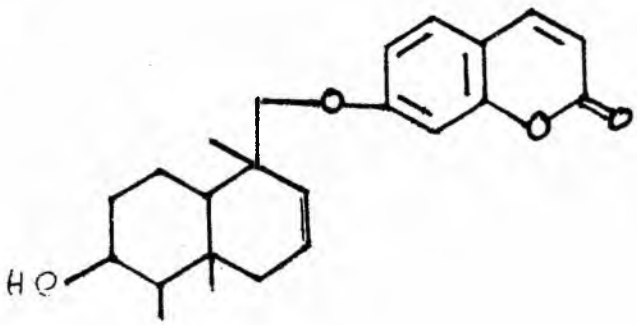

योग (एफ एफ 9) की संरचना का विशद कार्य किया जा रहा है तथा अन्य योगों की पहचान का कार्य भी प्रगति पर है।

6. **बंझौरी (विकोआ इण्डिका)** **कै. श्रीनि. आयु. औ. अनु. सं. मद्रास**

इस पादप के क्लोरोफॉर्म सत्व का सिलिकाजेल पर वर्णलेखन विज्ञानीय अध्ययन किया गया। ईथाइल एसिटेट युक्त मार्जन से एक योग निकोडिओल विकोडाइओल (C_{10} H_{18} O_2, एम' 170, द्रवणांक 240–42°) अल्प मात्रा में प्राप्त हुआ एवं एक्स–रे अध्ययनों से निम्न संरचना निर्धारित की गई । इस पादप के एल्कोहॉली एवं क्लोरोफॉर्म सत्वों का प्रशामी कार्य प्रगति पर है।

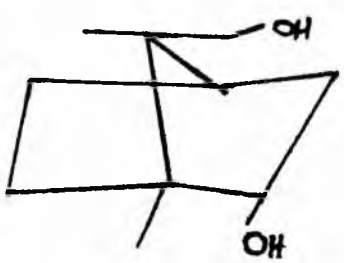

7. भारंगी (भेद) (क्लीरोडेन्ड्रम स्प्लेण्डेंस (पत्र) के. अनु. स. दिल्ली

फ्लेवोनॉइडग्लाइकोसाइड का निष्कर्षण करने की दृष्टि से इस पादप (पत्र) का पुनर्अध्ययन प्रारंभ किया गया है तथा यह अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

8. भूर्ज (बेटुला युटिलिस) के. अनु. स. दिल्ली

इस पादप के पत्रों के बेंजीन सत्व को परीक्षण के लिए निर्मित किया गया। पादप रसायनों का निष्कर्षण करने के उद्देश्य से अनेक सत्व तैयार किए गए तथा आगामी कार्य प्रगति पर है।

9. गुडूची (टिनोस्पोरा कार्डिफोलिया) रा. अनु. ए. लखनऊ

गुडूची के एल्कोहॉली सत्व को निर्मित कर उसका हैक्सेन, क्लोरोफार्म एवं एन. बुटानोल से प्रभाजन किया गया जिससे कि इनके विलेय प्राप्त हो सके। इस पादप का चूर्ण एवं एल्कोहॉली सत्व पित्त विरेचक के रूप में सक्रिय पाया गया। परन्तु इसके जलीय सत्व में यह गुण नहीं पाया गया। एल्कोहॉली सत्व से पी. वर्धा प्रतिरक्षण में वीवो एवं वीट्रो में उल्लेखनीय क्रियाशीलता पाई गई। परन्तु ऐमिनो-उद्दीपक के रूप में क्रियाविहीन पाया गया।इसकी 500 म्यू./मिली. (वाइट्रो में) मात्रा से 25% तक यकृत संरक्षी तथा अमीबारोधी सक्रियता भी पाई गई परन्तु प्रतिरोगाणु के रूप में यह क्रिया विहीन है।

10. हरीतकी (टर्मिनेलिया चेबुला) रा. अनु. ए. कलकत्ता

हृतस्नेह हरीतकी के मेथैनालिक सत्व से पोलीहाइड्रोक्सी योग, सिरिंगिक ऐसिड (7) एवं गैलिक ऐसिड (8) प्राप्त हुये।

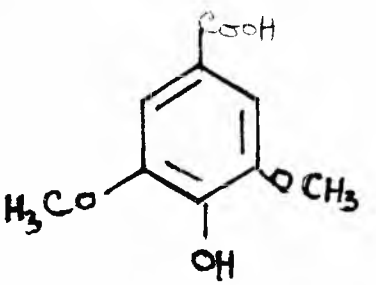

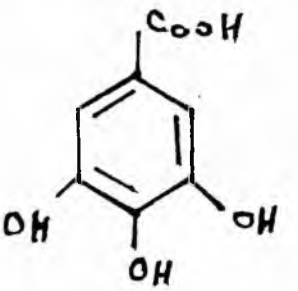

11. जम्बू (सिजिगियम जम्बोस) कै. श्रीनि. आयु. औ. अनु. सं. मद्रास

जम्बू के पत्रों की पिटिकाओं का पाद-रसायन विज्ञानीय अध्ययन किया गया। पत्रों से पिटिकाओं को अलग कर इनसे हैक्सेन एवं क्लोरोफॉर्म निष्कर्ष निकाला गया। क्लोरोफॉर्म सत्व से सिलिकाजेल पर स्तम्भ वर्णलेखन करने से पर्याप्त मात्रा में बेटुलिनिक ऐसिड प्राप्त हुआ । फिनोलिक योगों का लक्षण वर्णन करने का तथा क्लोरोफॉर्म एवं एल्कोहॉली सत्वों से अन्य लघु योगों का निष्कर्षण करने का कार्य प्रगति पर है।

12. **ज्योतिष्मती (सिलौष्ट्रस पैनिकुलेटस)** **रा. अनु. ए. हैदराबाद**

इस पादप के तने के पैट्रोल सत्व का स्तम्भ वर्णलेखन करने पर एक रवेदार योग (द्रवणांक 86°) प्राप्त हुआ। इससे स्टेरॉइडों के घनात्मक परीक्षणफल प्राप्त हुए तथा इसे फाइटोस्टेरॉल के रूप में पाया गया।

13. **कपियाकुशी (हैनियाट्रिजुगा)** **कै. श्रीनि. आयु. औ. अनु. सं. मद्रास.**

इस पादप के वायुशुष्क एवं महीन चूर्ण (2 कि. ग्रा.) को हैक्सीन से हुतस्नेह कर 48 घण्टे तक शीत में क्लोरोफॉर्म से निष्कर्षित किया गया। क्लोरोफॉर्म निष्कर्ष का सिलिकाजेल पर स्तम्भ वर्णलेखन करने तथा 15% इथाइल ऐसिटेट – क्लोरोफार्म मार्जन से ट्रिजुगिन–ए, ट्रिजुगिन–बी एवं एक ठोस योग ट्रिजुगिन–सी (50 मि. ग्रा.) (222° द्रवणांक) प्राप्त हुआ।

ट्रिजुगिन–सी ($सी_{29}$ $एच_{34}$ $ओ_{10}$) की पहचान वर्णक्रमीय आंकड़ों (आई आर, एन आर) के अध्ययन पर आधारित थी और सभी प्रकार से यह दिगुजा बी के ऐसिटेट के समान पाया गया।

14. **कर्णस्फुटिका, पिसूमार (बोनिंहोसीनिया एल्बीफ्लोरा)** **रा. अनु. ए. कलकत्ता**

गत रिपोर्ट में इस पादप के पेट्रोल सत्व से पांच योगों (बी. जी. i – बी. जी. v) के निष्कर्षण की सूचना दी जा चुकी है।

वर्णक्रमीय आंकड़ों से योगों (बी. जी. iv एवं बी. जी. v) की मुर्रालॉगिन (2) एवं जयन्तिनीन (3) द्विलक कॉमरीन व्युत्पन्न के रूप में पहचान की गई।

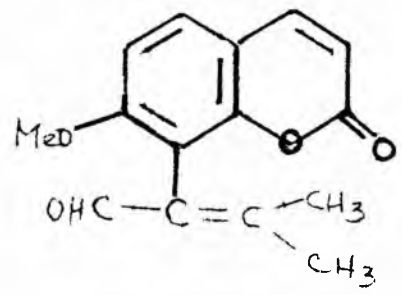

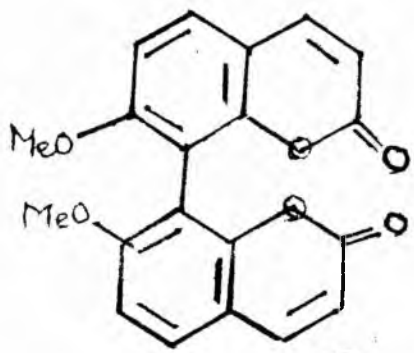

15. कटक (स्ट्रिकनस पौटैटोकम) रा. अनु. ए. वाराणसी

कटक के शुष्क पादप का चूर्ण बनाकर ईथनोल (95%) से निष्कर्षण किया गया। इस परिष्कृत सत्व का उच्चतर ध्रुवता वाले विलेयकों की सहायता से सिलिका जेल कॉलम पर रासायनिक विधि से आसवन किया गया। पेट्रोल ईथर सत्व के सिलिका जेल पर स्तम्भ वर्ण लेखन करने तथा पेट्रोल ईथर बेंजीन मिश्रण का प्रयोग करने से योग सपी1, सपी2, सपी 3 एवं सपी 4 प्राप्त हुए। बेंजीन सत्व से सिलिका जेल पर स्तम्भ वर्णलेखन करने तथा बेंजीन – क्लोरोफॉर्म मिश्रण का उपयोग करने से योग सपी5, सपी 6, सपी 7, सपी 8 तथा सपी 9 प्राप्त हुए, इन योगों का विस्तृत अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

16. कृष्ण सारिवा (क्रिप्टोलेपिस बुकेनाना) क्षे. अनु. सं. त्रिवेन्द्रम

इस पादप के मूल का पेट्रोल ईथर, ऐसिटॉन एवं ऐल्कोहल से निष्कर्षण किया गया। इसके पेट्रोल ईथर सत्व से दो निर्गन्ध एवं एक फिनोलिक योग वियोजित किया गया तथा बीटा–सिटोस्टेरॉल, एमिरीन एवं 2 – हाइड्रॉक्सी– 4– मेथॉक्सी बेंजलडीहाइड के रूप में पहचान की गई। ऐसीटॉन एवं ऐल्कोहॉल सत्वों का प्रगामी अध्ययन प्रगति पर है।

17. लांगली (ग्लोरिओजा सुपर्बा) रा. अनु. ए. हैदराबाद

इस पादप के 500 ग्राम मूल चूर्ण से प्राप्त 1.4 ग्रा. पेट्रोल सत्व, 1.7 ग्रा. क्लोरोफॉर्म सत्व एवं 17.5 ग्रा. मेथनॉल सत्व का संगत विलेयकों से निष्कर्षण कर इन्हें भेषजगुण विज्ञान एकक को परीक्षण के लिए भेजा गया।

18. महामेदा (पोलीगोनेटम सिरिफोलियन) रा. अनु. ए. हैदराबाद

इस पादप के मूल चूर्ण की 500 ग्रा. मात्रा से क्रमशः पेट्रोल ईथर (60–80°) क्लोरोफॉर्म मेथनोल से निष्कर्षण किया गया। 1.6 ग्रा. क्लोरोफॉर्म सत्व एवं 61.8 ग्रा. मेथनोल सत्व भेषजगुण विज्ञानीय एकक को परीक्षण के लिए भेजा गया।

19. नीम (एजाडिरेक्टा इण्डिका) रा. अनु. ए. हैदराबाद

इस पादप के छाया में सुखाए गए पुष्पों का क्रमशः पेट्रोल ईथर (60–80°), क्लोरोफॉर्म एवं मेथनोल से निष्कर्षण कर अपचित दाब में सांद्रित किया गया। इन सत्वों का रासायनिक अध्ययन प्रगति पर है तथा इन्हें ग्रांट मेडिकल कॉलेज, बम्बई को भेषजगुण विज्ञानीय परीक्षण के लिए भी भेजा गया है।

20. पाटला (स्टिरिओस्पर्मम वैविओलेन्स) रा. अनु. ए. हैदराबाद

इस पादप के मूल के मेथनोल सत्व (26.8 ग्रा.) तथा त्वक् के पेट्रोल सत्व (23.75 ग्रा.) क्लोरोफॉर्म सत्व (22.60 ग्रा.) एवं मेथनोल सत्व (79.60 ग्रा.) को भेषजगुण विज्ञीनीय परीक्षण के लिए ग्रांट मेडिकल कॉलेज, बम्बई भेजा गया है।

21. **प्रियंगु (एग्लाई रोक्सबर्गीनिया)** **कै. श्रीनि., आयु. औ. अनु. स. मद्रास**

13 सी-एनएमआर एवं 2 डी-एनएमआर (सम-आणविक एवं विषम-आणविक दोनों) के आधार पर रोक्सबर्गीडिसोल-ए रोक्सबर्गीडिसोल-बी की संरचना को I एवं II के रूप में संशोधित किया गया। इन संरचनाओं की दोनों योगों के ऑक्सीकरण से भी सम्पुष्टि की गई।

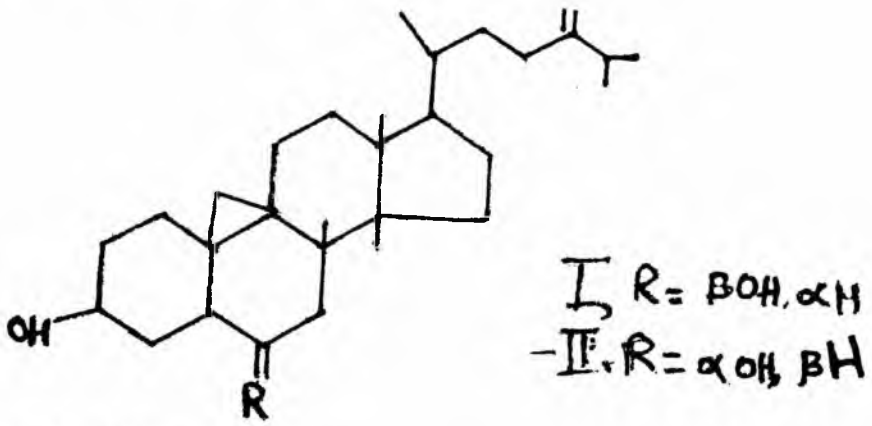

22. **सारिवा (हेमिडेस्मस इण्डिकस)**

इस पादप के हृतस्नेह मूल बेंजीन सत्व का सिलिका जेल पर बारम्बार स्तम्भ वर्णलेखन करने से दो योग प्राप्त हुए जिन्हें एचआई/5 (5) एवं एचआई/6 (6) के रूप में नामोदिष्ट किया गया।

इनमें अर्बुदरोधी एवं यकृत रोग विरोधी सक्रियता पाई गई है।

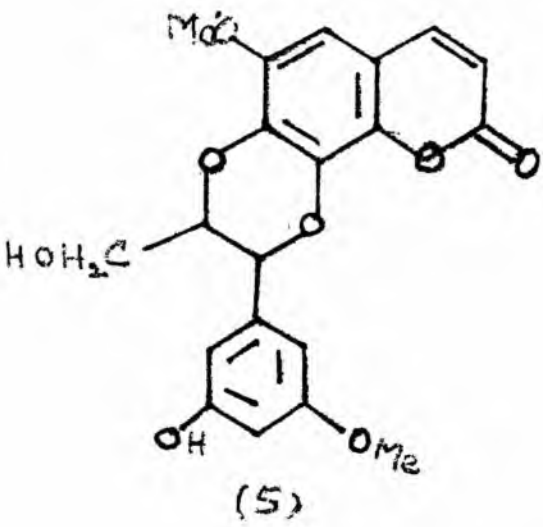

(5)

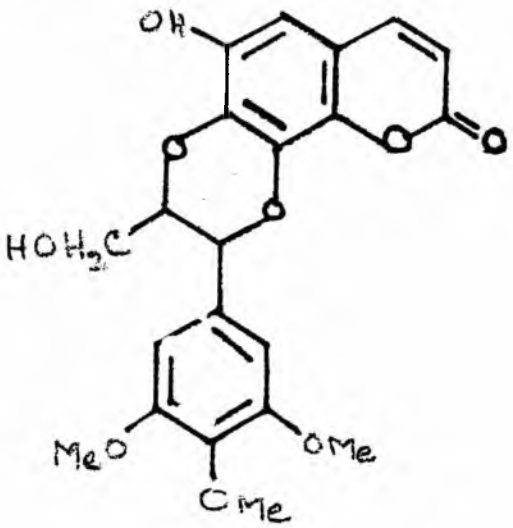

23. शटी (हेडिकियम स्पाइकेटम) रा. अनु. ए. कलकत्ता

इस पादप में लगभग 4 कि. ग्रा. मात्रा से क्रमशः पेट्रोल, क्लोरोफार्म एवं मेथनोल से निष्कर्षण किया तथा इस विलेय सामग्री को भेषजगुण विज्ञानीय परीक्षण के लिए भेज दिया गया है।

इस पादप सामग्री की एक कि. ग्रा. मात्रा का वाष्प आसवन किया गया तथा सुगन्ध तैलों को पेट्रोल विलेय तथा अविलेय तैलों में पृथकीकृत किया गया। इन तैलों का सामान्य पर्त वर्णलेखन (जीएलसी) अध्ययन किय जा रहा है।

24. सिदेहक (लेजरस्टाइमिया पर्वीफलेश) रा. अनु. ए. कलकत्ता

इस पादप के सांद्रित हैक्सीन सत्वका स्तम्भ वर्णलेखन करने से एक नया टिटर्पीनॉइड, लेजफलोरियम (4) प्राप्त हुआ। वर्णक्रमी आंकड़ों (यूवी, आईआर, मास आईएचएनएमआर) का विस्तृत अध्ययन करने से इसकी संरचना निर्धारित की गई है।

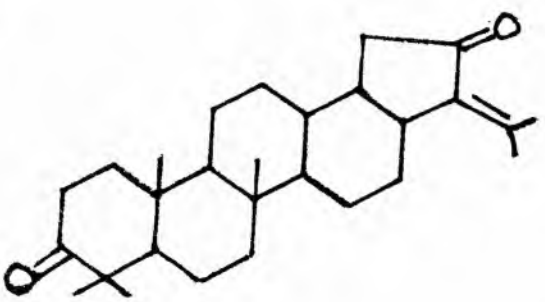

25. शिग्रु (मॉरिंगा ओलिफरा) रा. अनु. ए. वाराणसी

इस पादप के त्वक चूर्ण की एक कि. ग्रा. मात्रा से तत्सम्बन्धी विलेयकों की सहायता से निष्कर्षण के फलस्वरूप प्राप्त 13.8 ग्रा. पेट्रोल सत्व, 13 ग्रा. क्लोरोफॉर्म सत्व एवं 20 ग्रा. मेथनोल सत्व को भेषजगुण विज्ञानीय एकक को परीक्षण के लिए भेज दिया गया है।

26. सोम (सरकोस्टेमा बेविस्टिग्मा) क्षे. अनु. सं. त्रि.

इस पादप के ऐसिटोन एवं ऐल्कोहल सत्वों में विद्यमान रासायनिक संघटकों का पृथक्करणा एवं उनकी पहचान हेतु रासायनिक अध्ययन प्रगति पर है।

27. तर्कारी (क्लेरोडेण्ड्रमफलेमिडिस) रा. अनु. ए. वाराणसी

इस पादप के मूल से सैटेलरीन, क्लेरोडीन, क्लेरोडेनरीन-ए एवं स्टेरॉइडल ग्लाइकासाइड प्राप्त हुए। इसके तने से बीटा-सिटेस्टरॉल, हिस्पिडुलिन एवं एपिजिनीन प्राप्त हुए जब कि इसके पत्रों से बीटा-सिटेस्टरॉल, (24 एस) - ईथाइल - कोलेस्टो - 5,22,25 - टीन - 3 - ओल प्राप्त हुआ। इन योगों की वर्णक्रमी आंकड़ों से पहचान (आईआर, यवी, आईएचएनएमआर, 13 सी एनएमआर) की गई तथा इनका प्रामाणिक नमूनों से अन्भरण किया गया।

28. तेजपत्र (सिनेमोमम तमाल) रा. अनु. ए. लखनऊ

इस पादप का एल्कोहल सत्वप्राप्त करने के उद्देश्य से इसका 50% ईथनोल से निष्कर्षण किया गया जिससे फिर हैक्सीन, क्लोरोफॉर्म एवं एन-बुटानोल के प्रभाजन प्राप्त किये गये।

वाइवो में उत्साहवर्धक (66%) विषमज्वर रोधी सक्रियता पाई गई। अतः इन प्रभाजनों को विटो में अध्ययनों हेतु भेजा गया है। इस पादप का वाङ्‌मय सर्वेक्षण भी पूरा कर लिया गया है।

29. वासक (अधाटोडा वासिका) रा. अनु. ए. हैदराबाद

इस पादप के तने के क्लोरोफॉर्म सत्व से एक योग (द्रवणांक 196° सी) प्राप्त हुआ। इस योग की पहचान के उपाय किए जा रहे हैं।

इस पादप के तने के मेथनोलिक सत्व से एक विशुद्ध योग (द्रवणाक 98° सी) प्राप्त हुआ जिसे उपलब्ध साहित्य के आधार पर अन्तरण कर डेसोक्सीवसिसीन पाया गया।

30. वृक्षाम्ल (गार्सिनिया इण्डिका) रा. अनु. ए. हैदराबाद

इस पादप के तनात्वक के पेट्रोल ई-- थर सत्व का बारम्बार सिलिका जेल पर स्तम्भ वर्णलेखन करने से एक मन्द पीला फिनोलिक योग (द्रवणांक 228 एवं + 574) प्राप्त हुआ।

तनात्वक के क्लोरोफॉर्म सत्व का सिलिका जल पर स्तम्भ वर्णलेखन करने से एक अल्प पीला रवेदार योग भी प्राप्त हुआ।

इन दोनों योगों की पहचान का अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

31. विविध क्षे. अनु. सं. त्रिवेन्द्रम

1.	नीम तैल की निर्धारित मात्रा	= 115 मि. ग्रा.
2.	निदान चिकित्सात्मक/भेषजगुण विज्ञानीय एककों को आपूर्ति निम्बतिक्तम की मात्रा	= 2.685 कि. ग्रा.
3.	औषध निर्माण हेतु निष्कर्षित पादप सामग्री की मात्रा	= 12 कि. ग्रा.
4.	क्षे. अनु. सं. त्रिवेन्द्रम एवं भा. पं. सं. चेरूतुरूथि के निदान चिकित्सात्मक अनु. अनुभाग को औषध बनाकर आपूर्त की गई मात्रा	= 2 कि. ग्रा.

भेषजगुण विज्ञानीय/विषविज्ञानीय अनुसंधान अध्ययन

प्रयोगात्मक प्राणियों पर अध्ययन करना भेषजगुण विज्ञानीय अध्ययनों का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका नई औषधियों के विकास या प्राचीन औषध दावों और/या जनश्रुति औषधियों की प्रभाव क्षमता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन्ही उद्देश्यों से वर्ष 1988–89 में परिषद ने बम्बई, कलकत्ता, लखनऊ, पटियाला, जोधपुर, नई दिल्ली, त्रिवेन्द्रम, वाराणसी, चेरूतुरूति एवं झासी में स्थित भेषजगुण विज्ञानीय अनुसंधान एककों के माध्यम से 25 एकौषधियों, औषधयोगों एवं कूट भेषजों का अध्ययन किया। अनुसंधान कार्य का संक्षिप्त विवरण निम्नप्रकार है–

1. आरोग्यवर्धनी — भे. वि. अनु. ए. जोधपुर

चूहों पर इसका मध्य–तीव्र अध्ययन करने से कोई अनुसंगी प्रभाव नहीं हुआ। बृहत एवं सूक्ष्म–सूक्ष्मदर्शीय से अन्तरंग में कोई विकृतिजन्य लक्षण नहीं पाए गए। खरगोशों पर तीव्रविषाक्तता अध्ययन करने पर इस औषध से अतिसार रोग उत्पन्न हो गया। जिसका स्वतः निवारण हो गया। इस औषध में आक्षेपक रोधी बेलनाहर, सम्वेदनाहारी (पृष्ठ एवं तंत्रिक अवरोध) अल्पताप एवं केन्द्रीय तंत्रिका संस्थान सम्बन्धी सक्रियता युक्त पाया गया। खरगोशों के रक्तशर्करा स्तर में कोई परिवर्तन अंकित नहीं किया गया। चिकित्सित खरगोशों का रक्तस्राव काल अपरिर्वनीय बना रहा जब कि प्रोथॉम्बिन काल में वृद्धि होती गई।

2. निम्बतिक्तम् — भे. वि. अनु. ए. जोधपुर

निम्बतिक्तम से चूहों में कोई तीव्र या मध्य–तीव्र विषाक्तता नहीं पाई गई। चिकित्सित चूहों के अंतराग में काई स्थूल या ऊतक विकृति परिवर्तन नहीं पाए गए। जीवरासायनिक मापदण्ड भी सामान्य स्तर में ही पाए गए। इससे चूहों में कोई उपचयी, आक्षेपकरोधी बेदनाहर, शोथजरोधी, अल्पताप एवं निन्द्रापक प्रभाव नहीं पाया गया। रक्तस्राव एवं प्रोथॉम्बिन काल सामान्य रहा। इस औषध से खरगोशों की ग्लिबेनक्लेमाइड व्युत्पन्न अतिग्लूकोजरक्तता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इस औषध से खरगोशों के सीरम–कौलेस्टरॉल, रक्त यूरिया, एवं सीरम बिलीरूबिन जैसे जीवरासायनिक मापदण्डों में कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

3. गन्धमार्जर वीर्य (सीवेट) — भा. पं. सं. चेरूतुरूति

इससे कैरागीनीन व्युत्पन्न पंज शोथ एवं चूहों के कर्णशोथ में उल्लेखनीय शोथजरोधी प्रभाव पाया गया। परन्तु इसकी केवल 400 मि. ग्रा./कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा से ही चूहों में फोर्मेलिन व्युत्पन्न जलोदर में उल्लेखनीय प्रभाव पाया गया। इस अवधि में कुल मिलाकर 33.1 ग्रा. गन्ध मार्जर वीर्य एकत्र किया गया।

4. आम्रातक — भा. पं. सं. चेरूतुरूति

इस पादप सत्व की 100, 300 एवं 900 मि. ग्रा./कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा से कैटागीनी व्युत्पन्न पंज शोथ एवं चूहों के जीलीन व्युत्पन्न कर्ण शोथ में इससे उल्लेखनीय शोथजरोधी सक्रियता पाई गई परन्तु फामेलिन व्युत्पन्न जलोदर में इस सत्व की 900 मि. ग्रा./कि.ग्रा. मात्रा से उल्लेखनीय प्रभाव पाया गया। यह सत्व आक्षेपकरोधी (विद्युत–आपेक्षी एवं पेंटिलीन टैट्रेजोल व्युत्पन्न आक्षेप), वेदनाहर (विकिरण तापविधि) एवं अल्पताप प्रभाव उत्पन्न करने में असफल रहा।

5. आर्द्रक

भे.वि. अनु. ए. कलकत्ता

इससे निविष्ट द्रव्य की दर एवं उसके आकार के साथ वियोजित गिनीपिग फुफ्फुस द्रव निवेशन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इससे किआवस्थिक दीर्घ कालिक रक्तदाब में ह्रास उत्पन्न हुआ। तथा संवेदनादृत बिल्लियों में औषध मात्रा पर निर्भर आंत्र शिथिलन उत्पन्न हुआ। इससे चूहों में ट्रिपैनोसोमा क्रूजाई संक्रमण के प्रतिरक्षण में कोई ट्रिपेनोसिडल गुण नहीं पाए गए।

इसका प्रतिहिस्टामिनिक एवं दाब ह्रासी सक्रियण अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

6. अश्वगंधा

अनुदान प्राप्त एकक, मणिपाल

अेवगंधा मूल का ऐल्कोहॉली सत्व प्राणियों को रासायनिक या मेस व्युत्पन्न ग्रह से संरक्षित नहीं कर पाया। इस सत्व की निम्नन्तर मात्रा से पेशी असमंजन उत्पन्न नहीं हुआ तथा इससे प्रत्यवसादक प्रभाव नहीं पाया गया। इससे कोई प्रभावकारी शामक क्रिया भी उत्पन्न नहीं हुई। इस सत्व से पेंटिलीन टैट्रेजोल व्युत्पन्न ग्रह प्रसुप्ति काल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

अतः इस सत्व का लम्बी अवधि तक अवचारण करने से सम्भवतः पेटीमाल अपस्मार में लाभकारी प्रभाव हो सकता है।

7. अटलारिया (तमिल)

भे. वि. अनु. ए. वाराणसी

इस पादप सत्व के विभिन्न प्रभाजों का प्रभाव चूहों में ज्ञात करने के लिए कैरागीनी व्युत्पन्न शोथ पर अध्ययन किया गया। अवलोकन किया गया कि इसके चारों ही प्रभाजों अर्थात पेट्रोलियम ईथर, बेंजीन, क्लोरोफार्म एवं मेथोनोल में शोथजरोधी सक्रियता होती है। रासायनिक परीक्षण करने से केवल क्लोरोफार्म एवं मेथनॉल सत्वों में ही फलोवोनॉइडों की विद्यमानता के धनात्मक परिणाम प्राप्त हुए । इससे संकेत मिलता है कि इस पादप में कतिपय फलोवोनॉइड भिन्न घटक भी होते हैं जो शोथजरोधी के रूप में सक्रिय रहते हैं।

8. भूम्यामलकी

भे. वि. अनु. ए. लखनऊ

भूम्यामलकी यकृत पोषक औषध के रूप में सुप्रसिद्ध है। इसका आंत्र संक्रमण में अध्ययन किया गया। इससे इस रोग पर अल्प प्रभाव पाया गया। जठरांत्र पथ पर इसके प्रभाव को ज्ञात करने के लिए प्रगामी अध्ययन किए जाएंगे।

9. हरीतकी

भे. वि. अनु. ए. कलकत्ता

इस औषध से चूहों के चारकोल त्रिहिनत जठरांत पथ की स्वतः गतिशीलता में सहायता मिली। इस औषध का जलयोजित चूहों को मुखीय अवचारण करवाने से उनके मूत्र उत्सर्जन में उल्लेखनीय समर्थता मिली। इसऔषध का अन्तःक्षेपण करने से संवेदनाहारी चूहों के प्रवेशनी प्रवेशित मूत्राशय में मूत्रप्रवाह दर में वृद्धि हुई। इसका अंतःक्षेपण करने से अन्तर्गशाशय प्रवेशनी प्रवेशित संवेदनाहारी चूहों के मूत्र उत्सर्जन प्रवाह दर में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। सामान्य तथा अधिवृक्क वहिर्जनक चूहों के मूत्र में एन. ए. + एवं के + का आकलन करने के लिए निरन्तर अध्ययन किए गए। इसमें चूहों के ट्रिपेनोसोमा क्रूजाई संक्रमण के प्रतिरक्षण में कोई ट्रिपैनोसिडलगुण नहीं पाय गया।

इसका विरेचक तथा मूत्रल सक्रियता सम्बन्धी सघन अध्ययन प्रगति पर है।

10. जटामांसी — भे. वि. अनु. ए. कलकत्ता

चूहों में इस औषध का मुखीय अवधारण करवाने से इस औषध का सुनिश्चित वेदनाहार प्रभाव ज्ञात किया गया। इससे चूहों के सीएआर/सीईआर पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। इससे क्षुधा वृद्धि होती है परन्तु यह दोष दूर करने में असमर्थ रहा। यह प्राणियों को अल्प विद्युताघात ग्रह को संरक्षित करने में असमर्थ रहा।

11. जीवन्ती — भे. वि. अनु. ए. जोधपुर

इस पादप पंचांग को अच्छी तरह सुखाकरचूर्णित किया गया। और तत्पश्चात आसवित जल एवं ईथाइल ऐल्कोहल का प्रयोग कर प्रभाजी वर्गीकरण किया गया। जलीय एवं ऐल्कोहलिक सत्वों का श्वान के विमोजित लोमरहित कंकाल एवं हृदपेशी विरचना, मध्य धमनी दाब, सामान्य प्राणी व्यवहार, मोटर समन्वय, पेंटाबार्बिटान निद्रापकता एवं ताप वेदना पर इसका प्रभाव ज्ञात करने के लिए भेषजगुण विज्ञानीय अध्ययन किये गए। उपर्युक्त परीक्षण तकनीकों में इस सत्व की विभिन्न मात्राएं प्रयोग की गई और उपर्युक्त समष्टिजों पर सांख्यिकीय दृष्टि से कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया गया।

12. कंटालु — भे. वि. अनु. ए. वाराणसी

इस पादप से निष्कर्षित टैरक्सेस्टेरॉल ऐसिटेट का शोथज रोधी प्रभाव ज्ञात करने हेतु कैरागीनीन, फॉर्मैल्डीहाइड एवं सह औषध विधियों का प्रयोग कर चूहों पर अध्ययन किया गया। इस योग से विशिष्ट शोथजरोधी प्रभाव पाया गया।

13. कृष्ण सारिवा — भे. वि. अनु. ए. वाराणसी

इसकी 40 ग्रा. प्रति किलो ग्राम शरीर भार की दर से धवल चूहों में मुखीय तीव्र विषाक्तता एवं सामान्य व्यवहार सम्बन्धी अध्ययन किया गया। इससे कोई विषाक्त प्रभाव या मृत्युदर नहीं पाई गई। एल डी 50 लगभग 50 ग्रा./कि. ग्रा.की पेंटाबार्बिटोन निद्रायकता का 50 चूहों पर अध्ययन किया गया। इससे स्पष्ट केन्द्रीय तंत्रिका संस्थान अवसादन पाया गया परन्तु इन परीक्षणफलों का अभी विश्लेषण किया जा रहा है। इससे डाइऐजोपान निद्रापकता में वृद्धि नहीं हुई। यह औषध चूहों को अधिचरम विपुदाघात ग्रह प्रतिरक्षण प्रदान करने में भी असफल रही। तीन विभिन्न प्राणी वर्गों का इसका वेदनाहर प्रभाव अध्ययन भी किया गया। परन्तु इसमें कोई उल्लेखनीय वेदनाहर सक्रियता ज्ञात नहीं हुई। इससे कोई ज्वरहर प्रभाव नहीं पाया गया। परन्तु नर चूहों में 5 ग्रा. प्रति कि. ग्रा. औषध मात्रा से उल्लेखनीय मूत्रल सक्रियता ज्ञात की गई। इस सत्वकी विभिन्न मात्राओं का अल्पग्लूकोन रक्तता प्रभाव का अध्ययन कार्य प्रगति पर है। तथा परीक्षणफलों का विश्लेषण किया जा रहा है। रक्तस्राव काल एवं स्कन्दन काल पर इसके प्रभाव का अध्ययन कार्य प्रगति पर है। इस सत्व से रक्त निवेशित मेढक हृद विरेचना पर औषध मात्रा निर्भर हृद अवसाद प्रभाव पाया गया।

14. मोथा — भे. वि. अनु. ए. लखनऊ

इस पादप मूल चूर्ण का अध्ययन 1985 से विधिवत किया जा रहा है। जिससे कि आमवात, अस्तिसंधिशोथ एवं गाउट रोग में इसकी निदान चिकित्सात्मक उपयोगिता सुनिश्चित की जा सके। गत

कई वर्षों के परीक्षणफल एवं रोगी अधिमान उत्कृष्ट एवं अत्यन्त उल्लेखनीय है।

15. नीम — भे. वि. अनु. ए. लखनऊ

नीम से प्राप्त रवेदार पदार्थ – निम्बीन का आंत्र संक्रमण पर इसके प्रभाव को ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया गया। इससे संक्रमण में ह्रास हुआ परन्तु जठरांत्र संचलन वृद्धि वाले आंत्र रोगों में लाभकारी नहीं रहा। इस पादप का अध्ययन जारी है।

16. नीलिका (ईथाइल ऐसिटेट सत्व) — भे. वि. अनु. ए. कलकत्ता

इस सत्व का स्थानीय प्रयोग करने से विरोभित खरगोशों के रोग में उल्लेखनीय वृद्धि पाई गई। इस सत्व का अन्तः कोपण करने से बिल्लियों के रक्तदाब में उल्लेनीय अस्थाई ह्रासपाया गया तथा संवेदनादृत बिल्लियों में स्वशन उद्दीपन भी उत्पन्न हुआ। धवल चूहों में यह सत्व ट्रिपेनोसोमा क्रूजाई संक्रमण प्रतिरोधी प्रभार उत्पन्नकरने में असमर्थ रहा। इसका रोमवृद्धि, रक्तदाव तथा प्रतिजीवाणु गुणधर्म का प्रगामी अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

16. (ब) नीलिका (पेट्रोलियम ईथर सत्व) — भे. वि. अनु. ए. लखनऊ

यह ग्राम वर्ण ग्राही कॉक्सी से प्राकृतिक रूप से संक्रमित चूहों में पूय रचना उत्पन्न करता है। इस सत्व का स्थानीय प्रयोग करने से विरोमित खरगोशों में उनके रोमों में उल्लेखनीय वृद्धि पाई गई। इस सत्व का अन्तः क्षेपण करने से बिल्लियों के रक्तदाव में औषध मात्रा निर्भर ह्रास पाया गया तथा संवेदनाहृत बिल्लियों में आंत्र शिथिलन भी पाया गया। अल्प विद्युदाघात अभिग्रहण अवस्था में इस औषध का पूर्व एवं पश्चात मुखीय अवधारण करने से कोई प्रेरणा नहीं हो सका।

इसका अतिलोमता एवं अल्परक्तदाब सहसम्बन्ध अध्ययन प्रगति पर है।

17. पारूषा (पत्रों का पेट्रोलियक ईथर एवं ईथाइल ऐसिटेट सत्व) — भे. वि. अनु. ए. कलकत्ता

इन सत्वों को कैरागीनीन व्युत्पन्न पश्च पंजशोथ, वाले चूहों को मुख द्वार से दिया गया परन्तु ये सत्व शोथजरोधी गुणधर्म प्रदर्शित करने में असफल रहे। इन सत्वों का चूहों के पश्च पंजों के व्रणों पर स्थानीय प्रयोग तथा उन्हें मुखीय प्रयोग कराने से भी ये सत्व व्रण उपचारक क्रिया में प्रभावहीन पाए गए। इनका प्रतिजीवाणु एवं शोथज रोधी गुणधर्म संबंधी प्रगामी अध्ययन प्रगति पर है।

18. पर्पट — भे. वि. अनु. ए. लखनऊ

पर्पट 70% ईथनोलिक सत्व में तीव्र एवं जीर्ण प्रयोगात्मक धवल चूहों में इसका शोथजरोधी गुणधर्म पाया गया। इससे कैरागीनीन व्युत्पन्न चूहों के पश्च पंजे के शोथ तथा धवल चूहों में कपास कणिका व्युत्पन्न शोध में उल्लेखनीय शोथज परिवर्तन एवं ह्रास पाया गया। केन्द्रीय तंत्रिका संस्थान पर इसका अल्प अवसादन प्रभाव पाया गया। फोटोएक्टोमीटर से किए गए अध्ययन के अनुसार इससे प्राणियों की सक्रियता में ह्रास हुआ। इडी हॉट प्लेट पर इसकी अल्प वेदनाहर सक्रियता ज्ञात की गई। इसके साथ ही चूहों में इसकी प्रतिबलारोधी सक्रियता होने का भी अध्ययन किया गया।

परीक्षणफल सन्तरण स्थिर रहने वाला था यह पादप सत्व इस प्रकार की किसी भी सक्रियता सेयुक्त था और वास्तव में नियंत्रण वर्ग के प्राणियों की तुलना में इसके चूहों के सन्तरण स्थिरता में ह्रास हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें तंत्रिकापेशी अवरोध सक्रियता होती है जिसका विधिवत परीक्षण किया जाएगा।

पर्पट का धवल चूहों के आंत्र संक्रमण पर भी इसका प्रभाव ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया गया और इस समष्टिज पर इसका कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

19. **पाटला** **भे. वि. अनु. ए. लखनऊ**

ऐल्कोहलिक सत्व (70%) का प्रयोग भेषजगुण विज्ञान अध्ययन के लिए किया गया। इससे अल्प अवसाद उत्पन्न हुआ तथा प्राणियों की सामान्य सक्रियता में ह्रास हुआ। इसका फोटोएक्रोमीटर से परीक्षण करने पर पाया गया कि इससे गतिसक्रियता में ह्रास हुआ। इडी डॉरप्लेट परीक्षण से इसमें वेदनाहर सक्रियता ज्ञात की गई।

20. **पुष्करमूल** **भे. वि. अनु. ए. लखनऊ**

पुष्करमूल का 1982 से तमकश्वास के रोगियों पर निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन किया जा रहा है तथा यह कार्य क्रमबद्ध है।

21. **तुलसी** **भे. वि. अनु. ए. लखनऊ**

तुलसी का ऐल्कोहलिक सत्व एक सुप्रसिद्ध प्रतिअवरोधी औषध है। इसका उल्लेख पूर्व प्रतिवेदनों में किया जा चुका है। धवल चूहों में इसका आंत्र संक्रमण निरोधक प्रभाव पाया गया। यह गुणधर्म प्रतिवलरोधी गुणधर्म के अतिरिक्त व्रणरोधी प्रभाव में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

22. **आयुष-56** **भे. वि. अनु. ए. लखनऊ**

इस औषध से चूहों के अल्प विद्युदाघात प्रतिरक्षण में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ। इससे चूहों में सुनिश्चित वेदनाहर प्रभाव पाया गया। इससे सीएआर पर प्रभाव पाया गया परन्तु यह चूहों के सीइआर में बाधा उत्पन्न करने में असमर्थ रहा, इस औषध से चूहों की सीख प्रक्रिया पर कोई प्रभाव नहीं हुआ (वाई मैज विधि)।

इसका अपस्मार रोधी गुणधर्म ज्ञात करने के लिए प्रगामी अध्ययन किया जा रहा है।

23 एवं 24. **रॉकी एन$_1$, रांकी एन$_2$** **के. अनु. सं. बम्बई**

इस औषध की 250 एवं 500 मि. ग्रा./कि. ग्रा. शरीर भार की औषध मात्रा एवं 0.5% मेथाइल से ल्यूलोज आसवित जल में घोल कर चार सप्ताह की अवधि तक 10 मादा धवल चूहों को मुख द्वार से दी गई। अध्ययन अवधि में अनेक समष्टिजों यथा आहार एवं पानी पीना सामान्य व्यवहार एवं मृत्युदर, शरीर भार पर प्रभाव, रुधिर विज्ञानीय अध्ययन जीव रासायनिक परीक्षण, मूत्र विश्लेषण एवं प्रत्येक अध्ययन के अन्त में प्राणियों का बध कर उनके प्रमुख भागों का विकृतिविज्ञानीय परिवर्तन ज्ञात करने हेतु परीक्षण किया गया।

परीक्षण के समय इस औषध में कोई विषाक्तता नहीं पाई गई।

25. **क्वर्सेटिन** भे. वि. अनु. ए. वाराणसी

इस औषध का संवेदनशील एवं असंवेदनशील गिनीपिग्गो एवं चूहों पर (i) मास्ट कोशिका एवं (ii) दल–सल्तज प्रतिक्रिया विधि से विस्तृत प्रतिरक्षा–भेषजगुण विज्ञानीय अध्ययन किए गए, परीक्षणफलों से संकेत मिलता है कि इसमें मास्ट कोशिका पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है तथा ज्ञात होता है कि इनसे प्रतिरक्षण क्रिया विधि में कोई विशेष अन्तर उत्पन्न नहीं होता है।

भैषजिक अनुसंधान/मानकीकरण अध्ययन

परिषद के भेषज निर्माण प्रक्रिया एवं औषध योगों के मानक निर्धारण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए विश्लेषणात्मक मानक तैयार करने से संबंधित कार्य किया है जो भारत सरकार की भेषज संहिता में वर्णित है। यह अध्ययन अपने आप में महत्वपूर्ण है, क्योंकि विश्लेषणात्मक आंकड़े अनुसंधान एककों द्वारा निर्मित औषधियों पर आधारित हैं। इससे औषध के घटकों की प्रमाणिकता, विशुद्धता के साथ ही निर्माण विधि को प्रमाणित करने में सहायता मिलती है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि औषध अनुसंधान कार्यक्रमों में भैषजिक अनुसंधान की मूलभूत आवश्यकता होती है। औषध निर्माण में यह कार्यक्रम महत्वपूर्ण है इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

उपर्युक्त तथ्यो को ध्यान में रखते हुए परिषद ने एकौषधियों, औषध निर्माण विधियों एवं निर्मित औषधियों/औषध योगों तथा रस, तैल आदि का मानकीकरण अनुसंधान प्रारंभ किया है। इसके अतिरिक्त अनुसंगी अध्ययन भी किए गए हैं, जैसे औषध को पात्र में रखने की विधि और सुरक्षा आकलन और परीक्षण जिनकी आयुर्वेदिक भैषजिक विज्ञान में प्रासंगिकता है। एकौषधियों, निर्माण विधि एवं उत्पाद्य योगों का मानवकीकरण अध्ययन क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान त्रिवेन्द्रम, कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान संस्थान, मद्रास, संयुक्त अनुसंधानीय एकक, ताडीखेत तथा औषध मानकीकरण अनुसंधान परियोजना, गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर में किया जा रहा है। क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, बंगलौर में औषध योगों एवं औषधियों का मानकीकरण अध्ययन किया जा रहा है तथा शीघ्रता सेविश्लेषणात्मक निष्कर्ष निर्धारण कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान संस्थान, मद्रास एवं औषध मानकीकरण अनुसंधान परियोजना, जामनगर तथा वाराणसी द्वारा किया जा रहा है।

प्रमाणित औषध योगों पर जिसमें विभिन्न अनुपात औषध द्रव्य उपयुक्त होते हैं, इसमें प्रमाणिक औषधियों के पहचान के लिए तथा औषध मानकीकरण के क्षेत्र में नए रूप में औषधियों के विश्लेषणात्मक मूल्यों और विशिष्ट पृथ्ककीकृत द्रव्यों को करने से संबंधित औषध मानकीकरण के क्षेत्र में कार्य कर रहे विशिष्ट अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया। परिषद द्वारा औषधियों के प्रमाणिक औषध योगों की सही पहचान करने के लिए कदम उठा रही है।

निम्नलिखित एकौषधियों औषध निर्माण विधियों निर्मित उत्पाद्यों के मानकीकरण अनुसंधान एवं भारत सरकार की आयुर्वेदीय भैषज निर्माण संहिता भाग–1 एवं 2 में सम्मिलित औषध योगों के विश्लेषणात्मक मानक निर्धारित करने से संबंधित इस वर्ष में किए गए अनुसंधान कार्य के विवरण नीचे दिए गए हैं:–

एकौषध

निम्नलिखित एकाकी औषधियों के भौतिक/रासायनिक अध्ययन किए गए :–

औषध	अनुसंधान एकक
कुटज	क्षे. अनु. के. ब., कै. श्री. मू. औ. अनु. सं. म.
मुर्वा	क्षे. अनु. क. बं.
अर्द्रक	,,
हरिद्रा	,,

कदली	औ. मान. अनु. परि. जा.
पाषाणभेद	"
तामलकी	औ. मान. अनु. परि. जा., क्षे. अनु. सं. त्रि.
भृंगराज	औ. मान. अनु. परि. जा.
बाकुची	"
जम्बू	"
अस्थिश्रृंखला	"
मधूक	"
अपामार्ग	"
अम्लवेतस	"
अपराजिता	"
आत्मगुप्ता	"
कटुकी	औ. मान. अनु. परि. जा.
दाड़िम	"
काकमाची	"
पाटला	"
अर्जुन	"
अजमोद	"
चव्य	कै. श्री मू. आयु. औ. अनु. सं. म.
कंकोल	"
चित्रक मूल	"
बिभीतक फल	"
भारंगी भेद	"
रक्त चंदन	"
पाटला भेद	"
कर्कट श्रृंगी भेद	"
कुटज	"
वेन्कूंगलियम	"
निम्ब पुष्प	"
निम्ब बीज	"
मरा मंजाल	"
नागकेसर	"
पद्म का भेद	"
पद किलंगु	"
वन्ध्यावरी	"
नीलपन्नी किलंगू	"
वचा	"
बिल्व	"
पलाश पुष्प	"
शालिपर्णी	कै. श्री. मू. औ. अनु. सं. आयु. म.
यवतिक्त	"
सहचर	"

46

गुंजा	,,
वृश्चिकाली	,,
कांचनार	,,
कुमकुम	,,
आरग्वध	,,
चक्रमर्द	,,
मुस्ता	सं. अनु. ए. ता., क्षे. अनु. सं. त्रि.
साल सार	सं. अनु. ए. ता., क्षे. अनु. सं. त्रि., औ. मान. अनु. परि. वा.
भल्लातक	,,
वसा	,,
निम्ब	,,
शोधित गुग्गुलु	,,
वट	क्षे. अनु. सं. त्रि.
किराततिक्त	,,
निम्ब पत्र	,,
विजया	,,
मूसली	,,
आवर्तकी	,,
अश्वत्थ	,,
ब्राह्मी	,,
द्रोणपुष्पी	,,
चिंचा	,,
त्रिवृत् भेद	,,
धतूर	,,
गंभारी	,,
गोक्षुर	क्षे. अनु. से.. त्रि.
पाठा	,,
कैतकी	,,
पिप्पली	,,
अर्क	,,
स्योनाक	,,
मंजिष्ठा	,,
त्वक्	,,

निर्माण विधि :

चालू वर्ष में निम्नलिखित निर्माण विधियों का अध्ययन किया गया था :-

रस	औ. मान. अनु. परि. जा.
चूर्ण	कै श्री. मू. अनु. सं. आयु. म.
अवलेह	,,
घृत	सं. अनु. ए. ता.
तैल	,,

प्राथमिक विश्लेषणात्मक मूल्यांकन

निम्नलिखित औषध योगों के विश्लेषणात्मक आंकड़े/मूल्यांकन निर्धारित किए गए:-

महाज्वरंकुश रस	औ. मान. अनु. परि. जा.
पुष्पधन्वा रस	"
लीलाविलास रस	कै. श्री. मू. औ अनु. सं. आयु. म.
बृहत् श्रृंगर्भ रस	"
महा गंधक वटी	"
ताम्र पर्पटी	"
महा वातविध्वंसन रस	"
तालीशादि चूर्ण	"

निर्मित उत्पाद्य

निम्नलिखित औषध योगों के मूल्यांकन निर्धारित करने के लिए अध्ययन किए जा रहे हैं:-

भृंगराज तैल	क्षे. अनु. के. बं.
पंचतिक्त क्वाथ	"
आरोग्यर्धिनी गुटिका	"
कुटजारिष्ट	"
लोकनाथ रस	औ. मान. अनु. परि. जा.
ताम्र भस्म	"
वराटिका भस्म	"
अभ्रक भस्म	"
आम्लक्यादि चूर्ण	कै. श्री. मू. औ. अनु. सं. आयु. म.
पंचसम चूर्ण	"
तालीसाद्य चूर्ण	"
च्यवनप्राश	"
एलादि घृत	सं. अनु. ए. ता.
सोमराजी तैल	"
गोक्षुरादि गुग्गुलु	"
नयोपयूम क्वाथ चूर्ण	क्षे. अनु. सं. त्रि.
अर्क वटी	"
बोलादि वटी	"
दशमूल क्वाथ चूर्ण	"
पर्थाधरिष्ट	"
कनकासव	"
समंगादि चूर्ण	"
कटफलादि चूर्ण	"
दसन संस्कार चूर्ण	"
मृद्वीकारिष्ट	"

बलाजीरकादि क्वाथ चूर्ण	सं. अनु. ए. ता.
ज्वरांकुश रस	,,
बेताल रस	,,
ताम्र पर्पटी	,,
लवंगादि वटी	,,
पंचगव्य घृत	औ. मान. अनु. परि. जा.
अशोक घृत	औ. मान. अनु. परि. वा.
कर्पासास्थ्यादि तैल	,,

33

विविध अध्ययन :-

श्योनाक तथा वन्ध्यावरी का ज्वर विषयक अवरोधी अध्ययन किया गया। दोनों औषधियों का कुछ भी प्रभाव नहीं पाया गया। विकोलोइड से विकोइंडिका पर अध्ययन करने से इनमें अवासेधी प्रभाव का परिणाम कुछ अंश तक देखा गया। कुछ औषध पादपों का अध्ययन वैक्टीरिया अवरोधी तथा कैंसर अवरोधी के रूप में किया जा रहा है।

त्रिभुवनकीर्ति रस, बलाजीरकादि चूर्ण, गोक्षुरादि गुग्गुलु, एलादि घृत, सोमराजी तैल, कुछ औषध योग, पात्रों में रखने से उनके वीर्यकाल संबंधी अध्ययन को किया गया।

कस्तूरी मृग वंशवृद्धि कार्यक्रम :

परिषद द्वारा संचालित कस्तूरी मृग वंश वृद्धि फार्म में 23 मृग हैं जो छः माह से लेकर नौ वर्ष की अवस्था के हैं। इनके वंश वृद्धि की क्षमता का अध्ययन तथा बिना किसी शारीरिक क्षति पहुंचाए हुए जानवरों से कस्तूरी प्राप्त की गई।

वाङ्मय अनुसंधान कार्यक्रम

वाङ्मय अनुसंधान एवं चिकित्सा अनुसंधान कार्यक्रम, भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद, प्रलेखएवं प्रकाशन प्रभाग, नई दिल्ली तथा वाङ्मय अनुसंधान एकक तंजौर द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत चिकित्सा इतिहास अध्ययन, औषध एवं रोगों के विषय में संदर्भ संकलन एवं संग्रह, आयुर्वेद के शास्त्रीय ग्रंथों तथा संबन्धित चिकित्सा विज्ञान साहित्य से मुख्य रूप से करना है। प्रतिवेदन अवधि में जो कार्य विभिन्न केन्द्रों, संस्थानों, एकको द्वारा किये गये हैं, उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, हैदराबाद

भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, अनुसंधान कार्य के अंतर्गत चिकित्सा इतिहास लेखन एवं प्रकाशन का कार्य कर रहा है। चिकित्सा इतिहास के संकलन का कार्य विशेषकर भारतीय चिकित्सा पद्धति से संबद्ध संदर्भों के उद्भवस्त्रोतों की जानकारी प्राप्त करने पर बल दिया गया है इसके अंतर्गत पाण्डुलिपियों का संग्रह, उनपर अध्ययन, पुरानी और दुलर्भ पुस्तकों को प्राप्त करना, बहुमूल्य साहित्य ग्रंथों का अनुवाद कार्य सम्पादन, चिकित्सा-इतर स्रोतों से चिकित्सा विज्ञान की सूचना प्राप्त करना, पुरातत्वीय एवं शिलालेखों के स्रोतों से संबद्ध साहित्य, इसके अतिरिक्त परम्परागत चिकित्सकों से चिकित्सा इतिहास की सूचनाएँ संग्रह करना इत्यादि सम्मिलित हैं। यह संस्थान एक पत्रिका भी निकालता है इसके साथ ही चिकित्सा इतिहास पुस्तकालय एवं संग्रहालय भी इसके अंतर्गत कार्यरत है।

एक पाण्डुलिपि "कामतकार निघण्टु" का अध्ययन किया गया एवं उसका सम्पादन समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ किया गया। आयुर्वेदिक पाण्डुलिपियों पर सूचना संग्रह के लिए पूना (महा0) को एक दल भेजा गया और 20,150 पाण्डुलिपियों को देखा गया, उनमें से 250 पाण्डुलिपियां आयुर्वेद चिकित्सा साहित्य की उपलब्ध हैं, जिनमें से 99 को विस्तृत अध्ययन के लिए चुना गया। चिकित्सा पाण्डुलिपियों से सूचनाएँ संकलन के लिए हैदराबाद के संग्रहालय में जो 1000 पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध थी उनका भी अध्ययन किया गया। भारतीय गुणवर्धक संस्थान के अन्तर्गत एक प्राचीन पुस्तक जो हैदराबाद में है, उसका भी इसी संदर्भ में अवलोकन किया गया।

हैदराबाद में निज़ाम राज्य के 30 चिकित्सकों के जीवन परिचय का अनुवाद कार्य किया गया और इस्लामी तिब्ब का अंमित अध्याय भी पूरा किया गया। चिकित्सा विज्ञान इतिहास के विषय के लेखों का 1983 की हिंदी पत्रिकाओं से उनका अंग्रेजी सारांश तैयार किया गया। "लिज्जत-उल-निसा 'मुहम्मद शाह द्वारा लिखी गई जो पद्य के रूप में पुस्तक है, कोकशास्त्र पर पर्शियन अनुवाद कार्य का संकलन गोलकुण्डा के अब्दुल्लाह कुतुबशाह की अवधि में किया गया है, उसका कार्य प्रगति पर है।

इस संस्थान के अंतर्गत एक विशिष्ट चिकित्सा इतिहास पुस्तकालय है। प्रतिवेदन अवधि में इस पुस्तकालय में आने वाले पाठकों की वृद्धि हुई है। बहुत से विद्वानों और अनुसंधानकर्ताओं को संस्थान द्वारा लेख/पुस्तकों आदि को पुनर्चित्रण सेवायें भी दी गई। इसके अतिरिक्त पाण्डुलिपियों, ताड़पत्र इत्यादि के सूक्ष्म चित्रण की प्रतियाँ भी दी गई हैं।

18 चित्रों को संग्रहालय के अंतर्गत रखे गये चक्रीकार पट्ट पर लगाया गया है। चिकित्सकों के चित्रों को एक बड़ी पट्टी में तैयार करके लगाया गया है। धन्वन्तरि एवं पारहिता के, हाथ से बनाये गये दो चित्र तैयार किये गये हैं।

भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान की पत्रिका के 3 अंक (1–2 अंक भाग, 17/1987 एक अंक, भाग 18/1988 का प्रकाशित किया जा चुका है।

वाङ्मय अनुसंधान एकक, तंजौर

शतश्लोकी तथा नानाविधि वैद्यम् इन दो पाण्डुलिपियों को मूल प्रतियों से मिलाया गया और प्रकाशन हेतु उनकी शुद्ध प्रतियां तैयार की गई।

रसराजलक्ष्मी एवं कौमारतंत्रम् (एक संस्कृत पाण्डुलिपि जो मलयालम से अनुवाद की गई) तथा पिल्लपिनीवापतम् इन तीन पाण्डुलिपियों की प्रतियां तैयार की गई तथा उन्हें मूल प्रतियों से मिलाया भी गया और उनकी शुद्ध प्रतियां प्रकाशन हेतु तैयार की गई। इसके अतिरिक्त "बोलवापतम्" एक दूसरा कार्य जो तमिल से संस्कृत में अनुवाद किया गया उसकी तुलना कर एक शुद्ध प्रति तैयार की गई।

इस एकक ने सरभेन्द्रवैद्यरत्नावली (संस्कृत प्रति) के संशोधित प्रति तथा संपादन कार्य में सहयोग दिया। चिकित्सामृतसागर का तमिल से संस्कृत अनुवाद का पुनरीक्षण कर प्रकाशन प्रति तैयार करने में सहयोग दिया।

इस एकक के अंतर्गत एक पुस्कालय भी चल रहा है जिसमें 11,000 पुस्तकों एवं 800 ताड़–पत्र पाण्डुलिपियों जिनका रखरखाव इस एकक द्वारा किया जाता है।

प्रलेख एवं प्रकाशन प्रभाग, नई दिल्ली

प्रलेख अनुभाग द्वारा एकाकी औषधियों के 169 संदर्भ एकत्र किए गए। कृमि रोग पर 60 संदर्भ एवं अर्बुद रोग पर 93 संदर्भ, बृहत्त्रयीएवं माधव निदान से एकत्र किए गए। चक्रदत्त एवं भैषज्यरत्नावली से अबुर्द रोग के एवं शारंङ्धर संहिता व भावप्रकाश से कृमि रोग के लिए उपरोक्त पुस्तकों के अतिरिक्त इन पुस्तकों से भी संदर्भ संकलित किए गए। पाण्डु रोग पर योगरत्नाकर तथा बंगसेनआयुर्वेद ग्रंथों से संदर्भ संकलन का कार्य पूरा किया गया।

प्रलेखन एवं तकनीकी अनुभाग द्वारा आयुर्वेद की पत्रिकाओं से 275 सारांश संग्रहीत किए गए और साथ ही 17 तकनीकी संदर्भों की पूछताछ की आपूर्ति की गई। इसके अतिरिक्त परिषद् मुख्यालय एवं परिषदेतर संस्थाओं को भी संदर्भ संकलन संबंधी सहयोग दिया गया। यह अनुभाग त्रैमासिक प्रलेखन पत्रिका भी प्रकाशित करता है जिसमें पत्रिकाओं/तकनीकीरिपोर्टों/सभा संगोष्ठियों आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा से संबन्ध सम-सामयिक शोध लेखों की जानकारी देता है। इस पत्रिका के 1 से 9 तक के भाग, लेखक एवं लेख विषयों की संदर्भ सूची, जामनगर के शोध प्रबंधों तथा इसके अतिरिक्त आयुर्वेद के ग्रथों से भी लगभग 3000 पारिभाषिक शब्दावली तैयार की गई ।

पुस्तकालय

पुस्तकालय में 359 पुस्तकों की वृद्धि की गई जिसमें 6 पाण्डुलिपियों की जीरोक्स प्रतियां तथा 4 दुर्लभ पुस्तकों को भी सम्मिलित किया गया है।

छायाचित्र अनुभाग द्वारा 8 बैठकों/सभा संगोष्ठियों का छायाचित्रण कार्य पूरा किया। 260 कृष्ण एवं श्वेत तथा 236 रंगीन छायाचित्र लिए गए जिसमें से 111 कृष्ण-श्वेत तथा 106 रंगीन छायाचित्र तैयार कर लिए गए हैं। 244 कृष्ण श्वेत तथा 42 रंगीन प्रक्षेपण पट्टिकाएं तथा इसके साथ ही 144 औषधियों की रंगीन प्रक्षेपण पट्टिकाएं भी तैयार क गई। परिषद क गतिविधियां एवं उपलब्धियों पर तैयार किए गए प्रलेखी वृत्त चित्र 3 बैठकों/सम्मेलनों में दिखाए गए तथा सभी परिषदों के संयुक्त भवन के शिलान्यास समारोह की वीडियो रिकार्डिंग की गई।

मुद्रण अनुभाग

मुद्रण अनुभाग द्वारा बहुत से मुद्रण कार्य किए गए जो 2,49,616 पृष्ठों का मुद्रण किया गया तथा 50,316 पृष्ठों का साइक्लोस्टाइल और 57,404 पृष्ठों की जीरोक्स प्रतियां तैयार की गईं।

परिषद के प्रकाशन अनुभाग द्वारा आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका के 8 अंकों (1987-88) एवं चिकित्सा प्रजीतीय - वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका के 10 अंक (1986-88) तैयार किए गए और उन्हें मुद्रण के लिए प्रेस भेजा गया जिनमें से सभी 8 अंक आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका तथा 8 अंक चिकित्सा प्रजाजीय-वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका के प्रकाशित हुए। प्रतिवेदन अवधि में 6 पुस्तके/मनोग्राफ भी प्रकाशित किए गए। इसके अतिरिक्त द्विमासिक परिषद समाचार के 5 अंक (सितम्बर-अक्टूबर) तक के प्रकाशित किए गए।

परिवार अनुसंधान कार्यक्रम

परिषद के अंतर्गत निदान–चिकित्सात्मक अनसंधान एवं रसायन–भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम चलाया जा रहा है। निदान–चिकित्सात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत औषध पादपों/औषध पादप उत्पाद्यों के मुखीय प्रयोग द्वारा गर्भनिरोधी प्रभाव का मूल्यांकन किया जाता है और रसायनभेषजगुण विज्ञानीय अध्ययन के अंतर्गत परीक्ष जंतुओं पर प्रतिरोपणरोधी, डिंबिकारोधी तथा साथ ही साथ मदचक्र का प्रभाव भी ज्ञात किया जाता है। कुछ औषधियों के विषाक्तता प्रभाव का अध्ययन भी उनके विषाक्तता संबंधी प्रभाव को ज्ञात करने के लिए किया जाता है। अभी तक किए गए कार्यों को एकत्र कर उसके जो परिणाम आये हैं उस पर आधारित विनिबंध का प्रारूप तैयार किया गया है।इन्हीं दोनों प्रकार के अनुसंधान पहलुओं पर प्रतिवेदन अवधि में जो कार्य किया गया है उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है:–

निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान

इस प्रतिवेदित अवधि में अहमदाबाद, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, जयपुर, लखनऊ, पटियाला मद्रास, त्रिवेन्द्रम तथा वाराणसी में कार्यरत एककों द्वारा औषध पादपों/औषध पादप उत्पाद्यों पर निदान–चिकित्सात्मक अनुसंधान अध्ययन मुखीय प्रयोग द्वारा किया गया। जिन औषधियों पर अध्ययन किया गया है वह निम्नलिखित हैं:–

अ) आयुष ए. सी. –4 (कूट भेषज)
ब) पिप्पल्यादि योग
स) के. केपसूल (कूट भेषज)
द) नीम तैल
ई) वंध्यावरी

निम्नतालिका में इस वर्ष के नए रोगियों, गत वर्ष के पुराने रोगियों, इस वर्ष की समाप्ति तक चिकित्सा छोड़कर चले गए रोगियों तथा वर्ष के अंत तक अध्ययनरत अलग से रोगियों का विवरण प्रत्येक औषधियों पर दर्शाया गया :–

तालिका

गर्भनिरोधक औषधियों पर निदान–चिकित्सात्मक अध्ययन

औषध का नाम	केन्द्र	अध्ययनरत महिला संख्या इस वर्ष में पंजीकृत रूग्ण संख्या	गत वर्ष से अध्ययनरत रूग्ण संख्या	अध्ययन विमुक्त महिला संख्या औषध असफलता	सगर्भता औषध विलोपन	अनुषंगी प्रभाव	अन्य कारण	परीक्षण अध्ययनरत महिलाओं की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9
आयुष एसी–4	लखनऊ	28	79	1	5	–	12	89
	त्रिवेन्द्रम	49	101	1	1	–	66	82
	बम्बई	–	17	1	–	–	4	12
	जयपुर	41	4	5	14	17	9	–
	पटियाला	29	7	–	5	1	22	8

1	2	3	4	5	6	7	8	9
	मद्रास	4	21	–	–	–	25	–
	कलकत्ता							
	वर्ग–I	–	7	–	1	–	3	3
	वर्ग–II	31	16	2	1	1	32	11
	दिल्ली	8	6	–	–	–	9	5
पिप्पल–	अहमदाबाद	15	39	–	3	1	9	41
यादि	कलकत्ता	30	12	1	1	–	21	19
योग	वाराणसी	7	93	7	–	–	36	57
के कैप	दिल्ली	22	–	–	3	–	8	11
सूल नीम	अहमदाबाद	3	6	1	–	–	–	8
तैल	वाराणसी	55	27	6	–	2	10	64
वैध्यावरी	त्रिवेन्द्रम	13	4	–	1	–	9	7
	बम्बई	68	32	3	–	–	–	97
	दिल्ली	20	9	1	–	–	15	13

रासायनिक भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन

रासायनिक भेषजगुणविज्ञानीय अध्ययन, भुवनेश्वर, जूनागढ़, त्रिवेन्द्रम तथा वाराणसी में कार्यरत एककों द्वारा किया गया। इन एककों द्वारा जो कार्य किया गया, उसका विवरण नीचे दिया जा रहा है:–

1. पपीता भे. वि. अनु. ए. (परि. क.) भु.

यह अध्ययन 50 मि. ग्रा., 100मि. ग्रा. एवं 200 मि. ग्रा./कि. ग्राम शरीर भार के 48 सगर्भतायुक्त मादा चूहों को चार वर्गों में विभक्त कर पपीता फल के जलीय सत्व पर किया गया। प्रथम वर्ग को 100 मि. ग्रा./कि. ग्रा. की मात्रा दी गई। चौथा वर्ग नियंत्रित वर्ग था। दस दिवस वाले सगर्भिता चूहों में औषध प्रभाव दिन में तीन मात्राएं देने पर वर्गानुसार क्रमशः 16.66%, एवं 41.60% पाया गया।

2. अजमोद भे. वि. अनु. ए. (परि. क.) भु.

अजमोद के जलीय सत्व के प्रभाव का अध्ययन 32 सगर्भता वाले चूहों में उपर्युक्त पपीता औषध के आधार पर ही किया गया। दस दिन की सगर्भता वाले चूहों में 3 मात्रा देने पर क्रमशः प्रभाव 25%, 35.5% एवं 62.5% पाया गया।

3. जपाकुसुम भे. वि. अनु. ए. (परि. क.) भु.

(अ) नर चूहों में प्रजननरोधी प्रभाव

इस औषध को 200 मि. ग्रा./किलो ग्राम शरीर भार की मात्रा मे नर धवलचूहों में दिया गया। इस औषध के 200 मि. ग्रा./किलो. ग्रा. शरीर भार वाले युवा नर धवल चूहों के बृषण एवं अधिबृषण में अधिक समय तक चिकित्सा करने से नियंत्रित वर्ग की तुलना में उल्लेखनीय कमी देखी गई। शुक्राणु मृत्यु दर में 30 दिन तक की चिकित्साा करने के बाद कमी पाई गई। 45 दिवसीय चिकित्सा करने पर शुक्राणु मृत्यु दर मे निययंत्रित वर्ग की तुलना में उल्लेखनीय कमी पाई गई।

(ब) एस्ट्रोजेनिकता प्रभाव

यह अध्ययन मादा चूहों के तीन वर्गों पर किया गया। प्रत्येक वर्ग में छः प्रायोगिक जंतु थे। औषध ने गर्भ पर एस्ट्रोजेन क्रिया का प्रतिरोध किया जो कि प्रतिरोपणके लिए आवश्यक है, उदाहरणार्थ– अंतर्गर्भाशियकला के परीक्षण से प्रतिकूल वातावरण बना।

(स) तीव्र–विषाक्तता भे. वि. अनु. ए. (परि. क.) भु.

5000 मि. ग्रा./किलो ग्रा. शरीर भार की अधिकतम मात्रा में औषध दिये जाने पर भी किसी भी प्रकार की तीव्र विषाक्तता नहीं पाई गई।

(द) तीव्र–विषाक्तता भे. वि. अनु. ए. (परि. क.) भु.

500 ग्रा./प्रति कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध देने पर किसी प्रकार की तीव्र विषाक्तता नहीं पाई गई।

(इ) प्रतिरोपणरोधी क्रिया भे. वि. अनु. ए. (परि. क.) भु.

1000 मि. ग्रा./प्रति कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा अल्कोहलिक सत्व दिये जाने पर चूहों में रोपणरोधी क्रिया पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया गया (केवल 33.3%) फिर भी नियंत्रित वर्ग की तुलना में चूहों में रोपण संख्या में उल्लेखनीय कमी पाई गई। 250 मि. ग्रा./प्रति कि. ग्रा. की मात्रा में एसीटोन सत्व देने पर 5% सक्रियता रोपण एवं पीतपिन्ड की संख्या में कमी पाई गई।

1000 मि. ग्रा./प्रति कि. ग्रा. शरीर भार की अधिकतम मात्रा में औषध देने पर किसी भी प्रकार का उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पाया गया।

4. टंकण भे. वि. अनु. ए. (परि. क.) त्रि.

(अ) तीव्र–विषाक्तता धवल चूहों एवं मूसों में 5 ग्रा./प्रति कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध देने पर किसी प्रकार की मृत्यु दर नहीं देखी गई। ये मूसों में मृत्यु दर 50 से 75% थी और धवल चूहों में 10 ग्रा./प्रति कि. ग्रा. एवं 20% ग्रा./प्रति कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में क्रमशः औषध देने पर 25% और 100% मृत्यु दर पाई गई।

(ब) रोपण प्रतिरोधी क्रिया

500, 1000 तथा 2000 मि. ग्रा./प्रति कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध देने पर कोई विशेष उल्लेखनीय क्रिया नहीं देखी गई। परन्तु 2000% मि. ग्रा./प्रति कि. ग्रा. की मात्रा में औषध देने पर 25% रोपण–रोधी प्रभाव तथा 75% रोपण क्रिया में कमी पाई गई।

5. निर्गुण्डी भे. वि. अनु. ए. (परि. क.) वा.

इस पादप का रासायनिक परीक्षण किया गया और दो रासायनिक संघटकों (बी–सीटोस्ट्रोल एवं बी–सीटोस्ट्राले का पृथ्कीकरण किया गया। ये दोनों यौगिक प्रायोगिक जंतुओं पर परीक्षण करने पर इनमें प्रजननरोधी प्रभाव नहीं पाया गया। अन्य औषध पादप यौगिकों की जड़ों का विश्लेषण पृथकीकरण प्रगति पर है।

(अ) प्रजननरोधी प्रभाव

यह अध्ययन प्रतिवेदन अवधि में प्रारंभ किया गया और अब तक केवल एक मात्रा पर ही अध्ययन किया गया। दूसरा प्रायोगिक मात्रा परिवर्तित कर प्रारंभ किया गया।

(ब) डिम्बक्षरणरोधी प्रभाव

50 मि. ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार की मात्रा में प्रति दिन परीक्ष्य औषध देने पर स्त्री मदचक्र में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

प्रकाशन/सहयोग

1-प्रकाशन

क्र. स.	लेखक का नाम	लेखक शीर्षक या शोधपत्र का शीर्षक	पत्रिका का नाम	प्रकाशन तिथि
1	2	3	4	5
	निदान चिकित्सात्मक एवं मौलिक अनुसंधान			
	या			
ए.	**निदान चिकित्सा एवं मौलिक सिद्धान्त**			
1.	जे. पी. जैन एवं एस. एम. ए. नक्वी	पलाशकानिदानचिकित्सात्मक प्रयोग (बुटीमोनास्पेर्मा) (लैम.) कुजे इन वर्म इंसपेक्स्टेशन (क्रिमिरोग)	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनु.,पत्रिका, अंक 7(1-2) 13-22	**अप्रैल, 1986**
2.	आर. बी. नैयर, बी. रविशंकर, एन. पी. विजयन, पी. के. एन. नम्बूदिरी, टी. वी. मेनेन, वी. एन. सरस्वती, पी. टी. पंकज वेली, एस. सुलोचना	आमाशयिक क्रिया पर माष तैल का प्रभाव, पूर्ण कोलेस्ट्राल एवं पक्षाघात रोगियों मे सीरम प्रोटीन - वैद्युतकण - पद्धति	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनु. पत्रिका, अंक 8 (1-2) 17-29	**1987**
3	जी. पाण्डेय	मानस रोग प्रतिकार का चरक सम्मत सम्बोध	आयुर्वेद विकास अंक 27(6), 21-24	जून, **1988**

1	2	3	4	5
4.	जी. पाण्डेय	आन्त्र निदान चिकित्सा हेतु चरक का भेषज उपचारार्थ योगदान	सचित्र आयुर्वेद (आन्त्र रोगांक (41)7 (:13-15)	जनवरी, 1989
5.	वी. एन. पाण्डये, के. डी. शर्मा	हृदय रोग की चिकित्सा में आयुर्वेद का वैज्ञानिक दृष्टिकोण	आयुर्वेद विकास अंक 27(8)	अगस्त, 1988
6.	आर. ए. प्रसाद	शिरोरोग में रसायन के रूप में त्रिफला का प्रयोग ।	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका 75(12):45-47	दिसम्बर, 1988
7.	आर. ए. प्रसाद	रक्तस्राव का निदान (असृग्दर)	आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका 75(3):37-39	मार्च, 1988
8	प्रेम किशोर एवं एम. के. चतुर्वेदी	चिरकारी श्लीपद (एलेफैन्टीयासिस) के उपचार में कतिपय वानस्पतिक योगों का मूल्यांकन	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनु. पत्रिका अंक नं. 1-2: 1-2	मार्च-जून, 1986
9.	प्रेम किशोर, एन. एस. तिवारी, एम. के. चतुर्वेदी	तीव्र श्लीपद में आयुष-64 के प्रभाव का चिकित्सात्मक मूल्यांकन ।	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनु. पत्रिका 7(3-4): 101-109	सितम्बर दिसम्बर 1986

1	2	3	4	5
10.	प्रेम किशोर, एन. एस. तिवारी, एम. के. चतुर्वेदी	अम्लपित्त (नानल्सर डिस्पेप्सीया) के उपचार में अविपत्तिकर चूर्ण के प्रभाव का निदान चिकित्सात्मक मूल्यांकन।	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनु. पत्रिका अंक (3-4)	सितम्बर - दिसम्बर 1987
11.	वी. पी. तिवारी	आंत्रिक रोग और आप का आहार विहार	सचित्र आयुर्वेद	जनवरी, 1989
(ब) स्वास्थ्य रक्षा एवं मौलिक अनुसंधान :-				
12.	गोपकुमार	आरोग्यम् अटुक्कलाजील भाग - I और भाग - II	आयुर्वेद चन्द्रिका	अक्टूबर, 1988
(स) औषध-वानस्पतिक सर्वेक्षण एवं कृषि :-				
13.	के. वी. बिल्लोरे, आर. मिश्र एवं विष्णुप्रियाधर	राजस्थान के सामाजिक वानिकी वनरोपण में औषधीय पौधों की भूमिका	प्रजाति- औषध वा. पत्रिका अंक-8(3-4) 160-165	सितम्बर - दिसम्बर, 1987
14.	के. वी. बिल्लौर, के. सी. औदिच्य एवं विष्णुप्रियाधर	राजस्थान में मुख्य रूप से गुग्गुलु के प्रचार एवं संरक्षण के लिए औषधीय पौधों का संरक्षण ।	चि. प्रजातीय औषध वानस्पतिक अनु. पत्रिका अंक 8(1-2) 118-127	मार्च-जून, 1987
15.	टी. जे. डेनिस	आर्थिक महत्व की वनौषधियों का रासायनिक विवेचन ।	सचित्र आयुर्वेद 41(4):205-213	अक्टूबर, 1988

1	2	3	4	5
16.	विष्णुप्रियाधर, ओ. पी. गुप्ता एवं वी. एन. के. रामदास	आयुर्वेद एवं सिद्ध पद्धति की कतिपय संभाव्य चयनित देशी औषधीय पौधों का निर्यात ।	चि. प्रजातीय वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका दिसम्बर, अंक 8(3-4)188-199	1987
17.	के. हेमाद्री	आन्ध्रप्रदेश, जिला आदिलाबाद की औषध सम्पदा ।	इण्डियन मेडिसीन 38(8) 2 और 21 -23	1988
18.	के. हेमाद्री	दक्षिण भारत से गोमूत्र शिलाजीत की प्राप्ति ।	ऐन्सिएंट साइंस आफ लाइफ 7(2):104	1987
19.	के. हेमाद्री	प्राथमिकता के आधार पर जनश्रुति-औषध दावों की वैज्ञानिक छानबीन ।	इंडियन मेडिसिन पूरक 38 : 17-21	1988
20.	एम. सी. जोशी	गुजरात के वनों के दुर्लभ एवं समाप्त प्राय औषध पौधे ।	चि. प्रजातीय वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका अंक 9(1-2) 31-39	मार्च-जून, 1987

1	2	3	4	5
21.	एम. सी. जोशी	गुजरात में औषधीय पौधों की कृषि एवं संरक्षण	चि. प्रजातीय वानस्पतिक अनुसं. पत्रिका अंक 8(3-4) 183-187	सितम्बर, दिसम्बर 1987
22.	आर. के. मुदैया, बी. एन., शर्मा एवं डी. एन. सिंह	सिक्किम के दुर्लभ एवं असामान्य औषधीय पौधे ।	चि. प्रजातीय वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका अंक - 8(3 एवं 4 155-159)	1987
23.	जी. पाण्डेय	विषतिन्दुक के विशेष सन्दर्भ में तिन्दुक की वानस्पतिक पहचान में योगदान	चि. प्रजातीय वानस्पतिक अनुसंधान पत्रिका 9(1-2) 40-57	1988
24.	एस. एस. राव, एम. वी. आचार्य एवं के. हेमाद्री	नलगोंडा जनपद (आ. प्र.) का औषध प्रजातीय वानस्पतिक सर्वेक्षण ।	इंडियन मेडिसिन 38(5):17:20 38(6)2 एवं 18-20	1988
25.	जे. सिंह एवं एल. सी. तिवारी	कुमांयू के विभ्रामित पादप	आर्यवैद्यन अंक - 1(4)	1878

1	2	3	4	5
द - भैषजिक एवं रासायनिक अनुसंधान				
26.	ए. बनर्जी, बी मलिक, ए. चटर्जी, एच. बुद्जीकीविज एव एम. ब्रावर	असा फोटीदीन एण्ड फेरोकोलिसीन, टू सेस्क्वी टर्पेन्वायड कोमारीन्स फ्राम फेरुला आसाफोएतीदा रीग्रेल	तेट, लेट 29(13) 1557	1988
27.	जे. बनर्जी, के. पी. धर, बी. दास, ए. के. दास, एवं ए. चटर्जी	स्टेसी पर अध्ययन भाग - 6 - कोमारी के प्रतिक्रियाओं का पुनर्व्यवस्थापन	फाइटोकेमिस्ट्री 27 : 3679	जनवरी 1988
28.	बी. आर. बरीक एवं ए. बी. कुंडू	लैजेस्ट्रोमिया पर्विपलोरा द्वारा लेजफ्लोरीन, एक पेन्टासाइक्लिक ट्राइटर्पेन	इंडियन ज. केमि. 27(8) 740-741	अगस्त 1988
29.	ए. चटर्जी, बी. दास, आर. चक्रवर्ती, पी. बोष, जे. बनर्जी, ए. बनर्जी एवं एच. बुद्जीकीविज	जट्रोफगासीपी फोलिया द्वारा प्रसान्थलीन एक लवीन लीग्नैन	इंडियन ज. केमि. 27 (8) 740-741	अगस्त 1988
30.	टी. जे. डेनिस	मेसुवाफेरा द्वारा एक नवीन साइक्लोहेक्साडीयन	फाइटोकेमिस्ट्री 27(7):2325	1988
31.	डी. डे एवं एम. एन. दास	भारतीय औषधियों का पेचिस रोधी भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन ।	एक्टा बोटैनिका इंडिका अंक 16 (2) 216-226	1988

1	2	3	4	5
32.	पी. जैन, एन. के. खन्ना, जे. एल. गोध्वानी एवं ओ. चौहान	फ्लोरो क्युनोलोन्स - एण्टीमाइक्रोबियल एक नवीन वर्ग ।	द इंडियन प्रैक्टिशनर भाग (12) 865-70	दिसम्बर 1988
33.	जेड. मेरी, के. गोपकुमार, के. वी. नायर एवं पी. सरस्वती	मूर्वा पर भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन ।	आर्यवैद्य यामन आयुर्वेद चन्द्रिका	नवम्बर, 1988 अक्टूबर, 1988
34.	के. वी. नायर एवं एस. एन. योगनरसिंहम	पिप्पली पर एक अनुसंधान परक अध्ययन	फिजिसियन	फरवरी, 1989
35.	के. के. पुरुषोत्तमन, ए. सरस्वती तथा ई. शशिकला	ट्राई टार्पेनायड्स फ्राम द रेसिनाआफ शोरीयाराबस्टा	इंडियन ड्रग्स 26(4):146-150	1988
36.	के. के. पुरुषोत्तमन, शारदा बसन्त ई. जे. डी. कत्नाली तथा डी. एस. राइक्राफ्ट	न्यू सर्वेरोजेनिनि एण्ड आइसो सर्वेरोजनिन ग्लाइकोसाइड्स फ्राम क्रिप्टोलैपिस बुच नानी	रीव्यू लैटिनामेर व्योम 19/132	1988
37.	के. के. पुरुषोत्तमन, ए. सरस्वती, ए. शारदा तथा ई. शशिकला	इरीडायड्स फ्राम बार्लेरिया प्राइनाइटिस का एक संरचनात्मक अध्ययन ।	इंडियन ड्रग्स 26(3):97-100	1988
38.	वसन्त शारदा तथा आर. भीमाराव	फाइटोकेमिकल स्टडी आफ लियोनोटिस नेपेटा फोलिया	इंडियन ड्रग्स 26(3):127-128	1988

1	2	3	4	5
39.	शान्ता तथा के. गोपकुमार	मैक्रो एण्ड माइक्रो स्कोपिकल स्टडीज आन द रूट एण्ड लीफ आफ ग्लाइकोसिन्स आरबोरिया	आर्यवैद्यन	अगस्त, 1988
इ - भेषज गुण विज्ञान				
40.	टी. जे. डैनिस	एक्सपेरिमेंटल इवैलुवेसन आफ फार्माकोलैजिकल एक्टीवीटी आफ लासोनियाअल्बा सीड	फिटोटेरापिया अंक 39	। (1) 1988
41.	एस. गोध्वानी, जे. एल. गोध्वानी तथा एन. के खन्ना	ड्रग डिसकन्टीनुएसन सिन्ड्रोम	थैराप्युटिक्स एण्ड ड्रग	अप्रैल, जून 1988
42.	पी. जैन, एन. के. खन्ना तथा जे. एल. गोध्वानी	ए पासिबुल ड्रग इन्ट्रैक्सन बिट्विन एस्त्रीन ग्ल्युटेमीन आन सम एक्सपेरिमेंटल इनफ्लेमेट्री एण्ड एनाल्जेसिक माड्लस ।	इंडियन जर्नल आफ एक्सपेरिमेंटल बायोलाजी 26(5):368-70	मई 1988
43.	आर. रविशंकर, आर. भास्करन नायर, एन. पी. विजयन, पी. टी. पंकजवल्ली, सी. के. शशिकला तथा एस. सुलोचना	अनाल्जेसिक एण्टीइन्फलेमेट्री एण्ड इम्युनोसुप्रेसेंट इफेक्ट आफ स्ट्रोविलैन्थस इहेनीयनस नीस-स्टम	जे. आर. एम. एस. भाग 8 (1-2) 53-63	1987

1	2	3	4	5
44.	बी. रविशंकर, आर. भाष्करन नायर तथा सी के शशिकला	स्ट्रोबिन्थेस हेनीयनस नीस रुट्स का भेषजगुण विज्ञानीय अध्ययन ।	जे. आर. ए. एस. अंक 8(3-4) 113-128	1987
45.	ए. के. सक्सेना, के. एस. दीक्षित, एन. सिंह तथा जी. पी. गुप्ता	विथैनिया सोमनी फेरा का चूहों में मस्तिष्क तनाव अवधि प्रभाव	प्लेंटा मेडिका पृष्ठ - 28	1988
46.	ए. सिंह, आर. जी. सिंह, आर. एच. सिंह, एम. प्रकाश, एस. व्रत तथा एन. सिंह	इफेक्ट आफ वोरहैविया डिफ्यूजा (पुनर्नवा) इन एक्सप्रेमेंटल एक्यूट पाइलोनेफराइटीस इन एल्बिनो रैट्स।	इंडियन ड्रग्स	26:1013 1988
47.	एन. सिंह, वी. एस. तोमर, बी. चन्द्र तथा जी. पी. गुप्ता	कम्परेटिव इवैल्युएसन आफ दी इफेक्ट आफ सम स्पीसीज आफ ओसिमम आन अनोकिया टालरेंस इन एल्बिनो माइस ।	प्लान्टा मेडिका पृष्ठ 28	1988
फ. औषध मानकीकरण				
48.	आर. बी. सक्सेना	कन्डक्टीवीटी आफ स्पेरीगंली साल्युबल अभ्रक भस्म इन एक्युअस सालुसन	जर्नल आफ आनन्द वीजात्री अंक 5 न. 2 पृष्ठ 89	1987
49.	आर. बी. सक्सेना तथा एम. वी. धोलकिया	पंचकर्म में प्रयुक्त दशमूल तैल का मानकीकरण ।	सचित्र आयुर्वेद अंक 40(8-9) पृष्ठ 431	1988

1	2	3	4	5
50.	आर. बी. सक्सेना, एम. बी. धोलकिया, एच. सी. मेहता, एन. आर. शारदा, एम. टी. दासवानी, के. एल. शाह तथा पी. डी. त्रिवेदी	यशदभस्म - मानकीकरण	सचित्र आयुर्वेद अंक 41(2) पृष्ठ 101	1988
51.	आर. बी. सक्सेना तथा एच. सी मेहता	कान्स्टीच्युएंट एण्ड फ्लूअरसेंस आफ्संजीवनी बटी (संजीवनी बटी के रासायनिक घटकों पर ।) अध्ययन ।	आयुर्वेद समाचार भाग 2 अंक 11(2) पृष्ठ 9	1988
52.	आर. बी. सक्सेना तथा एम. टी. दासवानी तथा के. एल. शाह	सुदर्शन घन वटी का मानकीकरण	जर्नल आफ आनन्द विजात्री अंक 6(2) पृष्ठ - 21	1988
53.	आर. बी. सक्सेना, एच. सी. मेहता तथा एन. आर. शारदा	श्रृंग भष्म का मानकीकरण ।	जर्नल आफ आयुर्वेदा अंक 9(5) पृष्ठ 17	1988
54.	आर. बी. सक्सेना तथा एम. बी. धोलकिया	गन्धर्वहस्तादि तैल का मानकीकरण	जर्नल आफ आनन्द विजात्री अंक 6(2) पृष्ठ 21.	1988
55.	के. गोपकुमार	औषध द्रव्यांगलिने मरिमयम विपनीयिल	आयुर्वेद चन्द्रिका	फरवरी 1989

1	2	3	4	5
ज. परिवार कल्याण				
56.	ए. गीता तथा एम. आनन्दवल्ली अम्मा	परिवार नियोजन में आयुर्वेद का स्थान	कालेज मैगजिन आफ आयुर्वेद कोट्टाकल	—
57.	के. एस. मूर्ति, पीसी शर्मा तथा प्रेम किशोर	उड़ीसा के कतिपय गर्भरोधक औषध-दावे ।	प्रजा. वान. अनु. प. अंक 9 (1-2) पृ. 28-30	मार्च जून 1988
58.	वी. एन. पाण्डेय तथा के. डी. शर्मा	परिवार नियोजन में आयुर्वेद की वैज्ञानिक भूमिका	आयुर्वेद विकास 28(3):11-20	मार्च 1989
झ - विविध				
59.	विनोद कुमार भटनागर	हिन्दी पत्र पत्रिकाओं के आयुर्विज्ञान इतिहास संक्षिप्त सार ।	बुलेटिन आफ आइ. आई. एच. एम. 17(11):69-76	जनवरी, 1987
60.	ए. पी. दधीच, डी. एस. व्यास, एन. के. खन्ना, जे. एल. गोधवानी, जे. बी. गुप्ता, ए. के. दत्ता तथा पी. जैन	बीकानेर करंट मेडीकल प्रेक्टिस (राजस्थान) के विद्यार्थियों में हानिकारक-औषध प्रयोग प्रचलन	प्रयोग प्रचलन ।	सितम्बर, 1988
61.	जी. वी. द्विवेदी	हृदय रोग नाशक दिव्य औषधियां	आयुर्वेद विकास 28(1):40-44	जनवरी, 1988

1	2	3	4	5
62.	के. आर. मूर्ति तथा श्रीकान्त	शिवल्लरत्लाकर में औषध एवं एलाइड साइंसेज	बुलेटिन आफ आई. आई. एच. एम. 17(12):89593	जुलाई, 1987
63.	के. बी. नायर	आयुर्वेद में सन्दिग्ध द्रव्य	फिजिसीयन	मई 1988
64.	के. वी. नायर तथा एस. एन. योगनरसिम्हन.	बृहत्त्रयी में हरीतकी का उचित उपयोग	एंसिएण्ट साइंस आफ लाइफ 7(3-4) 1805x82	जुलाई, 1988
65.	सी. पी. आर. नायर	आयुर्वेद में मनोविज्ञान	जर्नल आफ साइक्याट्री	अक्टूबर 1988
66.	वी. एन. पाण्डेय	सिद्ध भेषज मणिमाला की देन, 19 वींशदी का एक ग्रन्थ	बुलेटिन आफ आई. आई.एच.एम.अंक 17(1) 1-56	जनवरी 1987
67.	वी. एन. पाण्डेय तथा के. डी. शर्मा	आयुर्वेदीय औषधियां एवं सामान्य घरेलू उपचार	सी. सी. आर. ए. एस. प्रकाशन	1988
68.	बी. रामाराव	प्रोग्रेस एण्ड एक्सपैसंन आफ हिस्ट्री आफ मेडिसिन	बुलेटिन आफ आई. आई. एच. एम. अंक 17(1) 77-60	1987

1	2	3	4	5
69.	के. डी. शर्मा तथा बी. के मधुकर	एड्स की ज्वाला में पश्चिम का मानव	आयुर्वेद विकास अंक 27(8):36-44	अगस्त1988
70.	आर. एन. तिवारी तथा पी. जोशी	स्टडी आफ प्रिफरेंस एक्जीविटेड बाई मुस्कडीयर इन केप्टीवीटी टू फाडर थ्रू बुफेसेलेक्शन	प्रजा. वान. अनु. पत्रिका अंक 9(1-2):78-79	मार्च-जून, 1988
71.	वी. पी. तिवारी	आंत्रिक रोग में योगासन कीजिए	धनवन्तरि पत्रिका	दिसम्बर 1988

	लेखक का नाम	लेख-शीर्षक	सम्मेलन/संगोष्ठी/ कार्यशाला का नाम	
1	2	3	4	5
अ. निदान चिकित्सा एवं मौलिक अनुसंधान				
1.	जी. वी. द्विवेदी एवं एस. एन. पाण्डेय	काम एवं तत्सम्बन्धित रोगों का चिकित्सा सूत्र	आल इंडिया कांफरेंस आफ सेक्सोलाजी, जयपुर	सितम्बर, 1988
2.	बी. आर. मिश्र, टी. एन, भल्ला, आर. नाथ, के. दीक्षित, एन. सिंह एवं के. एस. दीक्षित	इवीडेंस आफ हाइपरटेंसन इन नार्मोटेंसी व इंडीवीजुअल आन जेरीफोर्ट ।	फर्स्ट कांग्रेस आन एसीयन मेडिसिन एण्ड क्लीनिकल फार्माकोलोजी	1988
3.	पी. नैयर रामचन्द्रन	पंगु विषयक आधुनिक अध्ययन	डिसेनिएलसेलीब्रे सन्स एट आमला कैंसर हास्पिटल, त्रिचूर	24 एवं 25 अप्रैल 1989
4.	नैयर, पी. रामचन्द्रन, के. शान्ताकुमारी, एन. पी. विजयन, पी. माधवी कुट्टी	क्लीनिकल इवैलुएसन आफ शोधनयेरापी इन दी ट्रीटमेंट आफ गृध्रसी (साइटिका)	स्वर्ण जयंती संगोष्ठी जे. एस. आयुर्वेदिक कालेज, नडियाद	मार्च 15-17, 1989

1	2	3	4	5
5.	वी. एन. पाण्डेय एवं के. डी. शर्मा	प्रमुख मूत्र विकारों का निदान चिकित्सा परक विश्लेषण संगोष्ठी-मूत्रवह स्रोतस के रोग	जनपद आयुर्वेद सम्मेलन बुलन्दशहर ।	मार्च 15 - 17, 1989
5. अ.	महेन्द्रपालसिंह आर्य	मूत्र वह स्त्रोतस् रोगों की आयुर्वेदीय आत्ययिक चिकित्सा	- यथोक्त -	1989
6.	बी. बी शर्मा, एम. बी. शर्मा तथा एच. एच. तुम्मोन	श्वास रोग मे द्रव्यगुण एवं चिकित्सा परक विश्लेषण	(प्राणवह स्त्रोतस) पर परिसंवाद स्थान - बम्बई हास्पीटल, बम्बई	जनवरी 26, 1989
7.	एस. वेंकटराघवन	पैरालिटिक पोलियो के पुनर्वास के साथ विभिन्न आयुर्वेदिक औषधि पर मौलिक कार्य/द्वारा भारतीय पंचकर्म संस्थान (केरल)	"इमुनोलाजी एण्ड ट्रैडिसनलमेडिसिन परकार्यशाला द्वारा प्राधोगिक मिशन, अहमदाबाद ।	सितम्बर 23 - 25, 1988
8.	एस. वेंकटराघवन, बी. बी. शर्मा, एच. बी. शर्मा, के. के. चोपडा, एन. के. मालदीय, पी. सी. तहिलरमनी तथा एच. एव. तुमाने	कुष्ठ रोग निवारण में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का योगदान	नेसनल लेप्रोसी इरेडीकेसन पर विचार संगोष्ठी द्वारा समिधा चैरीटेबुल, ए थाणे।	फरवरी 18, 1989

1	2	3	4	5
स - औषध - वानस्पतिक सर्वेक्षण एवं कृषि				
9.	जी. पाण्डेय	आयुर्वेदिक फार्मेसियों हेतु हिमालय की अपरिष्कृत औषधियों का संग्रह।	आयुर्वेदिक अनुसंधान संगोष्ठी की स्वर्णजयंतीद्वारा जे. एस. पटेल आयुर्वेद कालेज, नदियाड	मार्च 1989
10.	जी. पाण्डेय	भारतीय चिकित्सा पद्धति में पादप-प्रसाधन की शक्यता ।	आई.एस. एम. ए. आर. तत्कालिक अग्रिम औषधियों और "एरोमैटिक एवं स्पाइसेज क्राप्स पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, नई दिल्ली	जनवरी, 1989
11.	जी. पाण्डेय	हिमालयमेंपादप-औषध संसाधनों का विकास	उपर्युक्त	जनवरी 1989
द-भेषजिक और रासायनिक अनुसंधान				
12.	के. बालकृष्णन, ए. वी. कुण्डू, ए. एम. एवं पुरुषोत्मन के. के.	राक्सबर्घियाडियालए एवं बी द्वारा अग्लैयाराक्सवर्घियाना - एक सर्वेक्षण	रसायन विज्ञान आई. आई. टी, में 14वीं वार्षिक परिसंवाद मद्रास	मार्च 4-5 1989

1	2	3	4	5
13.	ए. बी. कुण्डू	उपर्युक्त	कार्बनिक रसायनशास्त्र 12वीं वार्षिक परिसं वाद सी. कलकत्ता विश्वविघालय	फरवरी 15 - 14 1989
14.	एस. मण्डल, ए. दास, पी. सी. जोशी तथा पी. सी. दास	एन्यु कोमरिनोनीग्लायड फार्म हेमीडेस्म इन्डीकस आर. बी. आर	76 वीं भारतीय विज्ञान काग्रेंस 139	जनवरी 1989
15.	जी. पाण्डेय	केमो -सीस्टमैटिक्स एप्रोचेज टू इन्डीजेंस फाइटोड्रग्स	भारतीय रसायनविद् परिषद का 8वां सम्मेलन, श्री वेंकटेश्वर विश्वविघालय तिरूपति ।	अक्टूबर 1988
16.	के. के. पुरूषोत्तमन, ए. सरस्वती तथा ई. शाशीकला	कुमेरिन की सरंचनात्मक पहचान द्वारा हेराक्ली यमूस	कार्बनिक रसायन शास्त्र पर 14वाँ वार्षिक सम्मेलन मद्रास ।	मार्च 4-51989

1	2	3	4	5
17.	शारदा वसन्त	आर्टीमेसिया पर्विफ्लोरा का पादप रसायन परीक्षण	40 वी. आई. पी. सी. कलकत्ता ।	दिसम्बर1988
18.	शारदा वसन्त, ए. बी. कुन्डू तथा के. के. पुरुषोत्तमन	विकोडीयल, ए न्यू मोनोट-पेनेडियल फ्राम विकोइन्डिका डी. सी.	कार्बनिक रसायनशास्त्र पर 14वीं वार्षिकपरिसंवाद आई. आई. टी. मद्रास	मार्च 4 - 51989
19.	ए. सरस्वती	एंटीवाइरल ट्रीटर्पेन्वायड्स फ्राम द रेसिन आफ सोरीया रोबुसा गएर्ल	भैषिजिक शिक्षा अनुसंधान एवं औषधउद्योग पर प्रथम एसियन सम्मेलन, सिंगापुर	1988
20.	ई. सुकुमार	प्रीस्टीमेरोनाक्त, ए न्यू ट्रीटर्पेन्वायड् फ्राम प्रिस्टीमेरा ग्राहमी (हिपोक्रैटीसीया)	तात्कालिक अग्रिम कार्बनिक रसायनशास्त्र पर 5वीं राष्ट्रीय परिसंवाद	मार्च 1989

1	2	3	4	5
21.	डी. डे. एवं एम. एन. दास	फार्माकाग्नास्टिक अथेन्टिकेसन आफनार्दोस्टेचिस जटामांसी (डीसी)एन इनडीजेसन ड्रग	आई. एस. एम. ए. पी. नई दिल्ली	जन1989
22.	डी. डे. एवं एम. एन. दास	अब्रस प्रिक्टोरियस लिन्न के जड़ एवं पौधे की भेषज क्रिया	प्राच्य औषध एवं योग पर प्रथम विश्व सम्मेलन नं. ब - 126, पृष्ठ - 113	मई 1988
23.	डी. डे. एवं एम. एन. दास	क्रोटोन टिग्लीयम लिन्न के पौधे का भेषज अभिज्ञानीय-मूल्यांकन	भैषजिक शिक्षा, अनुसंधान एवं औषधउघोग पर प्रथम एसियन सम्मेलन सिगांपुर, नं. एस. 84, पृष्ठ 39	मई 1989
24.	डी. डे. एवं एम. एन. दास	कोफ्रेसन्थुसी फेरा लिन्न के फूल एवं फल भेषज-अभिज्ञानीय मूल्यांकन ।	भारतीय विज्ञान काग्रेंस का 76वां सत्रअंक 111, अनुभाग ४	जनवरी 1989

1	2	3	4	5
25.	डी. डे. एवं एम. एन. दास	साल्मलिया नालबरीका (डी. सी.) के जड़एवं तना का भैषजिक अध्ययन	उपर्युक्त	जनवरी 1989
26.	ई. शशिकला एवं अन्य	हेराक्लीयम स्ट्रेजेलियम (डब्लू एवं ए) पर भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन	उपर्युक्त	मई 1988
ई - औषध मानकीकरण				
27.	जी. वी. द्विवेदी	आयुर्वेदिक भेषजगुण विज्ञान एवं फार्मेसी	आयुर्वेदिक अनुसंधान एवं संगोष्ठीकी स्वर्ण जंयती, नाड़ियाद (गुजरात)	मार्च 1989
28.	वी. के. कुलश्रेष्ठ तथा डी. पी. एस. मौर्य	इफेक्ट आफ बेटा एड्रेनोसप्ट्स एण्टाजेनीस्टस आन ड्रग इन्ड्युस्ड चेंजेज इन ब्लड सुगर जेवेल	भारतीय फार्माकोलैजिकल सोसाइटी हैदराबाद । खेसड़ा	दिसम्बर 1988
29.	जी. मिश्र, एस. के. निगम, के. दीक्षित, बी. आर. मिश्र एवं एन. सिंह	पेप्टिक अल्सर में फिकस रेलीजीओसा और फिवासबेंगलेंसिस का प्राथमिक निदान - चिकित्सात्मक मूल्यांकन	प्रथम एसियन कांग्रेस के औषध एवं निदान चिकित्सात्मक भेषज गुणविज्ञान ।	

1	2	3	4	5
30.	जी. डी. मुखर्जी	आयुर्वेदिक औषध पद्धति का भेषज गुण विज्ञानीयएवं भेषजी अध्ययन	वैज्ञानिक संगोष्ठी द्वारा जे. एस. आयुर्वेद कालेज नडियाद ।	मार्च 1989
31.	एन. आर. पिल्लई एवं जी शान्ता कुमारी	नीम द्वारा भेषजगुण-विज्ञानीय तथा रासायनिक एवं अल्सररोधी सिद्धान्त।	तात्कालिक अग्रिम औषधियों और एरोमैटिक एवं स्पाईसेज क्राप्स पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, नई दिल्ली	जनवरी 1989
32.	बी, रविशकर, आर. नैयर भाष्करन, एन. पी. विजयन, सी. के. शशिकला , वी. एन. सरस्वती, जीध एच. मकवाला एवं एस. सुलोचना	लिपियानाडिफलोरापरभेषज गुण-विज्ञानीय अध्ययन भाग ब, ईथनाल एण्ड कोल्ड एक्वस इन्फ्युसन	भारतीय फार्माकोलैजिकल सोसाइटी का 5वां वार्षिक सम्मेलन, बल्लभनगर, ए गुजरात	1988
33.	बी. रविशंकर, एच. जी. मकवाना, आर. नैयर भाष्करन, एन. पी. विजयन, सी. के. शशिकला, वी. एन. सरस्वती एवं एस. सुलोचना	बोरैसस काइबोलीफर लिन्न के कुछ भेषज गुण-विज्ञानीय अध्ययन	आई पी एस क्षेत्रीय सम्मेलन बंगलोर	1988

1	2	3	4	5
34.	बी. पी. त्रिवेदी एवं एन. सिंह	कृमिरोधी तत्वों की देशी औषधी ।	वर्ड कांग्रेस आयुर्वेद, बैंकाक (थाइलैण्ड)	मई 1988
फ-भेषजगुण अभिज्ञान				
35.	एम. एम. आलम एवं अन्य	"हिंगुआदि तैल" के मानकीकरण पर एक अध्ययन	भेषजिक शिक्षा, अनुसंधान एवं औषध उद्योग पर प्रथन एसियन सम्मेलन सिंगापुर	मई 1988
36.	आर. भीमाराव एवं अन्य	औषध पहचान में विश्लेषणात्मक विधि	उपर्युक्त	26 से 29 मई 1988
ह-विविध				
37.	जी. डी. मुखर्जी	जनसमुदाय में आयुर्वेद की प्रसिद्धि एवं विश्वसनीयता	28वां रीयुनियन जे. बी. आर. राजकीय आयुर्वेद कालेज कलकत्ता ।	19 फ. 1988

1	2	3	4	5
38.	जी. पाण्डेय	थाइलैंड पर भारतीयतात्मक दृष्टिकोण	परम्परागत औषधि एवं योग पर प्रथम विश्व सभा, बैकांक, थाईलैंड (एबीएसटी जे. बी-154 पृष्ठ (7-8)	मई 1988
39.	जी. पाण्डेय	भारतीय भेषज हेतु चरक का योगदान	भेषजिक अनुसंधान, शिक्षा एवं औषध उघोगपर प्रथम एसियन सम्मेलन राष्ट्रीय विश्वविघालय, सिंगापूर (एबीएसटी न. एस - 111)	मई 1988

औषध वानस्पतिक अनुसंधान कार्यक्रम

मरान्यू (औषध) का विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों में उपयोग किया जाता है, अत: सिद्ध चिकित्सा पद्धति में औषधपादप सर्वेक्षण को विशेष महत्व दिया गया है । विशुद्ध एवं उपयुक्त औषधियों की सर्वेक्षण द्वारा उपलब्धि एवं आपूर्ति अनुसंधान की प्रमुख आवश्यकता है । औषधियों का गुणात्मक एवं मात्रा पर एक अध्ययन एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति में प्रयुक्त औषध पादपों की उपलब्धि का कार्य औषध पादप सर्वेक्षण इकाई, पलायेमकोट्टई द्वारा किया गया ।

इस इकाई ने 1971 से अद्यावधि 99 सर्वेक्षण दौरे किये है । इनमें तमिलनाडु के प्राय: सभी वन्य क्षेत्रों/विभाग तथा शेनकोट्टई, तेंकासी, कोर्टाल्लम पापनासम् , कन्याकुमारी, मदुरई, रामेनाथपुरम, सलेम, तिरुचिरपल्ली, चिंगलपुट, तंजौर, डीएल रामापुरी, दिदुंगल, अन्ना नीलगिरि एवं कोयम्बटूर वन्य विभाग आदि सम्मिलित है । इनके साथ-साथ तिरुनेलवेली वन्य विभाग का भी सर्वेक्षण किया गया हैं ।जहाँ यह इकाई स्थापित हैं । 4643 परिज्ञात औषध पादप नमूने जिनमें तीन खनिज मूल के नमूने सम्मिलित हैं तथा आठ नमूने प्राणिज मूल के हैं जिन्हें इकाई में संरक्षित किया गया है ।वानस्पतिक खनिज एवं प्राणिज इन तीनों मूल के 515 नमूनों की इकाई सें करके एक छोटा संग्रहालय के रूप में आसज्जित किया गया है ।

वर्ष 1988-89 में इकाई ने तिरुनेलवेली जिला के करुप्पनाधि, नरईकदुडू कालक्कडु कन्नूपुलिमेत के वन्य क्षेत्र एवं सेनकुलम आरक्षित वन्य क्षेत्र आदि विभिन्न वन्य क्षेत्रों के तीन सर्वेक्षण एवं संग्रहण दौरे किये हैं ।हरवेरियम नमूने 141 (फील्ड बुक नं. 4932 से 5074) सिद्ध चिकित्सा पद्धति के औषधीय गुणवत्ता से संपन्न 131 वंश के 60 कुल के 139 जातियां एकत्र कर प्रस्तुत की गई । 420 पादप नमूनों की पहचान कर ली गई है तथा हरबेरियम में 163 नमूनों की अभिवृद्धि करके उनकी कुल संख्या 5205 तक हो गई है ।

पीलुवरम (मंडूलिया सुबरोइया बेन्थ), मूलइप्पलविदाई (केसिया एबसस लिन), सिवा नरबेम्बु (इंडिगोफेरा एस्पलथोईडस वाह), सोमाकोडी (केरोपेगिया जंसिपा रोक्सब), वालाम्बुरी (हेलिक्टेसिस एल. (कृशपलाई), क्रिप्टोलेपिस बुचनानी रुप एवं स्क. (विदायलाई), डाइकोस्टेचिस सिनरिया डब्लू एवं ए. (पोंयागराई), केसिया ओक्सीडेन्टालिस लिन(पंगू) पोंगमियां ग्लेब्रा वान्त),बीरग्ये (कोम्ब्रेटम ओवेली फोलियम रोक्सब.), मोराला (बुपनेनिया लंजन स्प्र.), कलथी (फाइकस कालोस वाइलड वेंडालई), जिवाटिया रोट्टलीहफोर्मिस क्रिफ्ट), पिल्लई (ऐक्सकोकारिया एग्लोचा लिन), मुसुत्तई (रीविआ हाइपो क्रेटेरीफोर्मिस चोइसी (कोट्टई),अपोनोगेटोन नेटेन्स इगल), नाइपुडुक्कन (क्रोटेलेरिया बाइपलोरा लिन), वेक्सही (कडापटीटोलिआटा डब्लू ए.), नंगू (मेसुआ फेरा एल., कट्टुक्कोडी (कोकुलस हिरसू डाएल्स), वीराली (डोडोनिआ विस्कोसा एल.), नानचरुप्पन (टायलोफोरा अस्थमेटिका लिन. एफ.), ग्रीन्यिल (टिन्नोस्फोरा कोर्डीफोलिआ मिर्स), ईश्वामूली (अरिस्टो लोचिआ इंडिका लिन, करुवेम्बू (गुर्गुगन पिन्नाटा रोस्ब), कालवझाई (कन्ना अरिऐंटालिस रोस), कट्टमिलगु (पाइपर एट्टुटम यूच हम), पूनईक्काली (मुकुना पूरिटा हूक), इत्यादि हरवेरियम के संकल्प के कुछ मुख्य पादप नमूने है ।

कच्ची औषधियों के 26 नमूने संग्रहित करके संग्रहालय के नमूनों में सम्मिलित किये गये जिससे कुल संगृहीत नमूनों की संख्या 515 हो गई जिनमें अंवूरी (इंडिगोफेरा टिक्गेरिआ लिन), कोझिजी (टेफ्रोसिआ परप्यूरिआ लिन), करुवेम्बु (गरुगा पिनाटा रोक्सब), मुल्लुवेंगाई (बाइडेलिआ रेलुसा स्प्र.), मिझचयाइयम (बिस्चोइआ जवानाइका बी आई), मुल्लुमुरुक्कु (इरीथरीना इंडिका लिन) पूनईक्काली (मुकुना अटरोपुरपुरिआ डीसी), इत्यादि सम्मिलित हैं।

सर्वेक्षण दौरों के अवसर पर ताजा पादपों के विभिन्न भागों के 125 किलो ग्राम अंश संगृहीत किये गये तथा 29.150 कि. ग्रा. शुष्क पादप भागों की परिषद के केन्द्रों/इकाइयों तथा संस्थानों को आपूर्ति की गई ।

25 हरबेरियम शीटें केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (आयु.) नई दिल्ली के केन्द्रीय औषध पादप उद्भिदालय एवं संग्रहालय के संदर्भ एवं संरक्षण हेतु भिजवाई गई ।

कालपी नामक औषध पादप जनश्रुति औषध दावों की परंपरागत चिकित्सा में मूत्रकृच्छ्र एवं प्रदाह में प्रयुक्त किया जाता है ।यह भी बताया जाता हैं कि इसी औषधि का श्वेत प्रदर एवं उदरशूल में स्त्रियों द्वारा प्रयोग में लाया जाता हैं ।

इसकी एक ग्राम मात्रा नींचयंन्नी (तंडुलादक) के साथ प्रातः खाली पेट पिलाई जाती है ।

औषध पादप उद्यान

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध) मद्रास ने अपने प्रांगण में एक छोटा सा औषध पादप उद्यान भी लगाया हुआ है ।147 औषध पादप प्रजातियों के विभिन्न औषधीय गुणवत्ता वाले पादप जिनमें अन्नूअन, बिन्नुअलम्, परमिआलिस, आरोही (लतावितान) तथा पेड़ आदि इस उद्यान में संरक्षित किये जाते हैं । 1068 कि. ग्रा. औषध पादपों के विभिन्न भागों की ताजा कच्ची औषधियां यथा नित्याकल्यानी (विंकारोजिआ एल.), वेत पलाई (म्रिघटिआ टिंक्गेरिया आर. बी. आर), नीरादीमुथु (हाइड्रोकारपस वेनेन्टे गेर्टन), मंजल जरीसलाई (वेडेलिआ कलेन्डुलिया), उमाथाई (डेटूरा मेटेल एल.), नीरमूल्लई (एस्टेरा केन्था लौगी फोलिया), सीरु कुरिंजन (जिमने मेसिल्वेस्टिआ आरं. बी. आर), इत्यादि संस्थान की भेषज निर्माण शाला रसायन एवं अंतरंग रोगी विभाग को उपलब्ध कराई गई । इस वर्ष की अवधि में लगभग 21 नये औषध पादप, उद्यान में लगाये गये ।

उद्भिदालय एवं संग्रहालय

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध) मद्रास द्वारा सिद्ध चिकित्सा में प्रमुख औषधियों के नमूनों का उद्भिदालय एवं संग्रहालय संरक्षित किया गया है । संग्रहालय में 150 हरबेरियम के नमूने तथा 126 कच्ची औषधियां के नमूने (प्लास्टिक की थैलियां/शीशियों तथा शीशे के जारों में संरक्षित किये गये हैं ।मेत्तूर में 22 एकड़ जमीन के अधिग्रहण के भी प्रयास किये गये हैं ताकि केन्द्रीय औषध पादप उद्यान लगाया जा सके ।

भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम

भेषज अभिज्ञानीय अनुसंधान एकक जो सिद्ध चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत कार्यरत है उनके द्वारा निम्नलिखित पांच औषधियों पर भेषज अभिज्ञानीय अध्ययन किया गया :-

1. वल्लराई - पचांग
2. नीररुल्ली - पचांग
3. अडाथोडाई - पत्र
4. मा (पंजीफराइंडिका) - पत्र
5. कोट्टकरनथाई - पत्र, तना और मूल

इस अध्ययन में स्थूल एवं सूक्ष्म चित्रण गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों दृष्टि से किए गए । कार्बनिक गुणात्मक परीक्षण सत्वों के मूल्यों एवं प्रारंभिक पादप रासायनिक परीक्षण विभिन्न रसायनिक यौगिक वर्गों की उपस्थिति वितरण, विवरण एवं औषध चिकित्सोपयोग हेतु अंकित किया गया ।

रासायनिक अनुसंधान कार्यक्रम

रासायनिक अनुसंधान कार्य औषध अनुसंधान परियोजना (ब. प) मद्रास के रसायनविज्ञान एकक में किया गया तथा इस वर्ष पोडुल्लई पचांग (लिपिया मोडी फलोरा), वन कांगिलियम बीज (शोरे रोवस्ता) एवं नरिमूली पचांग (अस्तराकेन्था लोंगीफलोरा) का अध्ययन किया गया । इन औषध पादपों पर किये गए अनुसंधान कार्य का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :-

1. पोडुतलई (लिप्पिया नोडिफ्लोरा स्वि)

पादप के जलीय निष्कर्ष से नोडी फ्लोरा - ए, नोडीफ्लोरा-वी (186-7), लेक्टोज माल्टोज तथा जाइलोज प्राप्त हुए ।

पादप के अल्कोहलिक निष्कर्ष से नोडीफ्लोरेटिन, फ्लेवोन-4, 5, 6, 7 टेट्रा हाईड्राक्सी - 3 मिथाक्सी फ्लेवोना, और साथ में लिपोफ्लोरिन ए तथा लिपोफ्लोरिन-बी प्राप्त हुए ।

2. वनकुगिलियम (शोर-रोबस्टा)

काष्ठ, छाल तथा रेजिन के गुणात्मक विश्लेषण करने पर इनमें आयरन, मैंगनीशियम, कैल्सियम, कार्बोनेट, क्लोराइड तथा सल्फेट विद्यमान पाये गये ।

3. नरिमुल्लि (एस्ट्रेकन्था लांगिफोलिया)

इस पादप का पीलिया, ड्राप्सी, आमवात, आनसारका तथा जनन मूल भाग के रोगों में मूत्रल औषध के रूप में किया जाता है । इसका गुणात्मक विश्लेषण करने पर फास्फेट, सल्फेट, क्लोराइड, कार्बोनेट, आइरन तथा कैल्सियम विद्यमान पाये गये ।

एल्कोलाइड तथा ल्युपिआल पादप से प्राप्त हुए जब कि एस्ट्रेराल 1, 11, 111 और 1.. एवं एस्टेरकेनथाइन तथा ऐस्टेरकेन्थेसाइन बीज से निकाले गये हैं । इस पादप के पुष्प से ऐस्पीजेनिन-7-ओ-ग्लोकोयुरोनाइड प्राप्त हुआ हैं ।

भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान कार्यक्रम

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध) एवं औषध अनुसंधान परियोजना (एम. डी), मद्रास में भेषजगुणविज्ञानीय अनुसंधान प्रतिवेदन वर्ष 1988-89 में किया गया । निम्नलिखित एकाकी औषधियाँ तैयार कर प्रायोगिक जंतुओं पर भेषजगुणविज्ञानीय परीक्षण किया गया । शोफरोधी, वेदनाहर प्रभाव ज्ञात करने के लिए परीक्षण किया गया । तीव्र एवं अनुतीव्र विषाक्तता अध्ययन भी किए गए :-

1. शिवनरमिर्यन
2. अन्नबेदी चेन्दूरम्
3. वंग परपम्
4. शिवप्पू कुवकिल थैलम्
5. करुन्जचीरगम -
6. अडाथोडाई
7. मूकारत्थाई
8. पी. एस. आई. - प्रजननरोधी कूटभेषज

(अ) तीव्र-विषाक्तता अध्ययन

1. वंग परमम्

(अ) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चुहियों में)

इस औषध को 0.5% कार्बोआक्सी मेथाइल सेलूलोज में निलंबित कर 100, 200, 500, 1000, 2000, 3000, 4000, एवं 5000 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में आवचारित किया गया । एक वर्ग को केवल अनुपान पर ही रखा गया जिसने नियंत्रित अचिकित्सय वर्ग की सेवा की । प्रायोगिक जंतुओं को 72 घंटे तक किसी भी विषाक्तता लक्षण एवं मृत्यु दर के लिए परीक्षण किया गया । प्रायोगिक जन्तुओं में किसी भी प्रकार का विषाक्तता लक्षण अपनाई गई औषध मात्राओं को देने पर नहीं पाया गया । अधिक मात्रा में औषध दे कर परीक्षण प्रगति पर है ।

(ब) तीव्र-विषाक्तता (धवल चूहे)

यह औषध 0.5% कार्बोआक्सी मिथाइल-सेलूलोज में निलंबित किया गया तथा 100, 200, 500, 1000, 2000, 3000, 4000 एवं 5000 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में अवचारित की गई । एक वर्ग को केवल अनुपान पर नियंत्रित अचिकित्स वर्ग में रखा गया । प्रायोगिक जन्तुओं को 72 घंटे तक किसी भी विषाक्तता लक्षण एवं मृत्यु दर ज्ञात करने हेतु सभी प्रयुक्त मात्राओं में देखी गई । यह अध्ययन अधिकतम मात्रा पर किए जाने के लिए प्रगति पर है ।

(स) अनुतीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चूहे)

0.5% कार्बोआक्सी मिथाइल सेलूलोज में निलंबित की गई और 100 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में प्रति दिन 30 दिन तक अवचारित की गई । दैनिक शरीर भार आहार एवं जल का लेना प्रत्येक प्रायोगिक जंतुओं में एक से तीस दिन तक अंकित किया गया । एक वर्ग को केवल अनुपान पर रखा गया जिसने नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग की सेवा की । प्रायोगिक जंतुओं को किसी भी प्रकार की विषाक्तता लक्षण एवं मृत्यु दर के लिए 30 दिवस तक निरीक्षण किया गया । 31 वें दिन प्रायोगिक जंतुओं को मार दिया गया । शरीर के महत्वपूर्ण अंगों का भार जैसे - फुफुस, यकृत, वृक्क, हृदय एवं अधिवृक्क ग्रंथि अंकित किया गया और रक्त नमूनों का रक्त परीक्षण एवं जीव-रासायनिक परीक्षण किया गया । महत्वपूर्ण अंगों जैसे यकृत एवं वृक्क की समांगता को भी जीव-रासायनिक परीक्षण के लिए संदर्भित किया गया । सांख्यिकी आंकड़ों का विश्लेषण प्रगति पर है ।

2. अन्नबेदी चेन्दूरम

तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चूहे)

इस औषध को शहद में निलंबित किया गया और 100, 200, 500, 1000, 2000, 3000, 4000, 5000 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में अवचारित किया गया जिसमें एक वर्ग को केवल अनुपान पर रखा गया और नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग की सेवा की गई । प्रायोगिक जंतुओं को 72 घंटे तक किसी भी प्रकार के विषाक्तता लक्षण एवं मृत्यु दर के लिए परीक्षण किया गया । इस औषध को किसी भी प्रकार का विषाक्तता प्रभाव उपर्युक्त मात्राओं में देने पर नहीं पाया गया । अधिकतम मात्रा में अध्ययन प्रगति पर है ।

3. शिवनार अमृथम

(अ) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चुहियों में)

इस औषध को शहद में निलंबित किया गया और 500, 1000, 3000, 5000, 6000 तथा 7000 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. की मात्रा में अवचारित किया गया । एक वर्ग को केवल अनुपान पर रखा गया और नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग की सेवा की । प्रायोगिक जं तुओं को 72 घंटे तक किसी भी प्रकार के विषाक्तता लक्षण के लिए परीक्षण किया गया । 6000 और 7000 कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध देने पर प्रायोगिक जंतुओं में 16.65 और 100% मृत्यु दर देखी गई, आगे अध्ययन प्रगति पर है ।

(ब) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चूहे)

इस औषध को शहद में निलंबित किया गया और 4000, 5000, 6000 और 7000 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध अवचारित की गई । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान पर रखा गया। प्रायोगिक जंतुओं को 72 घंटे तक किसी भी प्रकार का विषाक्तता अध्ययन मृत्यु दर के लिए परीक्षण किया गया । प्रायोगिक जंतुओं में 6000, 7000/ कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध देने पर 66.66% मृत्यु दर पाई गई । यह अध्ययन प्रगति पर है ।

4. शिवप्पु कोक्किल थैलम्

(अ) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चुहियों में)

इस औषध को 5, 10 और 20 मि. ली. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में अवचारित किया गया । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान पर रखा गया । प्रायोगिक जंतुओं को 72 घंटे तक किसी भी प्रकार की विषाक्तता अध्ययन के लिए परीक्षण किया गया । शिवप्पु कोक्किल थैलम में किसी भी प्रकार का विषाक्तता प्रभाव नहीं देखा गया ।

(ब) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चूहों में)

इस औषध को 5, 10 और 20 मि. ली. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में अवचारित किया गया । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान पर रखा गया । प्रायोगिक जंतुओं पर विषाक्तता अध्ययन और मृत्यु दर के लिए परीक्षण किया गया । इस औषध में किसी भी प्रकार का विषाक्तता प्रभाव उपर्युक्त मात्रा में औषध देने पर नहीं पाया गया ।

5. पीएसआई - एक कूटभेषज

(अ) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चूहों में)

इस औषध को स्रवित जल में निलंबित किया गया और 100, 200, 500, 1000 मि. ग्रा. /कि. ग्राम शरीर भार की मात्रा में औषध अवचारित की गई । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान पर ही रखा गया । प्रायोगिक जंतुओं को 72 घंटे तक किसी भी प्रकार के विषाक्तता लक्षण के लिए परीक्षण किया गया । औषध में किसी भी प्रकार का विषाक्तता प्रभाव 100 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में नहीं पाया गया । अध्ययन अधिकतम मात्रा में प्रगति पर है ।

(ब) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चुहियों में)

इस औषध को स्रवित जल में निलंबित किया गया और 100, 200 और 500 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में अवचारित किया गया । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान पर रखा गया । प्रायोगिक जंतुओं को 72 घंटे तक किसी भी प्रकार का विषाक्तता अध्ययन/मृत्यु दर के लिए परीक्षण किया गया । इस औषध में किसी भी प्रकार का विषाक्तता प्रभाव नहीं पाया गया ।

6. अडाथोडाई

(अ) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चुहियों में)

इस औषध को स्रवित जल में निलंबित किया गया । 100, 200, 500, 1000, 2000 और 3000 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध अवचारित की गई । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान पर रखा गया । प्रायोगिक जंतुओं को 72 घंटे तक किसी भी प्रकार की विषाक्तता लक्षण के लिए परीक्षण किया गया । इस औषध में किसी भी प्रकार का विषाक्तता प्रभाव उपर्युक्त मात्रा में औषध देने पर नहीं देखा गया। अध्ययन प्रगति पर है ।

(ब) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चुहे)

इस औषध को स्रवित जल में निलंबित किया गया और 100, 200, 500, 1000, 2000, और 3000 मि. ग्रा/कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध अवचारित की गई । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल (स्रवित जल) अनुपान पर रखा गया । प्रायोगिक जंतुओं में 72 घंटे तक किसी भी प्रकार के विषाक्तता लक्षणों पर परीक्षण किया गया । इस औषध में किसी भी प्रकार का विषाक्तता लक्षण एवं मृत्यु दर उपर्युक्त मात्रा में औषध दिये जाने पर नहीं पाया गया । अध्ययन प्रगति पर है ।

7. मोक्कारथाई

(अ) तीव्र विषाक्तता अध्ययन (धवल चूहे)

यह औषध स्रवित जल में निलंबित की गई और 100, 200 और 1000 मि. ग्रा. / कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में अवचारित की गई । वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान (स्रवित जल) पर रखा गया ।

प्रायोगिक जंतुओं पर किसी भी प्रकार के विषाक्तता लक्षण एवं मृत्यु दर के लिए परीक्षण किया गया । इसमें औषध द्वारा किसी भी प्रकार का विषाक्तता प्रभाव नहीं देखा गया ।

(ब) शोफरोधी अध्ययन

1. शिवनार अमिस्थम

कैरागीनिन व्युत्पन्न पंजशोफ अध्ययन (धवल चूहों में)

प्रारंभ में परिणाम लेखी अध्ययन से धवल चूहे के पश्च पंजे के आकार को मापा गया । इस औषध को शहद में निलंबित किया गया और 50, 100, 200, 500 और 1000 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में तत्काल प्रारंभिक पश्च आकार में औषध अवचारित की गई । एक वर्ग नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में रखा गया । दूसरे वर्ग को फिनाईल ब्युटाजोन 100 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में दिया गया जिसने एक नियंत्रित मानक का कार्य किया । पश्च शोफ 0.1 मि. ली. का 1% कैराजनीन जिसे 0.5% कार्बोआक्सी मिथाइल सेलुलोज को चूहों के दाहिने पश्च पंजे पद तल कंडरा कला में इसका एक घंटे तक अंत: क्षेपण कर शोफ उत्पन्न किया गया । कैरागीनिन अंत:क्षेपक करने के तीन घंटे पश्चात चूहों के दाहिने पश्च पंजे के आकार को मापा गया और प्रारंभिक एवं अंतिम आकार माप कर अन्तर अंकित किया गया । इस औषध में 50, 100, 200, 500 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में शोफरोधी क्रिया उल्लेखनीय पाई गई । यह अध्ययन कम मात्रा में दिये जाने पर भी प्रगति पर है ।

2. शिवप्पु कुक्किल थैलम

कैरागीनिन व्युत्पन्न पंजशोफ अध्ययन (धवल चूहे)

प्रारंभ में परिणामलेखी अध्ययन से धवल चूहों के दाहिने पश्चपंजे के आकार को मापा गया । तत्पश्चात 5 मि. ली. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध दी गई । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में रखा गया । दूसरे वर्ग को फिनाइल ब्युटाजोन 100 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में दी गई, जिसने मानक नियंत्रण का कार्य किया । पश्च शोफ 0.1 मि. ली. / का 1% कैरागीनिन जिसे 0.5% कार्बोआक्सीमिथाइल सेलूलोज को चूहों के दाहिने पंजे के पद तल कंडराकला में एक घंटे तक अंत:क्षेपण कर शोफ उत्पन्न किया गया । अंत में कैरागीनिन अंत:क्षेपण करने के तीन घंटे पश्चात चूहों के दाहिने पश्चपंजे के आकार को मापा गया । आंकड़ों को अंकित किया गया और सांख्यिकीय दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया । यह अध्ययन अधिक मात्रा पर किया जा रहा है जो प्रगति पर है ।

3. करुणजीरगम

कैरागीनिन व्युत्पन्न पंजशोफ अध्ययन

प्रारंभ में परिणामलेखी अध्ययन से धवल चूहों के दाहिने पश्चपंजे के आकार को मापा गया । तत्पश्चात 5 मि. ली. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध दी गई । इस औषध को दूध में निलंबित किया गया और 100 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में अवचारित किया गया । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान पर रखा गया । दूसरा वर्ग को फिनाईलब्यूटाजोन 100 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में दी गई जिसने एक नियंत्रित मानक का कार्य किया । पश्च शोफ 0. 1 मि. ली. का 1% कैरागीनिन जिसे 0. 5% कार्बोआक्सीमिथाइल सेलूलोज को चूहों के दाहिने पंजे के पद तल कंडराकला में एक घंटे तक अंत:क्षेपण कर शोफ उत्पन्न किया गया । जंतुओं के पश्चपंज के आकार को अंकित किया गया जिसकी सांख्यिकी दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया ।

4. अडाथोडाई

कैरागीनिन व्युत्पन्न पंजशोफ अध्ययन (धवल चूहे)

प्रारंभ में परिणाम लेखी अध्ययन से धवल चूहों के पश्च पंज के आकार को मापा गया । औषध को श्रवित जल में निलंबित किया गया और 100, 500 और 1000 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध अवचारित की गई । एक वर्ग को नियत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान पर रखा गया । दूसरे वर्ग को फिनाईलब्यूटाजोन 100 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में दी गई जिसने मानक नियंत्रण का कार्य किया । पश्च शोफ 0.1 मि. ली. का 1% कैरागीनिन जिसे 0.5% कार्बोआक्सीमिथाइल सेलूलोज को चूहों के दाहिने पंजे के पद तल कंडराकला में एक घंटे तक अंत:क्षेपण कर शोफ उत्पन्न किया गया । अंत में कैरागीनिन अंत:क्षेपण करने के तीन घंटे पश्चात चूहों के दाहिने पश्च पंजे के आकार को मापा गया । जंतुओं के व्यक्तिगत वर्ग के पश्चपंजे के आकार की भिन्नता को अंकित किया गया जिसका सांख्यिकी विश्लेषण किया जा रहा है ।

(स) वेदनाहर अध्ययन

शिवनार अमिस्थम

(अ) एडीज़ हाट प्लेट विधि (धवल चूहियों में)

इस औषध को शहद में निलंबित किया गया और 100, 200, 500 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध अवचारित की गई । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान पर रखा गया । दूसरे वर्ग को अनलजीन 5 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में दी गई जिसने एक नियंत्रित मानक का कार्य किया। इन प्राणियों को 55 ± 0.50 तापमान पर रखा गया और प्रत्येक 30 मिनट में 180 मिनट तक इसे अंकित किया गया । आंकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण किया जा रहा है ।

(ब) एसीटिक एसिड व्युत्पन्न राइथिंग इपीसोड(धवल चुहियों में)

इस औषध को शहद में निलंबित किया गया और 100, 200 और 500 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में औषध अवचारित की गई । एक वर्ग को नियंत्रित अचिकित्स्य वर्ग में केवल अनुपान पर रखा गया । दूसरे वर्ग को अनलजीन 500 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में दी गई । राइथिंग इपीसोड एसीटिक एसिड 300 मि. ग्रा. /कि. ग्रा. शरीर भार की मात्रा में पार्युदरीय पेसी में सूचिका द्वारा 30 मिनट बाद औषध दी गई । राइथिंग इपीसोड की संख्या व्यक्तिगत जंतुओं में 30 मिनट तक एसीटिक एसिड सूची द्वारा दिये जाने पर अंकित की गई । इन आकंड़ों को सांख्यिकीय दृष्टि से विश्लेषण किया जा रहा है ।

भैषजिक/मानकीकरण अनुसंधान कार्यक्रम

औषध मानकीकरण अनुसंधान की औषधियों के विश्लेषणात्मक मानक निर्धारित करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है जिससे विशुद्ध तथा प्रमाणिक औषध चिकित्सार्थ उपलब्ध की जा सके । इस कार्यक्रम के अन्तर्गत एकौषधियों, भेषजनिर्माण विधियों एवं निर्मित औषधियों/औषध योगों यथा पर्पम, चेन्दूरम, तैलम, चूर्णम, नेई, लेहम, करुप्पु, स्वरसम, मनप्पगु आदि का मानकीकरण अध्ययन किया गया । यह कार्यक्रम निम्नलिखित एककों के माध्यम से किया जा रहा है -

औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, कैप्टन श्रीनिवासमूर्ति आयुर्वेद औषध अनुसंधान संस्थान, मद्रास, औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (औषध अनुसंधान), त्रिवेन्द्रम , औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र, बंगलौर के अन्तर्गत किया जा रहा है ।

चेम्मूल्ली, कल्लाथी, अरिवालमूक्कुपचिलै, उप्पीलनकोडी, अरुवाथ अरुथुमत्ती जैसी एकौषधियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया । इसके अतिरिक्त इन एककों में राष्ट्रीय सिद्ध भेषज संहिता में वर्णित औषध योगों के विश्लेषणात्मक मानक निर्धारण का कार्य भी किया गया । इन अनुसंधान एककों में भेषज संहिता में वर्णित एकौषधियों का भेषज अभिज्ञानीय एवं पादप रसायन विज्ञानीय अध्ययन भी किया जा रहा है ।

औषध मानकीकरण अनुसंधान एककों द्वारा इस वर्ष में अध्ययन किए गए एकौषधियों/औषध योगों के विवरण निम्न प्रकार हैं :-

अ. विश्लेषणात्मक मानक (एकौषधियाँ)

क्र.स.	औषध	प्रयुक्त भाग	एकक
1.	चेम्मूली	पचांग	औ. मा. अनु. ए. म.
2.	कल्लाथी	पत्र	—उपर्युक्त —
3.	अरिवालमूक्कुपचिलै	पचांग	—उपर्युक्त —
4.	उप्पीलनकोडी	पचांग	—उपर्युक्त —
5.	अरुवाथ	पचांग	—उपर्युक्त —
6.	अरुथु मट्टी	फल	—उपर्युक्त—

ब. विश्लेषणात्मक मानक (भेषज संहिता मानक)

(अ) उत्पाद्य

1.	मुकंपरापारु	औषध मा. अनु. ए. म.
2.	कुंगीलिया वेन्नी	— उपर्युक्त —

3.	कुंगीलिया परपाम	औ. मा. अनु. ए. बं.
4.	पालगरै परपम	—उपर्युक्त —

(ब) निर्माण विधि

1.	उप्पुचेन्दूरम	औ. मा. अनु. ए. बं.
2.	मथम तैल्यम	—उपर्युक्त —

(स) भैषज अभिज्ञानीय अध्ययन

इस वर्ष में निम्नलिखित औषध पादपों का भेषज-अभिज्ञानीय अध्ययन किया गया —

1.	अनैकुंडरिमनी	औ. मा. अनु. ए. म.
2.	पोंयागरै	—यथोक्त —
3.	कल्लाथी	—यथोक्त —
4.	कालपलै	—यथोक्त —
5.	करुंजुरै	— यथोक्त —
6.	अकासकागरुदी	औ. मा. अनु. ए. त्रि.
7.	इलूमिचाम तुलसी	—यथोक्त —
8.	अंडीमल्ली	—यथोक्त —
9.	निलाकुमिश	औ. मा. अनु. ए. ब
10.	कौटाथी	—यथोक्त —
11.	सदाप्पु	—यथोक्त —

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित सिद्ध औषध योगों के घटकों की प्रामाणिकता ज्ञात करने हेतु जांच एवं पहचान की गई -

1.	चिरुक्कीरै	औ. मा. अनु. ए. म.
2.	अरैक्किरै	—यथोक्त —
3.	कुंडरीमनी	—यथोक्त —
4.	कुंगीलयाम	—यथोक्त —
5.	कल्लाथी	—यथोक्त —
6.	अनैकुंडरीमनी	—यथोक्त —
7.	इरायीलकटराले	—यथोक्त —
8.	आत्रूधूमट्टी	—यथोक्त —
9.	विल्वावेर	—यथोक्त —
10.	किलिंजिल	—यथोक्त —

औषध मानकीकरण अनुसंधान एकक, त्रिवेन्द्रम ने सिद्ध औषध योगों में प्रयुक्त 25 एकौषधियों के नमूनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है । सिद्ध औषध योगों में प्रयुक्त 28 एकौषधियों के विभिन्न सत्वों का सूक्ष्मझिल्ली वर्णलेखन विज्ञानीय (क्रोमेटोग्राफी) अध्ययन भी किया गया ।

औषध निर्माण

औषध निर्माण के महत्व को देखते हुए केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद ने केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान सिद्ध में औषध निर्माणशाला की स्थापना की गई है । इस औषध निर्माणशाला में सिद्ध वाङ्मय के शास्त्रीय ग्रंथों में वर्णित औषधियों का चयन कर उन्हें परिषद के अन्तर्गत सिद्ध चिकित्सा के संस्थानों/एककों में निदान चिकित्सात्मक परीक्षण हेतु लिया गया ।

औषध निर्माण हेतु कच्ची औषधियों की प्राप्ति परिषद की परियोजनाओं के औषध वानस्पतिक सर्वेक्षण एककों के माध्यम से तथा स्थानीय बाजार से क्रय करके पूर्ति की गई ।

इन औषधियों का निर्माण वाङ्मय में वर्णित विधि के आधार पर किया गया ।

औषध निर्माण विभाग केन्द्रीय सिद्ध अनुसंधान संस्थान मद्रास से संबद्ध हैं । जिसके द्वारा अनुसंधान एवं सामान्य प्रयोग हेतु 32 औषध-योगों का निर्माण किया गया । औषध निर्माणशाला द्वारा सिद्ध चिकित्सा के शास्त्रीय ग्रंथों के आधार पर चूर्णम, टैबलेट, पर्पम, कर्पम, चेन्दूरम, तैलम, इन्नाई इत्यादि का निर्माण किया गया ।

इस प्रतिवेदित वर्ष में इस औषध निर्माणशाला द्वारा 458 कि. ग्रा. पर्पम चूर्ण तथा चेन्दूरम का निर्माण किया गया तथा विभिन्न प्रकार के 1109 लीटर तैल भी तैयार किया गए । इस औषध निर्माणशाला द्वारा परिषद के अन्तर्गत सिद्ध चिकित्सा की निम्नलिखित एककों को उपर्युक्त औषधियों की आपूर्ति की गई जिसकों निम्नलिखित तालिका में औषधियों की मात्रा के पूर्ण विवरण सहित दर्शाया गया है ।

		(ठोस)	(द्रव)
क्र. स.	एकक का नाम	कि. ग्रा	लीटर
1.	के. अनु. सं. (सिद्ध) मद्रास	0, 500	0,500
2.	के. अनु. ए. (सि.) सफदरजंग अस्पताल, न. दिल्ली	—	7,500
3.	चल. चि. अनु. ए. मद्रास	26,700	17,250
4.	औ. मा. अनु. (एमडी) मद्रास	69, 250	—
5.	औ. मा. अनु. ए. (सि.) मद्रास	0, 200	—
6.	आ. स्वा. अनु. परि. (सि.) तिरुपतुरे एने	6,100	—
7.	निदान चि. अनु. ए. (सि.) पलायमकोटट्ई	4,500	—
	योग	107,350	25,250

वाङ्मय अनुसंधान कार्यक्रम

वाग्डमय अनुसंधान एवं प्रलेखन विभाग सिद्ध, मद्रास द्वारा इस प्रतिवेदित वर्ष में निम्नलिखित कार्य किए गए:-

अगस्थियार कलाईगणम - 1200 के 500 वंदों की व्याख्या की गई । यह पुस्तक सिद्ध चिकित्सा पद्धति के मौलिक सिद्धांतों पर है । वातम वैद्यियम इत्यादि की भी टिप्पणी कार्य पूरे किए गए हैं ।

अगस्थियार वैद्य वल्लत्थी - 1500 के 1000 वंद वर्गीकृत किए गए और संदर्भ तैयार किए गए । संपादन कार्य प्रगति पर है । यह पुस्तक ऐल-केमिकल (कीमियागीरी) विधियों, धातुओं एवं खनिजों के भैषजिक रसायन, मौलिक सिद्धांत एवं योग के अंतर्गत राजयोग सहित विधियों एवं समाधि इत्यादि का विवरण देती है ।

अगस्थियार वैद्य वल्लत्थी - 600 के 50 वंद अंग्रेजी में अनुवादित किए गए हैं । यह पुस्तक मौलिक सिद्धांतों, ऐल-केमिकल विधियों इत्यादि को दरशाती है इसको पूरा किया गया है ।

इस वर्ष इस विभाग द्वारा 30 सिद्ध चिकित्सा पद्धति की दुर्लभ पुस्तकों एवं 50 कुडजन-पत्र पाण्डुलिपि मद्रास के आसपास से एकत्र की गई है ।

कलन्जगपादाई (सोरियासिस) रोग पर आयोजित कार्यशाला की कार्यवाही को अंतिम रूप दिया गया ।

राष्ट्रीय महत्व के रोगों पर सिद्ध चिकित्सा पद्धति के विशेषज्ञों की अध्ययन गोष्ठी 7 से 10 नवम्बर, 1987 मद्रास में आयोजित की गई ।

क्र. सं.	लेखक का नाम	शोध पत्र का शीर्षक	पत्रिका/सभा संगोष्ठी	प्रकाशन तिथि
1.	कलावती, के. राव राजलक्ष्मी, एस. वेल्युचामी, जी.	सिद्ध चिकित्सा पद्धति की पारदीय औषधियां	प्रथम विश्व कांग्रेस ओरिएण्टल मेडिसिन एण्ड योग, बैंकाक ।	मई 22, 1988
2.	कलावती के. राव, शेट्टी बी. एन. वी. रामाचन्द्रन एम. वेल्युचामी जी.	अनिश्चित् त्वचाशोथ पर 777 तैल का प्रभाव	40वां भारतीय औषधनिर्माण कांग्रेस, कलकत्ता	दिसम्बर, 1988
3.	रविशंकर वी. अग्रवाल एम. पी.	अभ्रक चेन्दूरम् का मधुमेह के रोग में निदान-चिकित्सात्मक अध्ययन	आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान पत्रिका भाग - 9 नं. 1-2	मार्च-जून, 1988

कार्यशालाएं/सभा-संगोष्ठियां एवं प्रदर्शनी

1. भारत में देशी औषधियों के विकास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी ।

परिषद द्वारा भारत में देशी औषधियों के विकास पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भारतीय आयुर्विज्ञान इतिहास संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया गया । यह कार्यशाला दिनांक 8 से 10 अप्रैल, 1988 में विश्व-स्वास्थ्य संगठन, भारतीय भेषजगुणविज्ञानीय समिति, केन्द्रीय यूनानी अनुसंधान परिषद, हमदर्द कालेज फार्मेसी, हमदर्द तिब्बिया कालेज, नई दिल्ली तथा केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के सहयोग से संपन्न हुई । परिषद द्वारा इस अवसर पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में 250 वैज्ञानिकों ने भाग लिया तथा देशी औषधियों से संबंधित विषयों पर 110 शोध पत्र भी पढ़े गए ।

2. ओरिएण्टल मेडिसिन तथा योग विषय पर बैंकाक में प्रथम विश्व कांग्रेस ।

परिषद द्वारा ओरिएण्टल मेडिसिन तथा योग विषय पर बैंकाक में प्रथम विश्व कांग्रेस में दिनांक 21 से 24 मई, 1988 तक भाग लिया गया । इस संगोष्ठी में विश्व के विभिन्न भागों से वैज्ञानिकों ने भाग लिया जिसमें मुख्य रूप से लैटिन अमेरीका, इटली, वेस्ट जर्मनी, सोवियत संघ, ईरान, थाइलैण्ड, सिंगापुर तथा भारत ने भाग लिया । केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद द्वारा निर्मित "रिसर्जेन्स" टी. वी. फिल्म भी दिखाई गई जिसकी लोगों ने प्रशंसा की । लगभग 140 शोध पत्रों के सार प्रस्तुत किए गए जब कि 100 शोध पत्रों को पढ़ा गया । पक्षाघात रोग हेतु सिद्ध चिकित्सा के 777 तैल पर प्रकाशित पत्र को केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (सिद्ध), मद्रास को जे. आर. ई. आई. एम. रजत पदक प्रदान किया गया ।

3. भैषज उद्योग पर सिंगापुर में प्रथम एशियन संगोष्ठी ।

परिषद द्वारा राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, सिंगापुर में दिनांक 26 मई, 1988 को आयोजित प्रथम एशियन भैषज उद्योग विषय पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया गया । विभिन्न अनुसंधान पत्रों के प्रकाशन पर डॉ. विवेकानंद पाण्डेय, निदेशक, केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद को जे. आर. ई. आई. एम. स्वर्ण पदक से विभूषित किया गया ।

4. महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम पर आयोजित संगोष्ठी में दिनांक 29 सितम्बर, 1988 से 4 अक्तूबर, 1988 तक आदिवासी स्वास्थ्य रक्षा अनुसंधान परियोजना, चिंचपाडा द्वारा भाग लिया गया ।

5. कोरिया गणराज्य के प्योनोग्यांग स्थान में औषध अनुसंधान परिषदों के निदेशकों की छठी बैठक दिनांक 24 से 31 अक्तूबर, 1988 तक हुई जिसमें भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के निदेशक, डॉ. विवेकानंद पाण्डेय ने किया ।

6. परिषद द्वारा प्रधान मंत्री कार्यालय के तकनीकी मिशन के सलाहकार द्वारा परम्परागत औषधियां एवं प्रतिरक्षण विषय पर दिनांक 23 से 25 सितम्बर, 1988 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें परिषद ने भाग लिया। यह संगोष्ठी गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर में लोक स्वास्थ्य परम्परा संवर्धन समिति कोयम्बटूर के सहयोग से की गई । इस अवसर पर परिषद द्वारा निर्मित फिल्म "रिसर्जेन्स" भी दिखाई गई ।

7. इन्द्रप्रस्थ वेद्य सभा द्वारा दिनांक 7 नवंबर, 1988 को धन्वन्तरि जयंती समारोह में परिषद ने विट्ठलभाई पटेल हाऊस, नई दिल्ली में भाग लिया । इस अवसर पर परिषद द्वारा एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया ।

8. जनपद आयुर्वेद सम्मेलन, सहारनपुर (उ. प्र.) में आयोजित दिनांक 30 तथा 31 अक्तूबर, 1988 को संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें परिषद ने भाग लिया । इस अवसर पर परिषद द्वारा एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया तथा "रिसर्जेन्स" वीडियो फिल्म भी दिखाई गई ।

9. नेशनल इण्टीग्रेटेड मेडिकल ऐशोसियन, आगरा क्षेत्र द्वारा दिनांक 12 फरवरी, 1989 को अलीगढ़ में 26वां चिकित्सा सम्मेलन आयोजित किया गया - जिसमें परिषद ने भाग लिया ।

10. आयुर्वेदिक अकादमी, बंगलौर द्वारा दिनांक 7 से 9 जनवरी, 1989 को राष्ट्रीय मधुमेह संगोष्ठी के आयोजन पर परिषद ने भाग लिया ।

11. परंपरागत एवं प्राकृतिक औषधियों पर दिनांक 10 जनवरी, 1989 को मिलान (इटली) में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री के अनुरोध पर केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के निदेशक, डॉ. विवेकानंद पाण्डेय ने भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया ।

12. सिक्किम विज्ञान समाज द्वारा दिनांक 28 फरवरी, 1989 को पं. जवाहरलाल नेहरू जन्म-शताब्दी के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, गंगटोक ने भाग लिया । इस केन्द्र को द्वितीय पुरस्कार एवं कार्य-कुशलता के लिए प्रमाण-पत्र भी दिया गया ।

13. 26 तथा 27 फरवरी, 1989 को बुलंदशहर जनपद आयुर्वेद सम्मेलन आयोजित हुआ । इस अवसर पर परिषद ने भाग लिया और परिषद प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई ।

आभार

परिषद निदेशक, शासी निकाय, वित्त समिति एवं वैज्ञानिकपरामर्शदात्री समितियों के सदस्यों द्वारा की गई सेवाओं की अत्यंत सराहना करते हैं तथा परिषद के कार्य संचालन में इन सभी के बहुमूल्य योगदान, मार्गदर्शन एवं निरन्तर समर्थन के लिए हार्दिक आभार प्रकट करते हैं ।

परिषद निदेशक, विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों एवं संबद्ध विज्ञानों के उन सभी वैज्ञानिकों, विद्वानों एवं विश्वविद्यालयों और सरकारी संस्थाओं को इस परिषद के अनुसंधान कार्यक्रम से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंधित है तथा प्रमुख कार्यालय सहित सभी परियोजनाओं के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का भी इस वर्ष में विभिन्न कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में दिए गए सहयोग के लिए धन्यवाद करते है ।

परिषद इस अवसर पर भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय का उसके निरन्तर समर्थन, सहायक दृष्टिकोण और सहयोग के लिए धन्यवाद करती है जिससे परिषद को अनुसंधान के क्षेत्र में अपने क्रियाकलाप बढ़ाने में सहायता मिली और आशा करती है कि आयुर्वेद एवं सिद्ध चिकित्सा पद्धति के समग्र विकास हेतु भविष्य में भी उसका निरन्तर समर्थन मिलता रहेगा ।

परिषद श्री आर. के. सिंघल, वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक (सांख्यिकी) को वार्षिक रिपोर्ट तैयार करने के धन्यवाद करती है ।